FAIZAN-E-MADINA

माहनामा

फ़ैज़ाने मदीना

(दावते इस्लामी)

सितम्बर 2026 ई. / रबीउ़ल आख़िर 1448 हि.

- अ़क़ीदए ख़त्मे नुबुव्वत और क़ुरआन 3
- किरदार की अ़ज़मत 21
- ग़ौसे आज़म की नसीहतें 23
- मक्कार बूढ़ा 47
- बेटियों को तवक्कुल अ़लल्लाह की तरबियत दें 49

मसाइबो आलाम से ह़िफ़ाज़त

अल्लाह पाक ने चाहा तो मसाइबो आलाम से नजात मिलेगी। "يَا مُسَبِّبَ الْاَسْبَاب" 500 बार, (अव्वल आख़िर दुरूद शरीफ़ 11, 11 बार) बाद नमाज़े इ़शा क़िब्ला रू बा वुज़ू नंगे सर ऐसी जगह पढ़िए कि सर और आस्मान के दरमियान कोई चीज़ ह़ाइल न हो, यहां तक कि सर पर टोपी भी न हो। इस्लामी बहनें ऐसी जगह पढ़ें जहां किसी अजनबी यानी ग़ैर मह़रम की नज़र न पड़े। (इग़वा से ह़िफ़ाज़त के औराद, स. 3)

कारोबार और काम काज में दिल ना लगता हो तो!

जिन लोगों का काम, कारोबार में दिल नहीं लगता उन के लिए अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने येह वज़ीफ़ा तह़रीर फ़रमाया कि "या अल्लाहु 101 बार काग़ज़ पर लिख कर तावीज़ बना कर बाज़ू पर बांध लीजिए, اِنْ شَآءَ اللّٰه जाइज़ काम धंधे और ह़लाल नौकरी में दिल लग जाएगा।"

(चिड़िया और अन्धा सांप, स. 29)

सर्दी की शिद्दत हो तो

ह़दीसे पाक का मज़्मून है : सख़्त सर्दी में जब बन्दा येह कहता है : "لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰه", या अल्लाह! आज सख़्त सर्दी है मुझे जहन्नम की "ज़महरीर" से बचा" तो अल्लाह पाक जहन्नम से फ़रमाता है कि मेरा बन्दा तुझ से पनाह मांग रहा है मैं ने उस को तुझ से पनाह दी। (عمل اليوم والليلہ، ص136، حديث:307)

जब भी सख़्त सर्दी हो तो अल्लाह पाक की जनाब में येह दुआ़ करनी चाहिए। "ज़महरीर" जहन्नम का एक त़बक़ा है जिस में ठन्डक का अ़ज़ाब है, जब काफ़िर को उस में फेंका जाएगा तो सर्दी की वजह से उस के जिस्म के टुकड़े टुकड़े हो जाएंगे। (सर्दी से बचने के त़रीक़े, स. 1)

मरज़े गुनाह दूर करने का वज़ीफ़ा

يَا بَرُّ (ऐ भलाई करने वाले)

जो कोई रोज़ाना सात बार (अव्वल आख़िर एक बार दुरूद शरीफ़) पढ़ कर अपने दिल पर दम करेगा, اِنْ شَآءَ اللّٰه गुनाहों की बीमारी दूर हो जाएगी।

(मुक़द्दस तह़रीरात के अदब के बारे में सुवाल जवाब, स. 31- मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 1/42)

माहनामा

फ़ैज़ाने मदीना

(दावते इस्लामी)

सितम्बर 2026 ई.

ब फ़ैज़ाने नज़र
सिराजुल उम्मह, काशिफुल ग़ुम्मह,
इमामे आज़म हज़रते सय्यिदुना
इमाम अबू ह़नीफ़ा नोमान बिन साबित رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه

ब फ़ैज़ाने करम
आला ह़ज़रत इमामे अहले सुन्नत
मुजद्दिदे दीनो मिल्लत शाह
इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه

माहनामा फ़ैज़ाने मदीना धूम मचाए घर घर
या रब जा कर इश्क़े नबी के जाम पिलाए घर घर

(अज़ : अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه)

क़ुरआनो ह़दीस
अक़ीदए ख़त्मे नुबुव्वत और क़ुरआन 3
मोमिन के लिए सब से बड़ा इन्आम 7

फ़ैज़ाने सीरत
रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का बात करने का अन्दाज़ 9

फ़ैज़ाने अमीरे अहले सुन्नत
सब से पहले और सब से आख़िरी नबी कौन ? मअ़ दीगर सुवालात 12

दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत
ब वक़्ते दुआ़ दोनों हाथ मिलाना दुरुस्त है या जुदा रखना ? मअ़ दीगर सुवालात 14

मज़ामीन
इस्लामी मुआ़शरे में इ़ज़्ज़ते नफ़्स का तह़फ़्फ़ुज़ 16
नाकामी 19
किरदार की अ़ज़मत 21
ग़ौसे आज़म की नसीह़तें 23

ताजिरों के लिए
अह़कामे तिजारत 26

बुज़ुर्गाने दीन की सीरत
ह़ज़रते सय्यिदुना औ़फ़ बिन मालिक अशजई رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه 28
ह़ज़रते अ़ब्दुर्रह़मान बिन ज़ैद رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُمَا 31
सुल्तानुल औलिया ह़ुज़ूर ग़ौसुल आज़म رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه 32
अपने बुज़ुर्गों को याद रखिए 34

मुतफ़र्रिक़
रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ग़िज़ाएं (ह़ैस) 36
सफ़ाई सुथराई की अहमियत व ज़रूरत 38

क़ारेईन के सफ़ह़ात
नए लिखारी 40

बच्चों का "माहनामा फ़ैज़ाने मदीना"
राज़ की ह़िफ़ाज़त कीजिए 44
बाग़ के फलों की दुरुस्त मिक़दार बता दी 45
मक्कार बूढ़ा 47

इस्लामी बहनों का "माहनामा फ़ैज़ाने मदीना"
बेटियों को तवक्कुल अ़लल्लाह की तरबियत दें 49
इस्लामी बहनों के शरई़ मसाइल 51

क़ुरआनी तालीमात

अक़ीदए ख़त्मे नुबुव्वत और क़ुरआन

अक़ीदए ख़त्मे नुबुव्वत ज़रूरिय्याते दीन में से है, जिस पर उम्मते मुस्लिमा का तवातुर के साथ इज्माअ़ चला आ रहा है। क़ुरआने ह़कीम की कसीर आयात ऐसी हैं जो सराह़तन या इशारतन व इस्तिम्बात़न इस ह़क़ीक़त पर दलालत करती हैं कि नबिय्ये अकरम صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अल्लाह तआ़ला के आख़िरी नबी और आख़िरी रसूल हैं और आप صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के बाद क़ियामत तक कोई किसी त़रह का नया नबी मबऊ़स नहीं होगा। इस मफ़्हूम की आयात को चन्द उ़न्वानात के तह़त ज़िक्र किया जाता है :

1 ख़ातिमुन्नबिय्यीन

क़ुरआने करीम की वोह आयते मुबारका जिस में रसूले अकरम ह़ज़रत मुह़म्मदे मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को सराह़त के साथ **“ख़ातिमुन्नबिय्यीन”** फ़रमाया गया है, अक़ीदए ख़त्मे नुबुव्वत की सब से वाज़ेह, क़त़ई और बुन्यादी दलील है :

﴿مَا كَانَ مُحَمَّدٌ اَبَاۤ اَحَدٍ مِّنْ رِّجَالِكُمْ وَ لٰكِنْ رَّسُوْلَ اللّٰهِ وَ خَاتَمَ النَّبِیّٖنَؕ-وَ كَانَ اللّٰهُ بِكُلِّ شَیْءٍ عَلِیْمًا(۴۰)﴾

तर्जमए कन्ज़ुल इ़रफ़ान : मुह़म्मद तुम्हारे मर्दों में किसी के बाप नहीं हैं लेकिन अल्लाह के रसूल हैं और सब नबियों के आख़िर में तशरीफ़ लाने वाले हैं और अल्लाह सब कुछ जानने वाला है।[1]

तौज़ीह़ : इस आयते करीमा में अल्लाह तबारक व तआ़ला ने नबिय्ये अकरम صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को **“ख़ातमुन्नबिय्यीन”** के लक़ब से याद फ़रमा कर येह एलान फ़रमा दिया कि आप صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ही जुम्ला अम्बियाए किराम عَلَیْہِمُ السَّلَام की आख़िरी कड़ी हैं। **“ख़ातिमुन्नबिय्यीन”** का लुग़वी व इस्तिलाह़ी मफ़्हूम येही है कि नुबुव्वत का सिल्सिला आप صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर ख़त्म हो गया, और अब आप के बाद कोई नया नबी नहीं आ सकता।

उम्मते मुस्लिमा के हर दौर के मुफ़स्सिरीन, मुह़द्दिसीन, फ़ुक़हा और मुतकल्लिमीन का इस के मफ़्हूम पर इज्माअ़ रहा है कि ह़ुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अल्लाह तआ़ला के आख़िरी नबी हैं, और ख़ातिमुन्नबिय्यीन का मा'ना व मफ़्हूम भी येही है।

ख़त्मे नुबुव्वत के मुन्किरीन इस आयते मुबारका के अलफ़ाज़ “خَاتَمَ النَّبِیّٖنَ” के मा'ना में त़रह त़रह की बे बुन्याद, झूटी और धोका पर मब्नी तावीलाते फ़ासिदा करते हैं जो कि क़ुरआन, अह़ादीस, फ़रामीन व इज्माए सह़ाबा और मुफ़स्सिरीन, मुह़द्दिसीन, मुह़क़्क़िक़ीन, मुतकल्लिमीन और सारी उम्मते मुह़म्मदिया के ख़िलाफ़ हैं, चुनान्चे मुफ़स्सिरे क़ुरआन अबू जाफ़र मुह़म्मद बिन

जरीर त़बरी (वफ़ात : 310 हि.) अबुल ह़सन अ़ली बिन मुह़म्मद बग़दादी मावरदी (वफ़ात : 450 हि.), अबुल ह़सन अ़ली बिन अह़मद वाह़िदी नेशापुरी शाफ़ेई (वफ़ात : 468 हि.), अबुल मुज़फ़्फ़र मन्सूर बिन मुह़म्मद अल मरवज़ी समआ़नी शाफ़ेई (वफ़ात : 489 हि.), मुह़ियुस्सुन्नह अबू मुह़म्मद हुसैन बिन मसऊ़द बग़वी (वफ़ात : 510 हि.), अबू मुह़म्मद अ़ब्दुल ह़क़ बिन ग़ालिब उन्दुलुसी मुहारबी (वफ़ात : 542 हि.), सुल्तानुल उ़लमा अबू मुह़म्मद अ़ज़्ज़ुद्दीन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ बिन अ़ब्दुस्सलाम सलमी दिमश्क़ी (वफ़ात : 660 हि.) नासिरुद्दीन अबू सई़द अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर शीराज़ी बैज़ावी (वफ़ात : 685 हि.), अबुल बरकात अ़ब्दुल्लाह बिन अह़मद नसफ़ी (वफ़ात : 710 हि.), अबुल क़ासिम मुह़म्मद बिन अह़मद बिन मुह़म्मद अल कल्बी ग़रनाती (वफ़ात : 741 हि.), अबू अ़ब्दुलल्लाह मुह़म्मद बिन मुह़म्मद बिन अ़रफ़ा व रग़ामी मालिकी (वफ़ात : 803), जलालुद्दीन मुह़म्मद बिन अह़मद मह़ल्ली (वफ़ात : 864 हि.) और अबुस्सऊ़द अल अ़म्मादी मुह़म्मद बिन मुह़म्मद बिन मुस्तफ़ा (वफ़ात 982 हि.) رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن समेत दीगर कसीर मुफ़स्सिरीने किराम ने इस आयत की तफ़्सीर में हमारे प्यारे आक़ा मुह़म्मद मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के आख़िरी नबी होने की तसरीह़ व ताकीद फ़रमाई है।

2 इक्माले दीन व इतमामे नेमते नुबुव्वत

क़ुरआने करीम, फ़ुरक़ाने ह़मीद में अल्लाह तआ़ला ने दीने इस्लाम की तक्मील, अपनी नेमत के इतमाम और शरीअ़ते मुह़म्मदिया के कामिल व मुकम्मल होने का वाज़ेह़ एलान फ़रमाया है। येह एलान ख़त्मे नुबुव्वत पर निहायत मज़बूत और वाज़ेह़ दलील है, क्यूंकि जब दीन अपनी तक्मील को पहुंच गया, नेमते हिदायत मुकम्मल हो गई और अल्लाह तआ़ला ने इस्लाम को हमेशा के लिए पसन्दीदा दीन क़रार दे दिया, तो उस के बाद किसी नए नबी, नई वह़ी या नई शरीअ़त की कोई ज़रूरत बाक़ी नहीं रहती। अल्लाह करीम फ़रमाता है : ﴿اَلْیَوْمَ اَكْمَلْتُ لَكُمْ دِیْنَكُمْ وَ اَتْمَمْتُ عَلَیْكُمْ نِعْمَتِیْ وَ رَضِیْتُ لَكُمُ الْاِسْلَامَ دِیْنًاؕ﴾ तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : आज मैं ने तुम्हारे लिए तुम्हारा दीन कामिल कर दिया और तुम पर अपनी नेमत पूरी कर दी और तुम्हारे लिए इस्लाम को दीन पसन्द किया।(2)

तौज़ीह़ : इस आयते करीमा का नुज़ूल ह़ज्जतुल वदाअ़ के मौक़ा पर हुवा, और रिवायात के मुताबिक़ उस के नुज़ूल के बाद नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم 81 दिन ह़यात रहे, और उस के बाद कोई हुक्म ह़लाल व ह़राम नाज़िल नहीं हुवा। नुक्ता येह है कि हर नबी अपने अपने ज़माने की ज़रूरत के मुताबिक़ दीनी अह़काम ले कर आता रहा, और हर नबी अपने बाद आने वाले नबी की ख़बर देता रहा, यहां तक कि नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मबऊ़स हुए और आप पर नुज़ूले वह़ी के इख़्तिताम के साथ ही दीन अपनी तक्मील को पहुंच गया।

जब **"नेमते नुबुव्वत"** को मताम कर दिया गया तो उस के बाद न कोई नया नबी आ सकता है और न सिल्सिलए वह़ी जारी रह सकता है, क्यूंकि इकमाले दीन और नुबुव्वते जदीद एक साथ जमा नहीं हो सकते। ह़ाफ़िज़ इब्ने कसीर ने इस आयत के तह़त वाज़ेह़ तह़रीर फ़रमाया है : هذه اكبر نعم الله تعالى على هذه الامة، حيث اكمل تعالى لهم دينهم، فلا يحتاجون الى دين غيره، ولا الى نبى غير نبيهم صلوات الله و سلامه عليه، ولهذا جعله الله تعالى خاتم الانبياء وبعثه الى الانس والجن

तर्जमा : येह उस उम्मत पर अल्लाह तआ़ला की सब से बड़ी नेमत है कि उस ने उन के लिए दीन को कामिल फ़रमाया, लिहाज़ा उम्मते मुह़म्मदिया न किसी और दीन की मोह़ताज है और न किसी नबी की, और इसी लिए अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को ख़ातिमुन्नबिय्यीन बनाया और तमाम जिन्नो बशर की त़रफ़ मबऊ़स फ़रमाया।(3)

3 आ़लमगीरियत व आख़िरियते रिसालत

क़ुरआने करीम की मुतअ़द्दद आयात में है कि रसूले अकरम ह़ज़रत मुह़म्मदे मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की रिसालत तमाम

इन्सानिय्यत बल्कि जिन्नो इन्स दोनों के लिए आलमगीर और दाइमी है किसी ख़ास क़ौम, ज़माने या मकान के साथ ख़ास नहीं। चुनान्चे जब आप की रिसालत पूरी काएनात के लिए क़ियामत तक काफ़ी है तो इस के बाद किसी और नबी या रसूल की गुन्जाइश बाक़ी नहीं रहती, क्यूंकि अगर कोई नया नबी आए तो लाज़िमन वोह किसी ख़ास अलाक़े या ज़माने के लिए मख़्सूस होगा, जो रसूले अकरम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की आलमगीर रिसालत की नफ़ी है।

आइए ज़ैल में उन आयाते मुबारका का मुतालआ करते हैं :

तमाम इन्सानिय्यत के लिए बशीरो नज़ीर

﴿وَ مَاۤ اَرْسَلْنٰكَ اِلَّا كَآفَّةً لِّلنَّاسِ بَشِيْرًا وَّ نَذِيْرًا وَّ لٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ(۲۸)﴾ तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और ऐ महबूब हम ने तुम को न भेजा मगर ऐसी रिसालत से जो तमाम आदमियों को घेरने वाली है ख़ुशख़बरी देता और डर सुनाता लेकिन बहुत लोग नहीं जानते।[(4)]

तौज़ीह : इस आयत में लफ़्ज़ "كَآفَّةً لِّلنَّاس" पर ज़ोर दिया गया है, यानी आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बिअसत किसी ख़ास क़ौम के लिए नहीं बल्कि सब इन्सानों के लिए बग़ैर किसी इस्तिसना के है। मा क़ब्ल तमाम अम्बिया عَلَيْهِمُ السَّلَام अपनी अपनी क़ौम की तरफ़ मबऊस होते रहे, जैसा कि ख़ुद क़ुरआने करीम में मुतअद्दद मक़ामात पर "اخاهم" और "اِلٰى عاد" या "اِلٰى ثمود" वग़ैरा के अलफ़ाज़ से वाज़ेह है। अब क़ियामत तक किसी नए नबी की ज़रूरत बाक़ी नहीं, क्यूंकि रिसालते मुहम्मदिया हर ज़माने और हर मकान के इन्सानों का इहाता किए हुए है। अगर ब फ़र्ज़े मुहाल आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के बाद कोई नया नबी मबऊस हो तो उस का लाज़िमी नतीजा येह निकलेगा कि आप की रिसालते आम्मा महदूद हो कर रह जाए, जो ख़ुद आयत के सरीह मफ़हूम के ख़िलाफ़ है।

मैं तुम सब की तरफ़ अल्लाह का रसूल हूं

﴿قُلْ يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ اِنِّيْ رَسُوْلُ اللّٰهِ اِلَيْكُمْ جَمِيْعًا﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : तुम फ़रमाओ ऐ लोगो मैं तुम सब की तरफ़ उस अल्लाह का रसूल हूं।[(5)]

तौज़ीह : येह आयत सूरए सबा की मज़्कूरा बाला आयत की हम माना और उस की ताईद है। नबिय्ये अकरम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को हुक्म दिया गया कि वोह इन्सानियत को मुख़ातब करते हुए अपनी रिसालत के तमाम जिन्नो इन्स के लिए आम होने का एलान फ़रमाएं। ख़ुद आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपने क़ौल से भी उसे बयान फ़रमाया : "اَنَا رَسُوْلُ مَنْ اَدْرَكْتُ حَيًّا وَمَنْ يُوْلَدُ بَعْدِى" यानी मैं उस की तरफ़ भी रसूल हूं जिसे मैं अपनी ज़िन्दगी में पाउं और उस की तरफ़ भी जो मेरे बाद पैदा हो।[(6)]

रहमतुल्लिल आलमीन

﴿وَ مَاۤ اَرْسَلْنٰكَ اِلَّا رَحْمَةً لِّلْعٰلَمِيْنَ(۱۰۷)﴾ तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और हम ने तुम्हें न भेजा मगर रहमत सारे जहान के लिए।[(7)]

तौज़ीह : इस आयत में "العالمين" का लफ़्ज़ आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की रहमत के दाइरे के तमाम जहानों तक वसीअ होने को बयान करता है, और इस का तक़ाज़ा है कि आप पर ईमान लाने का हुक्म भी तमाम जहान वालों को दिया जा रहा है, जब कि आप से पहले कोई भी ऐसे नबी या रसूल तशरीफ़ नहीं लाए जिन की रहमत या नुबुव्वत या ईमान की दावत तमाम जहान वालों के लिए हो। चुनान्चे अब अगर कोई येह कहे कि मुहम्मदे अरबी रहमतुल्लिल आलमीन صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के बाद भी कोई नया नबी आ सकता है तो येह रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के ख़ास्सा "رحمة للعالمين" के मनाफ़ी है, क्यूंकि इस का मतलब येह होगा कि अब सिर्फ़ आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर ईमान लाना काफ़ी नहीं रहा। लिहाज़ा "رحمة للعالمين" का तक़ाज़ा येही है कि आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के बाद कोई नया नबी नहीं आएगा।

तमाम जहानों के लिए नज़ीर

﴿تَبٰرَكَ الَّذِيْ نَزَّلَ الْفُرْقَانَ عَلٰى عَبْدِهٖ لِيَكُوْنَ لِلْعٰلَمِيْنَ نَذِيْرًا(۱)﴾ तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : बड़ी बरकत

वाला है वोह कि जिस ने उतारा क़ुरआन अपने बन्दे पर जो सारे जहान को डर सुनाने वाला हो।[8]

तौज़ीह़ : इस आयत में नबिय्ये अकरम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के मन्सबे इन्ज़ार को भी "للعالمين" यानी आ़लमगीर क़रार दिया गया है, और इस मन्सब का ज़रीआ़ ख़ुद क़ुरआने करीम को बताया गया है, जो कि ह़क़ व बात़िल के लिए फ़ुरक़ान यानी फ़र्क़ व फ़ासिला करने वाला है। येह आयत इस बात की दलील है कि आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का इन्ज़ार किसी ख़ास अ़लाक़े या ज़माने तक मह़दूद नहीं बल्कि क़ुरआन के ज़रीए़ ता क़ियामत जारी रहने वाला है। चूंकि क़ुरआने करीम क़ियामत तक के लिए किताबे हिदायत है, और इसी क़ुरआन के ज़रीए़ आप का इन्ज़ार तमाम जहानों तक पहुंचता है, इस लिए इस आ़लमगीर व दाइमी मन्सबे इन्ज़ार के बाद किसी नए नबी के ज़रीए़ नए इन्ज़ार की ज़रूरत बाक़ी नहीं रहती।

क़ुरआन के ज़रीए़ क़ियामत तक इन्ज़ार

﴿وَ اُوْحِیَ اِلَیَّ هٰذَا الْقُرْاٰنُ لِاُنْذِرَكُمْ بِهٖ وَ مَنْۢ بَلَغَؕ﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और मेरी त़रफ़ इस क़ुरआन की वह़ी हुई है कि मैं इस से तुम्हें डराऊं और जिन जिन को पहुंचे।[9]

तौज़ीह़ : इस आयत में "ومن بلغ" का फ़क़रा निहायत वसीउ़ल मानी है, यानी न सिर्फ़ मौजूदा ज़माने के लोग बल्कि हर वोह शख़्स जिस तक क़ुरआने करीम का पैग़ाम पहुंचे, वोह इसी इन्ज़ारे मुह़म्मदी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के दाइरे में शामिल है, ख़्वाह वोह क़ियामत तक किसी भी ज़माने में पैदा हो। इस से येह वाज़ेह़ है कि क़ुरआने करीम और इस के ज़रीए़ दिया जाने वाला इन्ज़ार क़ियामत तक के तमाम इन्सानों के लिए काफ़ी व शाफ़ी है, और किसी नए नबी के ज़रीए़ नए इन्ज़ार की ह़ाजत बाक़ी नहीं रहती, क्यूंकि ख़ुद क़ुरआन ने येह ज़िम्मेदारी क़ियामत तक के लिए सम्भाल ली है।

ख़ुलासए आयात : इन तमाम आयात पर मज्मूई नज़र डालने से वाज़ेह़ होता है कि क़ुरआने करीम ने नबिय्ये अकरम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की रिसालत को ऐसी जामेअ़, आ़लमगीर और दाइमी ह़ैसिय्यत अ़त़ा फ़रमाई है कि इस के बाद किसी नए नबी के आने की कोई गुन्जाइश बाक़ी नहीं रहती। चुनान्चे "كَآفَّةً لِّلنَّاسِ" (सब इन्सानों के लिए), "اِلَیْكُمْ جَمِیْعًا" (तुम सब की त़रफ़), "رَحْمَةً لِّلْعٰلَمِیْنَ" (तमाम जहानों के लिए रह़मत), "لِلْعٰلَمِیْنَ نَذِیْرًا" (तमाम जहानों के लिए डराने वाला), "وَمَنْۢ بَلَغَ" (जिस जिस तक क़ुरआन पहुंचे), जिन्नात के ईमान लाने और अपनी क़ौम में दावत पहुंचाने से साबित होने वाली जिन्नो इन्स दोनों के लिए आ़लमगीर रिसालत, और अहले मक्का के लिए आख़िरी और मुकम्मल मर्कज़े हिदायत की ह़ैसिय्यत जैसे अलफ़ाज़ व मज़ामीन इस ह़क़ीक़त को नुमायां करते हैं कि आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की दावत हर क़ौम, हर नस्ल, हर ज़माने, हर ख़ित्ते और तमाम मुकल्लफ़ मख़्लूक़ात पर मुह़ीत़ है। लिहाज़ा अगर बिलफ़र्ज़ आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के बाद कोई नया नबी मबऊ़स होता तो उस पर ईमान लाना भी नजात के लिए लाज़िम क़रार पाता, जिस से रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की रिसालत का सारी काएनात के लिए काफ़ी होना बाक़ी न रहता। ऐसी सूरत में "كَآفَّةً لِّلنَّاسِ" का उ़मूम, "اِلَیْكُمْ جَمِیْعًا" की शुमूलिय्यत, "رَحْمَةً لِّلْعٰلَمِیْنَ" की आ़लमगीर रह़मत, "لِلْعٰلَمِیْنَ نَذِیْرًا" के दाइमी मन्सबे इन्ज़ार, "وَمَنْۢ بَلَغَ" के क़ियामत तक जारी रहने वाले क़ुरआनी इन्ज़ार, और जिन्नो इन्स दोनों के लिए रिसालते मुह़म्मदिया की जामेइय्यत, सब के सब अपने कामिल मफ़हूम के एतिबार से मुतअस्सिर हो जाते।

इस लिए इन तमाम आयात का मज्मूई तक़ाज़ा येही है कि नबिय्ये अकरम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की रिसालत ही क़ियामत तक तमाम इन्सानों और जिन्नात के लिए काफ़ी, कामिल आ़लमगीर और दाइमी रिसालत है, और इसी बिना पर आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के बाद किसी नए नबी या नई नुबुव्वत की कोई गुन्जाइश बाक़ी नहीं रहती।

---

(1) پ22، الاحزاب:40 (2) پ6، المآئدة:3 (3) تفسیر ابن کثیر، 3/22، المآئدة، تحت الآیۃ: 3 (4) پ22، سبا:28 (5) پ9، الاعراف: 158 (6) الطبقات الکبیر لابن سعد، 1/162، (7) پ17، الانبیآء: 107 (8) پ18، الفرقان: 1 (9) پ7، الانعام: 19

मोमिन के लिए सब से बड़ा इन्आ़म

ह़ज़रते सय्यिदुना जरीर बिन अ़ब्दुल्लाह बजली رَضِیَ اللہُ عَنْہ फ़रमाते हैं : हम नबिय्ये करीम صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में ह़ाज़िर थे। आप صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने चौदहवीं के चांद की त़रफ़ देख कर हम से फ़रमाया :

اِنَّكُمْ سَتَرَوْنَ رَبَّكُمْ كَمَا تَرَوْنَ هٰذَا الْقَمَرَ لَا تُضَامُّوْنَ فِىْ رُؤْيَتِهٖ فَاِنِ اسْتَطَعْتُمْ اَنْ لَّا تُغْلَبُوْا عَلٰى صَلَاةٍ قَبْلَ طُلُوْعِ الشَّمْسِ وَقَبْلَ غُرُوْبِهَا فَافْعَلُوْا۔

तर्जमा : तुम यक़ीनन अपने करीम रब का दीदार करोगे जिस त़रह इस चांद को देख रहे हो कि इसे देखने में तुम्हें कोई मशक़्क़त नहीं हो रही। अगर तुम से हो सके तो तुलूए आफ़ताब और ग़ुरूबे आफ़ताब से क़ब्ल की नमाज़ में हरगिज़ मग़्लूब न होना (यानी फ़ज्र व अ़स्र की नमाज़ हरगिज़ तर्क न करना)।[1]

जन्नतियों के लिए सब से बड़ी नेमत

अ़ल्लामा इब्ने कमाल पाशा ह़नफ़ी رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ मज़्कूरा ह़दीसे पाक के तह़त शर्ह़ रियाज़ुस्सालिह़ीन में फ़रमाते हैं : आख़िरत में अहले ईमान को दीदारे इलाही होगा इस पर तमाम अहले सुन्नत का इज्माअ़ है। क़ुरआनो सुन्नत, इज्माए सह़ाबा और सलफ़े सालिह़ीन से येह बात साबित है कि मोमिनीन को आख़िरत में दीदारे इलाही होगा। बीस सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان से इस बारे में अह़ादीस मरवी हैं और आयाते क़ुरआनिय्या तो इस बारे में मश्हूर हैं।[2]

शैख़ अ़ब्दुल ह़क़ मुह़द्दिसे देहलवी رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं : तमाम अहले ह़क़ का इस बात पर इज्माअ़ है कि आख़िरत में अहले ईमान को दीदारे इलाही की दौलत नसीब होगी। इन्सान, मलाइका, जिन्नात, मर्द, औ़रतें सभी इस नेमत से मुशर्रफ़ होंगे। दीदारे इलाही की इस अ़ज़ीम नेमत से सिर्फ़ जन्नती ही मुशर्रफ़ हुवा करेंगे, अलबत्ता मैदाने मह़शर में सब देखेंगे क्या मोमिन क्या काफ़िर सब को दीदार होगा फिर कुफ़्फ़ार हमेशा के लिए दूर व मह़रूम हो जाएंगे, और दाइमी ह़सरत व नदामत उन का मुक़द्दर होगी। नमाज़ों की पाबन्दी से दीदारे इलाही की लियाक़त (सलाह़िय्यत) पैदा होती है। दीदारे इलाही के वक़्त ऐसा नहीं होगा कि बाज़ देखें और बाज़ न देखें बल्कि जिस त़रह चौदहवीं का चांद निहायत ही वाज़ेह़ और ज़ाहिर होता है कसी मज्मअ़ भी बग़ैर मशक़्क़त के देख लेता है इसी त़रह अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त का दीदार भी निहायत ही ज़ाहिर व कामिल होगा वहां हुजूम व मज्मअ़ की वजह से किसी को देखने में मशक़्क़त व रुकावट न होगी।[3]

सदरुश्शरीआ़ मुफ़्ती अमजद अ़ली आज़मी عَلَیْہِ الرَّحْمَۃ फ़रमाते हैं : दुनिया की ज़िन्दगी में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का दीदार नबी صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के लिए ख़ास है और आख़िरत में हर सुन्नी मुसलमान के लिए मुम्किन बल्कि वाक़ेअ़। रहा क़ल्बी दीदार या ख़्वाब में, येह दीगर अम्बिया عَلَیْہِمُ السَّلَام बल्कि औलिया के लिए भी ह़ासिल है।[4]

ह़दीसे मज़्कूर में मौजूद तश्बीह की वज़ाह़त

ह़दीसे पाक में है : "तुम अपने रब को ऐसे देखोगे जैसे उस चांद को देख रहे हो।" यानी आख़िरत में अल्लाह पाक का दीदार इस त़रह शक व शुबा से बालातर होगा जैसे चांद का देखना शक व शुबा से बालातर होता है। (अल्लाह पाक की ज़ात सम्त व जिहत और ह़ुदूद से पाक है इस लिए यहां तश्बीह से) येह हरगिज़ मुराद नहीं कि जिस त़रह चांद एक मख़्सूस जिहत व ह़द में सामने नज़र आता है इसी त़रह अल्लाह पाक की ज़ात भी होगी।[5]

फ़ज्र व अ़स्र में सुस्ती से बचना

लमआ़त शर्ह़ मिश्कात में है : “तुम फ़ज्र व अ़स्र की नमाज़ में मग़लूब न होना यानी सुस्ती व आराम त़लबी तुम पर इस त़रह़ ग़ालिब न आए कि येह दोनों नमाज़ें ही छोड़ दो। फ़ज्र व अ़स्र की तख़्सीस उन की अफ़्ज़लियत की बिना पर है, वरना तमाम नमाज़ों का येही हुक्म है कि उन में से किसी में भी सुस्ती न की जाए।”[6]

इन दो नमाज़ों को ख़ुसूसिय्यत से ज़िक्र करने की एक वजह येह है कि दीदारे इलाही उन ही अवक़ात में होगा।[7] इन दो नमाज़ों पर पाबन्दी उस दीदार की लियाक़त व क़ाबिलिय्यत पैदा करेगी।[8]

फ़ज्र व अ़स्र का अज्रे अ़ज़ीम

फ़ुयूज़ुल बारी में है : रही येह बात कि येह दीदार कैसे होगा, इस की कैफ़िय्यत क्या होगी, ज़ात का दीदार होगा या तजल्ली की रूयत होगी ? तो इस के मुतअ़ल्लिक़ एक मुसलमान के लिए बस इतना जानना और मानना काफ़ी है कि दीदार होगा। रही इस की ह़क़ीक़त व माहियत व कैफ़िय्यत तो येह न बयान हो सकती है और न बयान की जा सकती है और न इस की तह तक पहुंचने का हमें मुकल्लफ़ बनाया गया है। रूयते इलाही (दीदारे इलाही) के ज़िक्र के वक़्त फ़ज्र व अ़स्र के ज़िक्र की मुनासबत येह है कि नमाज़ अफ़्ज़ल इ़बादात से है और अ़स्र व फ़ज्र की अहमिय्यत व अ़ज़मत बहुत ज़ियादा है, क्यूंकि येह वक़्त फ़िरिश्तों के इज्तिमाअ़ व आमाल के उठने का है, लिहाज़ा ऐसे अफ़्ज़ल व आला अ़मल का सवाब भी अफ़्ज़ल होना चाहिए और वोह है दीदारे इलाही जो तमाम उख़रवी नेमतों से अफ़्ज़ल व अकमल आला व अरफ़अ़ है।[9]

हर मोमिन दीदारे इलाही से मुशर्रफ़ होगा

ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नई़मी رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं : दुनिया में बन्दे अल्लाह तआ़ला को बसीरत यानी नूरे क़ल्बी से देखते हैं उसे जानते पहचानते हैं, आख़िरत में उसे बिसारत यानी नूरे निगाह से देखेंगे कि वहां बिसारत में बसीरत होगी। दुनिया में ख़्वाब में दीदारे इलाही हो सकता है बल्कि होता है। हमारे इमामे आ'ज़म ने एक सौ बार रब को ख़्वाब में देखा। इमाम अह़मद बिन ह़म्बल رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ ने ख़्वाब में अल्लाह पाक को देखा तो पूछा : इलाही ! कौन सी इ़बादत अफ़्ज़ल है ? फ़रमाया : तिलावते क़ुरआन, दूसरी बार फिर देखा, पूछा : इलाही ! माना समझ कर तिलावत अफ़्ज़ल है या बग़ैर समझे भी ? फ़रमाया : हर त़रह़ अफ़्ज़ल है। येह ह़दीस आ़म्मतुल मुस्लिमीन की दलील है कि मोमिन रब तआ़ला को मह़शर में भी आंखों से देखेंगे और जन्नत में भी देखा करेंगे।[10]

एक आ़शिक़े रसूल का इ़श्क़ भरा अन्दाज़

ह़दीसे पाक में है : “ताजदारे रिसालत صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने चौदहवीं के चांद को देखा” चांद देखने की इस कैफ़िय्यत को एक आ़शिक़े रसूल ने किस इ़श्क़ भरे अन्दाज़ में बयान किया है, मुलाह़ज़ा फ़रमाइए : चुनान्चे मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नई़मी رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं : (निबय्ये करीम صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने चौदहवीं के चांद को देखा) यानी रह़मान के चांद ने आस्मान के चांद को देखा। डूबने वाले गहने चांद को उस चांद ने देखा जो न ग़ुरूब हो न गहने। ज़ाहिर के चमकाने वाले चांद को उस चांद ने देखा जो दिलो जान, रूह़ व ईमान को चमकाता है। रात में चमकने वाले चांद को उस चांद ने देखा जो अबदुल आबाद तक हर वक़्त दिन रात चमकता है और चमकेगा, मैं क्या कहूं मुझे अलफ़ाज़ भी नहीं मिलते اَللّٰھُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ وَبَارِكْ عَلٰى بَدْرِ النُّبُوَّۃِ وَشَمْسِ الرِّسَالَۃِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ। यूं कह लो कि उस चांद को जो सूरज से चमकता है उस चांद ने देखा जो सूरज को चमकाता है जो दिलों पर दिन निकाल देता है।[11]

अल्लाह पाक हमें आख़िरत में दीदारे इलाही की नेमत से सरफ़राज़ फ़रमाए। اٰمِيْن بِجَاہِ خَاتَمِ النَّبِيّٖن صلَّى الله عليه واٰلهٖ وسلَّم

---

(1)بخاری،4/334،حدیث:4851-7434(2)الفوائد المترعۃ الحیاض،5/56، تحت الحدیث:1051(3)دیکھیے:اشعۃ اللمعات،4/449،448(4)بہار شریعت، 1/21،20(5)اشعۃ اللمعات،4/449(6)لمعات التنقیح،9/138، تحت الحدیث: 5655(7)اشعۃ اللمعات،4/450(8)مراٰۃ المناجیح،7/518(9)فیوض الباری، 3/248(10)مراٰۃ المناجیح،7/516،517(11)مراٰۃ المناجیح،7/517۔

आख़िरी नबी मुह़म्मदे अ़रबी صلی اللہ علیہ والہ وسلم का अन्दाज़े गुफ़्तगू

सह़ीह़ और दानिशमन्दाना गुफ़्तगू पुख़्ता इ़ल्म की निशानी होती है, जिस का इ़ल्मी रुसूख़ जितना ज़ियादा होता है उस की गुफ़्तगू उतनी ही शानदार, मुफ़ीद और नतीजा ख़ेज़ हुवा करती है। आइए ! इस बुन्यादी नुक्ते को ज़ेहन में रख कर हम क़ुरआने करीम खोलते हैं और सूरए रह़मान की इब्तिदाई आयात पढ़ते हैं :

﴿اَلرَّحْمٰنُۙ(۱) عَلَّمَ الْقُرْاٰنَؕ(۲) خَلَقَ الْاِنْسَانَۙ(۳) عَلَّمَهُ الْبَیَانَ(۴)﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : रह़मान ने अपने मह़बूब को क़ुरआन सिखाया इन्सानिय्यत की जान मुह़म्मद को पैदा किया ماکان وما یکون (यानी जो हो चुका है और जो होगा) का बयान उन्हें सिखाया।[1]

और जो क़ुरआने करीम सिखाया उस की शान बयान करते हुए रब्बे करीम इरशाद फ़रमाता है : ﴿وَ نَزَّلْنَا عَلَیْكَ الْكِتٰبَ تِبْیَانًا لِّكُلِّ شَیْءٍ﴾ तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और हम ने तुम पर येह क़ुरआन उतारा कि हर चीज़ का रौशन बयान है।[2]

अब ज़रा इस बात पर ग़ौर फ़रमाइए कि रब्बुल आ़लमीन ने आख़िरी नबी صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को ख़ुद इ़ल्म सिखाया हो और क़ुरआन जैसा मोजिज़ाना कलाम उन पर नाज़िल फ़रमाया हो तो उन की गुफ़्तगू की ख़ूबसूरती व दिलकशी और कमाल का आ़लम क्या होगा ! मुस्त़फ़ा करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की गुफ़्तगू को मह़फ़ूज़ करने, समझने, इस पर ग़ौरो फ़िक्र करने में दुनिया के ज़हीन तरीन लोगों ने अपनी ज़िन्दगियां वक़्फ़ की हैं। सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की अह़ादीस हमें येह सिखाती हैं कि बोलना कब चाहिए, कैसे चाहिए और क्या और कितना चाहिए ? आइए ! अल्लाह के आख़िरी नबी صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के अन्दाज़े गुफ़्तगू का मुत़ालआ़ करते हैं :

1 बवक़्ते ज़रूरत गुफ़्तगू

अल्लाह के आख़िरी नबी صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अक्सर अवक़ात ख़ामोश रहते थे बिला ज़रूरत गुफ़्तगू न फ़रमाते थे।[3] रह़मते आ़लम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ख़ामोशी की तरग़ीब यूं दिलाई है : जो चुप रहा उस ने नजात पाई।[4] जो सलामती चाहता हो तो उस पर ख़ामोशी लाज़िम है।[5] ख़ामोशी अख़्लाक़ की सरदार है।[6] तुम पर नेकी की बात के इ़लावा त़वील ख़ामोशी लाज़िम है क्यूंकि येह शैत़ान को तुम से दूर कर देगी और दीनी मुआ़मलात में तुम्हारी मददगार होगी।[7] मालूम हुवा कि बे वक़्त बोलते रहने से बेहतर है कि बन्दा बर वक़्त बोले कि बर वक़्त बोलना इन्सान की समझदारी और बे वक़्त बोलना नादानी की निशानी है। हमें अल्फ़ाज़ को ख़ज़ाना समझना चाहिए और इसे वहां ख़र्च करना चाहिए चहां ज़रूरत हो।

2 गुफ़्तगू का आग़ाज़ और इख़्तिताम

हमारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم गुफ़्तगू का आग़ाज़ भी अल्लाह के नाम से करते और इख़्तिताम भी अल्लाह के नाम पर करते।[8] मुराद येह है कि आप गुफ़्तगू शुरूअ़ करने से पहले बिस्मिल्लाह शरीफ़ पढ़ते और गुफ़्तगू ख़त्म करने के बाद اَلْحَمْدُلِلّٰہ फ़रमाते।[9]

3 गुफ़्तगू के मौज़ूआत

अल्लाह पाक ने सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को तालीमे किताब व हिक्मत और तज़्कियए नुफ़ूस के लिए मबऊ़स फ़रमाया है लिहाज़ा आप की गुफ़्तगू का मौज़ूअ़ हर वोह चीज़ रही जिस की इन्सान को ज़रूरत थी, येही वजह है कि हमारे सामने मौजूद ज़ख़ीरए अह़ादीस तक़रीबन साढ़े चौदह सौ साल गुज़र जाने के बावुजूद इन्सान की एतिक़ादी, तालीमी, समाजी और मआशी ज़रूरत पूरी करने के लिए काफ़ी व वाफ़ी है और हमारे उ़रूज के हुसूल और ज़वाल से नजात का राज़ भी अह़ादीसे रसूल समझने और उन पर अ़मल करने में है, इसी अहमियत के पेशे नज़र दावते इस्लामी 45 साल से तालीमाते नबवी आ़म करने में मसरूफ़े अ़मल है जिस का नतीजा येह है कि अब तक ला तादाद लोगों का किरदार सुन्नतों के सांचे में ढल चुका है, दावते इस्लामी के प्लेट फ़ॉर्मज़ से कई नौजवान उ़लूमे ह़दीस की तह़सील व इशाअ़त में अपना हिस्सा मिला रहे हैं।

4 अन्दाज़े गुफ़्तगू

मुअस्सर गुफ़्तगू में अन्दाज़ को बहुत ज़ियादा अहमिय्यत ह़ासिल है क्यूंकि अन्दाज़ उ़म्दा हो तो बात दिल में उतर जाती है लिहाज़ा

1 आप जल्दी जल्दी गुफ़्तगू न फ़रमाते बल्कि एक जुम्ले पर रुक जाते थे ताकि सुनने वाला ग़ौर कर के समझ ले, येह रफ़्तार इतनी होती कि अगर कोई अलफ़ाज़ गिनना चाहता तो गिन सकता था जैसा कि उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللہُ عَنْھَا फ़रमाती हैं : रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم तुम्हारी जल्दी की त़रह़ बात जल्दी जल्दी न करते थे[10] आप बातें यूं करते थे कि अगर कोई गिनने वाला गिनना चाहता तो उन्हें गिन लेता।[11]

2 अल्लाह के आख़िरी नबी صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का अन्दाज़े गुफ़्तगू इतना वाज़ेह और साफ़ होता कि बात पूरी त़रह समझ आ जाती।[12]

3 रह़मते आ़लम صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم बसा अवक़ात कोई बात तीन बार दोहराते जैसा कि ह़ज़रते अनस बिन मालिक رَضِیَ اللہُ عَنْہُ फ़रमाते हैं: हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم (बाज़ अवक़ात) बात को (मुश्किल माना, नामानूसियत या सुनने वालों की कसरत वग़ैरा जैसी वुजूहात की बिना पर शफ़क़त व मेहरबानी करते हुए) तीन मरतबा दोहराते ताकि आप की बात समझी जा सके।[13]

ज़रूरत की बिना पर किसी बात को तीन मरतबा दोहराने की कई मिसालें कुतुबे ह़दीस में मौजूद हैं और उन तमाम या अक्सर अह़ादीस को सामने रखने वाले पर येह बात पोशीदा नहीं है कि उन में से हर एक ह़दीस में दोहराई जाने वाली बात इस्लाम की किसी अहम तालीम पर मुश्तमिल है, तकरार के इस त़रीक़ए गुफ़्तगू का नतीजा येह निकला कि सह़ाबए किराम ने इसे ख़ूब ज़ेहन नशीन किया और इन की बदौलत हमें येह ज़ख़ीरए ह़दीस इस्लाम की रौशन तालीमात की सूरत में पहुंचा।

5 इन्तिख़ाबे अलफ़ाज़

अल्लाह के आख़िरी नबी صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को जवामेउ़ल कलिम का मोजिज़ा अ़त़ा हुवा था जिस की वजह से आप त़वील गुफ़्तगू को चन्द अलफ़ाज़ में समेट देते थे, आप की ज़बान से अदा होने वाला लफ़्ज़ लफ़्ज़, मआ़नी व मत़ालिब के समुन्दर के लिए कूज़ा बन जाता, आज भी जो अह़ादीसे त़य्यिबा को पढ़ता है अलफ़ाज़े मुस्त़फ़ा की तासीर अपने दिल में ज़रूर मह़सूस करता है।

6 लबो लहजा

ख़ूबसूरत अन्दाज़े गुफ़्तगू अलफ़ाज़ में मिठास पैदा कर देता है, आख़िरी नबी صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के ख़ूबसूरत लबो लहजे की ख़ुसूसिय्यात बयान करते हुए ह़ज़रते उम्मे मअ़बद رَضِیَ اللہُ عَنْھَا फ़रमाती हैं : जब हुज़ूर صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ख़ामोश होते तो पुर वक़ार मीठी होती, बे फ़ायदा होती न बेहूदा। आप की गुफ़्तगू गोया मोतियों की लड़ी होती, जिस से मोती झड़ रहे होते।[14]

रह़मते आ़लम صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के बे मिसाल लबो लहजे की चन्द मिसालें मुलाह़ज़ा कीजिए :

1 आप के लहजे में सख़्ती न थी।[15] ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللہُ عَنْہُ फ़रमाते हैं : मैं ने दस साल रसूले करीम صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में गुज़ारे मगर न तो कभी आप मुझ पर नाराज़ हुए और न कभी मुझे डांटा बल्कि येह भी न फ़रमाया कि येह काम तू ने क्यूं किया ? या क्यूं न किया ?[16]

2 आप का लबो लहजा तौहीन व ह़क़ारत से पाक था। एक मरतबा ऐसा हुवा कि एक देहाती मस्जिद में दाख़िल हुवा और कोने में जाकर पेशाब करने लगा, सह़ाबए किराम उसे रोकने लगे तो हुज़ूर صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : उसे न रोको, छोड़ दो।[17] जब उस ने पेशाब कर लिया तो बुला कर इरशाद फ़रमाया : येह मस्जिदें पेशाब

और गन्दगी के लिए नहीं, येह तो ज़िक्रे इलाही, नमाज़ और तिलावते क़ुरआन के लिए हैं।[18] (एक रिवायत के मुताबिक़) वोह देहाती आप के इस अन्दाज़ से इतना मुतअस्सिर हुवा कि उस ने आप صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के अन्दाज़े तरबियत का यूं बयान किया :

فَقَامَ اِلَیَّ بِاَبِیْ وَاُمِّی، فَلَمْ یُؤَنِّبْ وَلَمْ یَسُبَّ

यानी रसूले करीम صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मेरी तरफ़ तशरीफ़ लाए, मेरे मां बाप उन पर क़ुरबान ! आप ने न तो मुझे डांटा और न ही बुरा भला कहा।[19] चूंकि येह नए नए मुसलमान हुए थे और इस मस्अले से ला इल्म थे इस लिए येह अ़मल इन से हुवा।[20] वरना हुक्मे शरई येह है कि "मस्जिद में पेशाब करना ह़राम है।"[21]

3 रह़मते आलम صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने दुरुस्त बात की तालीम देने या किसी की ग़लती ठीक करवाने के लिए भी लबो लहजा दुरुस्त रखना सिखाया है, एक मिसाल मुलाह़ज़ा कीजिए, चुनान्चे ह़ज़रते मुआ़विया बिन ह़कम رَضِیَ اللہُ عَنْہُ बयान करते हैं : मैं हुज़ूर की इक़्तिदा में नमाज़ पढ़ रहा था, इतने में किसी को छींक आई, मैं ने नमाज़ में ही يَرْحَمُكَ الله कह दिया, लोग मुझे नज़रों से घूरने लगे, मैं ने कहा : तुम्हें क्या हुवा ? मुझे क्यूं देख रहे हो ? इस पर लोग अपनी रानों पर हाथ मारते हुए मुझे चुप करवाने लगे, मैं ख़ामोश हो गया। नमाज़ मुकम्मल हो गई तो हुज़ूर ने मुझे बुलाया, आप पर मेरे मां बाप फ़िदा ! मैं ने आप से ज़ियादा अच्छे अन्दाज़ में सिखाने वाला कोई न देखा, आप ने मुझे मारा न बुरा भला कहा, बल्कि फ़रमाया : येह जो नमाज़ है, इस में लोगों की गुफ़्तगू वाली कोई चीज़ दुरुस्त नहीं होती, नमाज़ तो तस्बीह़, तक्बीर और तिलावत का नाम है।[22]

7 दौराने गुफ़्तगू मुस्कुराहट

ह़ज़रते उम्मे दर्दा رَضِیَ اللہُ عَنْہَا ह़ज़रते अबू दर्दा رَضِیَ اللہُ عَنْہُ के ह़वाले से फ़रमाती हैं : वोह बात करते हुए मुस्कुराया करते थे। मैं ने उन से इस बारे में पूछा तो आप ने जवाब दिया : मैं ने रसूले अकरम صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को देखा कि वोह गुफ़्तगू करते हुए मुस्कुराते रहते थे।[23]

8 ज़िक्रे नेमत

नेमत अगर्चे छोटी हो, रसूले अकरम صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अपने क़ौल व फ़ेल से उस की अ़ज़मत बयान फ़रमाते, ज़बान से उस नेमत के मिल जाने पर ह़म्दे इलाही बजा लाते और उसे रब की इताअ़त व फ़रमां बरदारी और उस की रिज़ा वाले कामों में ख़र्च कर के अ़मलन शुक्र बजा लाते। किसी नेमत की कभी भी मज़म्मत न फ़रमाई कि हर नेमत अल्लाह करीम ही अ़ता फ़रमाता है।[24] खाना कितनी बड़ी नेमत है, रसूले अकरम صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का इस सिल्सिले में त़र्ज़े अ़मल येह रहा कि आप ने कभी खाने को ऐ़ब न लगाया, अगर पसन्द आया तनावुल फ़रमाया, वरना न खाया।[25]

गुफ़्तगू का फ़न आज एक इस्किल के त़ौर पर पढ़ाया जाता है, लोगों की बड़ी तादाद त़रह़ त़रह़ के इरादों के साथ येह फ़न सीखती है, टेक्नॉलोजी ने पूरी दुनिया तक अपनी बात पहुंचाने में कई आसानियां भी पैदा कर दी हैं लेकिन उन सारी सहूलियात के बा वुजूद दुनिया को हर रोज़ एक नए बोह़रान का सामना रहता है और जब इस बोह़रान की खोज लगाते हैं तो येह बात बहुत वाज़ेह त़ौर पर सामने आती है कि इस का सब से बुन्यादी सबब बुरी निय्यत से कहे गए अल्फ़ाज़ और किए गए काम हैं। अल्लाह करीम ने पूरी दुनिया को हर त़रह़ के बोह़रान से निकलने के लिए येह बेहतरीन उसूल दिया है :

﴿لَقَدْ كَانَ لَكُمْ فِیْ رَسُوْلِ اللّٰهِ اُسْوَةٌ حَسَنَةٌ﴾ (तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक तुम्हें रसूलुल्लाह की पैरवी बेहतर है।)[26]

इस आयत पर अ़मल करते हुए क्या ही अच्छा हो कि हम अन्दाज़े गुफ़्तगू समेत ज़िन्दगी के हर मरह़ले में अल्लाह के आख़िरी नबी صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की अदा को अदा करने वाले बन जाएं तो कई दुश्वारियां ख़त्म हो जाएंगी, इन्फ़िरादी और इज्तिमाई सत़ह़ पर सुकून पैदा होगा, हमदर्दी व ख़ैरख़्वाही के जज़्बे को फ़रोग़ मिलेगा, ह़िर्स, लालच, धोकादही जैसी कई मज़्मूम सिफ़ात का ख़ातिमा होगा, अल्लाह करीम हमें सीरते मुस्त़फ़ा अपनाने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए। اٰمِیْن بِجَاہِ خَاتَمِ النَّبِیّٖن صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

---

(1)پ27، الرحمٰن:1تا4(2)پ14، النحل:89(3)شمائل ترمذی، ص135 (4)ترمذی،4/225، حدیث:2509(5)مسند ابی یعلیٰ،3/271، حدیث:3595 (6)مسند الفردوس،2/36، حدیث:3666(7) صحیح ابن حبان،1/289، حدیث: 362(8)شمائل ترمذی، ص135(9)المواہب اللدنیہ علی الشمائل المحمدیہ، ص356 (10)بخاری،2/491، حدیث:3568(11)بخاری،2/491، حدیث: 3567 (12)دیکھیے:المواہب اللدنیہ علی الشمائل المحمدیہ، ص356(13)دیکھیے: المواہب اللدنیہ علی الشمائل المحمدیہ، ص353 ماخوذاً(14)مستدرک، 3/544، حدیث: 4333(15)شمائل ترمذی، ص135(16)بخاری،2/243، حدیث:2768،4/ 110، حدیث:6038(17)کیونکہ اولاً تو یہ دیہاتی شرعی احکام سے واقف نہیں اور دوسرا پیشاب بیچ میں روکنا طبی اعتبار سے مضر ہے۔(دیکھیے:مراٰۃ المناجیح،1/325-326) (18)دیکھیے: مسلم، ص133، حدیث:661(19)ابن ماجہ، 1/300، حدیث:529 (20)مرقاۃ المفاتیح، 2/194(21)بہار شریعت،ج 1/645 (22)مسلم، ص 215، حدیث:1199(23)دیکھیے:مسند احمد،8/172، حدیث:21794(24)دیکھیے: المواہب اللدنیہ علی الشمائل المحمدیہ، ص353 (25)بخاری، 3/531، حدیث: 5409(26)پ21، الاحزاب:21۔

मदनी मुज़ाकरे के सुवाल जवाब

शैख़े तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, हज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुहम्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी** دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ मदनी मुज़ाकरों में अ़क़ाइद, इ़बादात और मुआ़मलात के मुतअ़ल्लिक़ किये जाने वाले सुवालात के जवाबात अ़ता फ़रमाते हैं, उन में से 9 सुवालात व जवाबात ज़रूरी तरमीम के साथ यहां दर्ज किये जा रहे हैं।

1 सब से पहले और सब से आख़िरी नबी कौन हैं ?

सुवाल : सब से पहले और सब से आख़िरी नबी का नाम बता दीजिए नीज़ पैग़म्बर के क्या माना हैं ?

जवाब : सब से पहले नबी हमारे प्यारे आक़ा, मदीने वाले मुस्तफ़ा صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हैं और सब से आख़िरी नबी भी सरकारे मदीना صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ही हैं। अलबत्ता दुनिया में तशरीफ़ लाने वाले सब से पहले नबी हज़रते आदम सफ़ियुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام हैं और सब से आख़िर में तशरीफ़ लाने वाले हमारे प्यारे आक़ा صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हैं। पैग़म्बर के माना हैं : पैग़ाम पहुंचाने वाला। (मदनी मुज़ाकरा, 10 ज़ुल क़ादतिल हराम 1440 हि.)

2 हज़रते यह़या व ईसा عَلَیْہِمَا السَّلَام ने निकाह़ नहीं फ़रमाया

सुवाल : हज़रते यह़या और हज़रते ईसा عَلَیْہِمَا السَّلَام ने शादी की थी या नहीं ?

जवाब : येह दोनों ह़ज़रात कुंवारे थे इन्हों ने निकाह़ नहीं फ़रमाया । ह़ज़रते ईसा عَلَیْہِ السَّلَام आस्मान पर मौजूद हैं जब येह दुनिया में तशरीफ़ लाएंगे तो निकाह़ करेंगे।

(देखिए : बहारे शरीअ़त, 1/122,123 – मदनी मुज़ाकरा, यकुम रबीउ़ल अव्वल शरीफ़ 1442 हि.)

3 अ़जवा खजूर का दरख़्त उग गया

सुवाल : एक इस्लामी भाई की वालिदा ने 30 साल पहले मदीनए मुनव्वरा से लाई गई खजूर की गुठली को एक गम्ले में लगाया था जो आज क़द आवर दरख़्त बन चुका है, क्या उस दरख़्त को मदीने से लाई गई खजूर के ज़रीए़ मदीने से निस्बत है, चूंकि मुसलमान मदीने की खजूरों का अदबो एह़तिराम और ताज़ीम करते हैं और यक़ीनन करना भी चाहिए तो क्या उस दरख़्त की खजूरों का भी इसी त़रह अदबो एह़तिराम करना लाज़िम आएगा ?

जवाब :

इ़श्क़ दे झल्ले ऐ नम्बर ले गये
अ़क़्लमन्दा यूं उमरां गालियाँ

दुनिया के किसी भी मुल्क से चीज़ आए वोह अलग मगर जो चीज़ मदीने की गलियों से घूम कर आए उस का हम अदबो एह़तिराम करते हैं, मदीने से आई हुई अ़जवा खजूर की गुठली से उगे हुए दरख़्त का एह़तिराम किया जाएगा कि उसे ज़रूर मदीने की गलियों से निस्बत है, अलबत्ता मदीने शरीफ़ की अ़जवा खजूर के

मुतअ़ल्लिक़ जो फ़ज़ाइल अह़ादीसे मुबारका में वारिद हुए हैं, वोह ह़ासिल नहीं होंगे।

(मदनी मुज़ाकरा, 15 जुमादल उख़रा 1444 हि. बतग़य्युर)

4 क़ुरआने करीम के ग़िलाफ़ का धोवन कहां डाला जाए ?

सुवाल : क़ुरआने करीम को जिस ग़िलाफ़ में रखा जाता है, अगर उस ग़िलाफ़ को धोया जाए तो उस का पानी कहां डाला जाए ?

जवाब : उस का पानी किसी अदब वाली जगह पर डाला जाए, जैसे समुन्दर, दरिया, नहर या ऐसे मैदान में डाला जाए जहां पानी पर किसी का पांव न पड़े। गम्ले में न डाला जाए, क्यूंकि हमारे हां पौदे के गम्ले की मिट्टी में गाय का गोबर और बकरियों की मेंगनियां भी डाली जाती हैं जो नापाक होती हैं, हां ! जहां पानी सूख जाए, जैसे कोई दीवार हो या घर की छत वग़ैरा तो वहां वोह पानी डाला जा सकता है। (मदनी मुज़ाकरा, 2 सफ़रुल मुज़फ़्फ़र शरीफ़ 1442 हि.)

5 हर नमाज़ के साथ क़ज़ा नमाज़ पढ़ना कैसा ?

सुवाल : क्या हर नमाज़ के साथ क़ज़ा नमाज़ पढ़ सकते हैं ?

जवाब : बाज़ क़ज़ा उ़म्री अदा करने वाले यूं करते हैं, मसलन फ़ज्र की क़ज़ा फ़ज्र के वक़्त, ज़ोहर की क़ज़ा ज़ोहर के वक़्त पढ़ते हैं। अगर्चे यूं भी क़ज़ा अदा हो जाएगी, लेकिन येह याद रहे ! जिस पर क़ज़ा नमाज़ लाज़िम हो उस को जल्द अज़ जल्द अदा करना वाजिब है, यानी ज़रूरिय्याते ज़िन्दगी मसलन खाने, पीने, कमाने और सोने वग़ैरा के इ़लावा जो भी वक़्त मिले उस में अपनी क़ज़ा नमाज़ें अदा करते रहें। (मदनी मुज़ाकरा, 2 मुह़र्रमुल ह़राम 1442 हि.)

6 बच्चों के लिए सब्र के मवाक़ेअ़

सुवाल : बच्चे किन बातों पर सब्र कर के सवाब ह़ासिल कर सकते हैं ?

जवाब : जिन बातों से आप को तक्लीफ़ पहुंचती या परेशानी है उन पर सब्र कीजिए मसलन आप को बिरयानी खानी थी, मगर आप की अम्मीजान खिचड़ी दे दें तो आप को तक्लीफ़ होगी, मगर आप सब्र कर के खा लीजिए और सवाब कमाइए। इसी त़रह आप को कोई खिलौना चाहिए था, लेकिन आप की अम्मीजान ने कहा : "मेरे पास पैसे नहीं हैं मैं इतना महंगा खिलौना नहीं दिलवा सकती" येह सुन कर आप को तक्लीफ़ होगी, मगर आप सब्र कीजिए और छोटे खिलौने से गुज़ारा कर लीजिए। यूंही आप ने अम्मीजान से कहा : मुझे फ़ुलां कपड़े पहनने हैं, लेकिन हो सकता है अम्मीजान आप को सादा और मत़लूबा कपड़ों से कम क़ीमत वाला कपड़ा पेश करें तो आप ज़िद किए बग़ैर सब्र कर के पहन लीजिए اِنْ شَآءَ اللہُ الْکَرِیْم सवाब मिलेगा। (मदनी मुज़ाकरा, बाद नमाज़े तरावीह़, 24 रमज़ानुल मुबारक 1441 हि.)

7 निकाह़ में औ़रतों का गवाह बनना

सुवाल : क्या निकाह़ में औ़रतें गवाह बन सकती हैं ?

जवाब : निकाह़ में दो आ़क़िल व बालिग़ मुसलमान मर्द या एक मुसलमान व बालिग़ मर्द और दो मुसलमान आ़क़िला व बालिग़ा औ़रतें गवाह हों। निकाह़ में सिर्फ़ औ़रतें गवाह नहीं हो सकतीं। (देखिए : बहारे शरीअ़त, 2/11,12 – मदनी मुज़ाकरा, 5 रबीउ़ल अव्वल शरीफ़ 1442 हि.)

8 फेफड़ा खाना कैसा ?

सुवाल : ह़लाल जानवरों का फेफड़ा खाना ह़लाल है या नहीं ?

जवाब : फेफड़ा खाना ह़लाल है।

(मदनी मुज़ाकरा, 10 ज़ुल ह़िज्जतुल ह़राम, 1441 हि.)

9 कुंवारी लड़की की नमाज़े जनाज़ा पढ़ना कैसा ?

सुवाल : कुंवारी लड़की की नमाज़े जनाज़ा पढ़ना कैसा ?

जवाब : जाइज़ बल्कि उसी त़रह फ़र्ज़े किफ़ाया है जिस त़रह दूसरे फ़ौत होने वाले मुसलमानों की। यानी जिन अफ़राद को जनाज़े का मालूम हुवा उन में से बाज़ ने पढ़ लिया तो दूसरों से उस का फ़र्ज़ साक़ित़ हो जाएगा। अगर जनाज़े का मालूम होने के बाद भी किसी ने अदा नहीं किया तो जिन जिन को पता चला था वोह सब के सब गुनाहगार होंगे।

(देखिए : बहारे शरीअ़त, 1/825 – मदनी मुज़ाकरा, यकुम रबीउ़ल आख़िर 1442 हि.)

दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत

दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत (दावते इस्लामी) मुसलमानों की शरई राहनुमाई में मसरूफ़े अ़मल है, तह़रीरी, ज़बानी, फ़ोन और दीगर ज़राएअ़ से मुल्क से हज़ारहा मुसलमान शरई मसाइल दरयाफ़्त करते हैं, जिन में से तीन मुन्तख़ब फ़तावा ज़ैल में दर्ज किये जा रहे हैं।

1 ब वक़्ते दुआ़ दोनों हाथ मिलाना दुरुस्त है या जुदा रखना ?

सुवाल : क्या फ़रमाते हैं उ़लमाए दीन व मुफ़्तियाने शरए़ मतीन इस मस्अले के बारे में कि दुआ़ करते हुए दोनों हाथ मिले हों या उन में फ़ासिला होना चाहिए, दुरुस्त त़रीक़ा कौनसा है ? रहनुमाई फ़रमा दें।

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

اَلۡجَوَابُ بِعَوۡنِ الۡمَلِكِ الۡوَهَّابِ اَللّٰهُمَّ هِدَايَةَ الۡحَقِّ وَالصَّوَابِ

दुआ़ करते हुए दोनों हाथ मिले हों या उन में फ़ासिला हो, दोनों त़रीक़े ही दुरुस्त हैं, अलबत्ता दोनों हाथों में कुछ न कुछ फ़ासिला होना अफ़्ज़ल है।

وَاللّٰہُ اَعۡلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَ رَسُوۡلُہٗ اَعۡلَم صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

2 सदक़े के इ़लावा दीगर आमाल का सवाब ईसाल करने का हुक्म ?

सुवाल : क्या फ़रमाते हैं उ़लमाए किराम इस मस्अले के बारे में कि क्या सदक़ा के इ़लावा दीगर आमाल का भी ईसाले सवाब हो सकता है ?

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

اَلۡجَوَابُ بِعَوۡنِ الۡمَلِكِ الۡوَهَّابِ اَللّٰهُمَّ هِدَايَةَ الۡحَقِّ وَالصَّوَابِ

तमाम नेक आमाल ख़्वाह इ़बादाते बदनिया हों जैसे नमाज़, रोज़ा व तिलावते क़ुरआन या इ़बादाते मालिया हों जैसे ज़कात व फ़ित़्रा वग़ैरा। इन सब का सवाब ज़िन्दा या मुर्दा किसी भी मुसलमान को पहुंचाना, जाइज़ व मुस्तह़सन है।

ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से रिवायत है : ”انه سأل رسول الله صلى الله تعالى عليه وسلم فقال يا رسول الله اذا نتصدق عن موتانا ونحج عنهم ندعو لهم فهل يصل ذلك اليهم؟ قال نعم ويفرحون به كما يفرح احدكم بالطبق اذا اهدى اليه۔“ यानी उन्हों ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से सुवाल किया ऐ अल्लाह के रसूल صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! जब हम अपने मुर्दों की त़रफ़ से सदक़ा करते हैं और उन की त़रफ़ से ह़ज करते हैं और उन के लिए दुआ़ करते हैं तो क्या वोह उन्हें पहुंचता है ? तो इरशाद फ़रमाया हां ! वोह उस से इसी त़रह़ ख़ुश होते हैं जैसा कि तुम में से कोई उस वक़्त ख़ुश होता है कि जब उसे खाने का थाल भेजा जाए। (عمدۃ القاری، 3/ 177)

ह़ज़रते अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ बिन अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर अपने वालिद से और वोह अपने दादा से रिवायत करते हैं : ”قال رسول الله صلى الله تعالى عليه وسلم من حج عن والديه بعد وفاتهما كتب له عتقا من النار وكان للمحجوج عنهما اجر حجة تامة من غير ان ينقص من اجورهما شيئاً“ यानी रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जो अपने वालिदैन की त़रफ़ से उन की वफ़ात के बाद ह़ज करे उस के लिए आग से आज़ादी लिख दी जाती है और जिन के लिए ह़ज किया गया उन्हें एक मुकम्मल ह़ज क सवाब मिलेगा बग़ैर इस के, कि उन दोनों के अज्र में से कुछ कम किया जाए। (شعب الایمان، 6/ 205)

मुनासिब जगह तीन दिन तक इस मक़्सद से बैठना भी शरअ़न जाइज़ व मुबाह़ है जब कि उस में किसी मम्नूअ़ काम (मसलन : गली, रोड वग़ैरा बन्द कर के वहां बैठना कि जिस से गुज़रने वालों को तक्लीफ़ हो या उस मौक़ा पर महंगी क़ालीन व चादरें बिछाना, मुख़्तलिफ़ क़िस्म के खाने व मश्रूबात और दीगर नामवरी के अस्बाब इख़्तियार करना, यूंही मय्यित की तारीफ़ में ह़द से बढ़ना और ताज़ियत के वक़्त वोह बातें करना जो ग़म व अलम को ज़ियादा करें वग़ैरा) का इर्तिकाब न किया जाए। अलबत्ता इस त़रह़ बैठना कोई लाज़िम व ज़रूरी नहीं बल्कि तस्रीह़ात फ़ुक़हा के मुताबिक़ इस का तर्क (यानी ताज़ियत के लिए न बैठना) अफ़्ज़ल व अह़सन है, लिहाज़ा तीन दिन से पहले इस सिल्सिले को ख़त्म करने में शरअ़न कोई ह़रज नहीं

وَاللّٰہُ اَعْلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَ رَسُوْلُہٗ اَعْلَم صلَّی اللہ علیہ والہٖ وسلَّم

अ़क़ीदए ख़त्मे नुबुव्वत की अहमिय्यत, अह़ादीस और सह़ाबा व ताबेईन के इरशादात पढ़ने के लिए अमीरे अहले सुन्नत का रिसाला **“सब से आख़िरी नबी”** मक्तबतुल मदीना से ह़ासिल कीजिए।

ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللہُ عَنْہ से मर्फ़ूअ़न रिवायत है : ”مامن مومن ولا مومنة يقرأ آية الكرسى ويجعل ثوابها لاهل القبور الالم يبق على وجه الارض قبرالا ادخل الله فيه نوراً فوسع قبره من المشرق الى المغرب وكتب للقارئ ثواب سبعين شهيدا“ यानी कोई भी मोमिन या मोमिना जो आयतुल कुर्सी पढ़े और उस का सवाब अहले क़ुबूर को ईसाल करे (तो) ज़मीन पर कोई ऐसी क़ब्र नहीं होती मगर अल्लाह तआला उस में नूर दाख़िल फ़रमाता है उस की क़ब्र को मश्रिक़ से मग़रिब तक वसीअ़ फ़रमा देता है और क़ारी के लिए सत्तर शहीदों का सवाब लिखता है।

(القراءۃ عند القبور لابی بکر خلال، ص35)

बहारे शरीअ़त में है : “रहा सवाब पहुंचाना कि जो कुछ इ़बादत की उस का सवाब फ़ुलां को पहुंचे इस में किसी इ़बादत की तख़्सीस नहीं हर इ़बादत का सवाब दूसरे को पहुंचा सकता है नमाज़ रोज़ा, ज़कात, सदक़ा, ह़ज, तिलावत क़ुरआन, ज़िक्र, ज़ियारते क़ुबूर फ़र्ज़ व नफ़्ल सब का सवाब ज़िन्दा या मुर्दा को पहुंचा सकता है।”

(बहारे शरीअ़त, 1/1201)

وَاللّٰہُ اَعْلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَ رَسُوْلُہٗ اَعْلَم صلَّی اللہ علیہ والہٖ وسلَّم

3 फ़ौतगी पर अहले ख़ाना का तीन दिन तक ताज़ियत के लिए बैठना कैसा ?

सुवाल : क्या फ़रमाते हैं उ़लमाए दीन व मुफ़्तियाने शरए मतीन इस मस्अले के बारे में कि मय्यित की तदफ़ीन के बाद आ़म त़ौर पर हमारे हां तीन दिन ताज़ियत के लिए बैठने का रिवाज है कि मय्यित के घर वाले अपने घर के पास या किसी मुनासिब जगह बैठते हैं और दीगर मुसलमान उन से ताज़ियत करने आते हैं तो इस त़रह़ तीन दिन बैठने का शरई ह़ुक्म किया है ? नीज़ अगर कभी मय्यित के वुरसा तीन दिन से पहले येह सिल्सिला ख़त्म करना चाहें तो कर सकते हैं या नहीं ?

بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

اَلْجَوَابُ بِعَوْنِ الْمَلِكِ الْوَهَّابِ اَللّٰهُمَّ هِدَايَةَ الْحَقِّ وَالصَّوَابِ

किसी मुसलमान के इन्तिक़ाल पर उस के घर वालों से ताज़ियत करना, उन्हें सब्रो हिम्मत की तल्क़ीन करना सुन्नत और बहुत बड़े सवाब का काम है और मय्यित के घर वालों का घर वग़ैरा किसी

इस्लामी मुआ़शरे में इ़ज़्ज़ते नफ़्स का तह़फ़्फ़ुज़

دعوتِ اسلامی کی مرکزی مجلسِ شوریٰ کے نگران مولانا محمد عمران عطاری

जो भी ख़ुश नसीब इन्सान अल्लाह पाक के आख़िरी नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के दामने रह़मत से वाबस्ता हुवा है, अल्लाह पाक ने उसे न सिर्फ़ इ़ज़्ज़तो तकरीम वाला बना दिया है बल्कि इस्लाम ने किसी दूसरे आदमी पर इस बात को भी ह़राम कर दिया है कि वोह उस "**इ़ज़्ज़त वाले**" की इ़ज़्ज़त को किसी भी अन्दाज़ में तार तार करे। मुसलमान की इ़ज़्ज़तो ह़ुर्मत अल्लाह व रसूल की बारगाह में कैसी क़द्रो मन्ज़ेलत वाली है इस बात का अन्दाज़ा इस रिवायत से लगाइए: हमारे प्यारे नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया: मुसलमान मुसलमान का भाई है, न उस से ख़ियानत करे, न उस से झूट बोले और न उसे रुस्वा करे। हर मुसलमान की इ़ज़्ज़त, माल और जान दूसरे मुसलमान पर ह़राम है। (और हाथ मुबारक से अपने दिल की त़रफ़ इशारा फ़रमाया:) तक़्वा यहां है। फिर फ़रमाया: किसी भी इन्सान के बुरा होने के लिए इतना ही काफ़ी है कि वोह अपने मुसलमान भाई को ह़क़ारत की निगाह से देखे।[(1)]

इस्लाम इ़ज़्ज़त की ह़िफ़ाज़त यूं करता है

चूंकि एक मुसलमान का दूसरे मुसलमान के साथ इस्लाम का रिश्ता है इस लिए उस पर लाज़िम है कि वोह अपने मुसलमान भाई का इकराम करे और उस की इ़ज़्ज़त की ह़िफ़ाज़त करे और हमेशा उस की बे ह़ुर्मती से बचता रहे और अगर कोई दूसरा आदमी मुसलमान की बेइ़ज़्ज़ती करे या उसे तक्लीफ़ पहुंचाए तो मुसलमान पर लाज़िम है कि वोह अपने मुसलमान भाई की मदद करे और उस की इ़ज़्ज़त पामाल न होने दे। इस लिए कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया: जिस ने अपने मुसलमान भाई की इ़ज़्ज़त की ह़िफ़ाज़त की अल्लाह पाक क़ियामत के दिन उस से जहन्नम का अ़ज़ाब दूर फ़रमा देगा। इस के बाद आप ने येह आयते मुबारका तिलावत फ़रमाई:

﴿وَكَانَ حَقًّا عَلَيْنَا نَصْرُ الْمُؤْمِنِيْنَ (۴۷)﴾[(2)] तर्जमए कन्ज़ुल ईमान: और हमारे ज़िम्मए करम पर है मुसलमानों की मदद फ़रमाना।[(3)]

मुसलमान की इ़ज़्ज़त की ह़िफ़ाज़त करने वाला अल्लाह पाक की बारगाह में ऐसा पसन्दीदा हो जाता है कि अल्लाह पाक जहन्नम से उस की ह़िफ़ाज़त के लिए एक फ़िरिश्ता मुक़र्रर फ़रमा देता है जैसा कि ह़ज़रते मुआ़ज़ बिन अनस رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ अपने वालिद से रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया: जिस ने किसी मुसलमान (की इ़ज़्ज़त) को उस मुनाफ़िक़ से बचाया जो पीठ पीछे उस की बुराई कर रहा था तो अल्लाह करीम (बरोज़े क़ियामत) उस की त़रफ़ एक फ़िरिश्ता भेजेगा जो उसे जहन्नम से बचाएगा और

जिस ने किसी मुसलमान को ज़लील करने का सामान किया अल्लाह पाक उस की सज़ा पूरी होने तक उसे जहन्नम के पुल पर रोके रखेगा।[(4)] इन अहादीस से मालूम होता है कि इस्लाम सिर्फ़ इ़ज़्ज़त देने की तालीम नहीं देता बल्कि इ़ज़्ज़त की ह़िफ़ाज़त को भी नेकी क़रार देता है। पुराने ज़माने में जब घोड़ों, ऊंटों और ख़च्चरों पर सफ़र हुवा करता था उस वक़्त इ़ज़्ज़त अफ़ज़ाई का एक त़रीक़ा येह भी था कि एक आदमी सुवारी की लगाम पकड़ कर खड़ा हो जाता ताकि सुवार होने वाला आसानी से सुवार हो जाए, इसी त़रह जब कोई घोड़े वग़ैरा पर सुवार आता तो आगे बढ़ कर सुवारी की लगाम पकड़ लेते थे, ताकि सुवार आसानी से उतर जाए इस्लाम में येह मामूली अ़मल भी किस क़दर मक़्बूल है कि अल्लाह पाक के आख़िरी नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जो बन्दा अपने मुसलमान भाई (की इ़ज़्ज़त करते हुए, उस) के घोड़े की रिकाब पकड़े, उस का येह अ़मल किसी लालच की वजह से न हो, किसी क़िस्म के ख़ौफ़ के सबब न हो (बल्कि ख़ालिस अल्लाह पाक की रिज़ा के लिए हो) तो अल्लाह पाक उस रिकाब पकड़ने वाले की मग़्फ़िरत फ़रमा देता है।[(5)] येह रिवायात तो मुसलमान की इ़ज़्ज़त करने उस की इ़ज़्ज़त की ह़िफ़ाज़त करने से मुतअ़ल्लिक़ थीं अब इस्लाम का कमाल देखिए कि इस्लाम तो वोह शजरे इ़ज़्ज़त अफ़ज़ा है कि अगर कोई ग़ैर मुस्लिम भी "**शरई़ त़रीक़एकार**" के मुताबिक़ उस की छांव में पनाह ले ले तो वोह भी मह़रूम नहीं रहता जैसा कि "**ज़िम्मी**" को तक्लीफ़ देना और उन की ग़ीबत करना हरगिज़ जाइज़ नहीं कि हमारे प्यारे नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जिस ने किसी यहूदी या नसरानी को तक्लीफ़ देह बात कही उस का ठिकाना जहन्नम है।[(6)] ज़िम्मी उस मख़्सूस ग़ैर मुस्लिम को कहते हैं जो इस्लामी ह़ुकूमत को अपने तह़फ़्फ़ुज़ के लिए जिज़्या (TAX) अदा करे। तफ़्सीरे नई़मी में है : जिज़्या यानी वोह शरई़ मह़सूल (TAX) जो ह़ुकूमत अहले किताब (यहूदो नसारा) से उन के जानो माल की ह़िफ़ाज़त के बदले वुसूल करे।[(7)] याद रहे ! जब इन्सान की इ़ज़्ज़त मह़फ़ूज़ होती है तो ख़ानदान मज़बूत होते हैं, मुआ़शरा पुरअम्न बनता है, लोगों में उख़ुव्वत व भाईचारगी परवान चढ़ती है। इसी लिए इस्लाम ने इ़ज़्ज़ते नफ़्स की ह़िफ़ाज़त को मह़ज़ अख़्लाक़ी नसीह़त नहीं बल्कि शरई़ ज़िम्मेदारी क़रार दिया है। अगर मुसलमान इस तालीम को अपनी ज़िन्दगी का ह़िस्सा बना लें तो दिलों से नफ़रत, ज़बानों से तह़क़ीर व तज़लील के जुम्ले और मुआ़शरे से इन्तिशार व इफ़्तिराक़ ख़त्म हो जाएगा।

इ़ज़्ज़ते नफ़्स के तह़फ़्फ़ुज़ पर इस्लाम का जामेअ़ निज़ाम

इस्लाम अपने मानने वालों को इ़ज़्ज़ते नफ़्स की ह़िफ़ाज़त की सिर्फ़ तरग़ीब ही नहीं देता बल्कि उस का अ़मली नमूना भी इस्लामी मुआ़शरे के माथे का झूमर है। इस्लाम हर उस काम, अ़मल, बात, इशारे किनाए और गुफ़्तगू से मना करता है कि जो किसी भी मुसलमान की इ़ज़्ज़ते नफ़्स को नुक़्सान पहुंचाने वाली हो। इस्लाम ने अपने मानने वालों को सिर्फ़ ज़बानी कलामी उसूल ही नहीं दिए बल्कि ऐसे अह़काम भी अ़त़ा फ़रमाए हैं जो रोज़ मर्रा ज़िन्दगी में इन्सान की इ़ज़्ज़त का तह़फ़्फ़ुज़ करते हैं। इस्लाम ने इ़बादात से ले कर मुआ़मलात, मुआ़शरत, मई़शत, अ़दालत व सियासत अल ग़रज़ हर शोबे में ऐसे अह़काम दिए हैं जो इन्सान की इ़ज़्ज़ते नफ़्स को मह़फ़ूज़ बनाते हैं। आ़म त़ौर पर देखा जाता है कि एक आदमी दूसरे आदमी की इ़ज़्ज़ते नफ़्स पर ज़बान से ह़म्लाआवर होता है इस लिए इस्लाम ने ज़बान की ह़िफ़ाज़त का ह़ुक्म दे कर दूसरों की इ़ज़्ज़त को तह़फ़्फ़ुज़ फ़राहम किया। येह भी ह़क़ीक़त है कि तल्वार का ज़ख़्म भर जाता है मगर ज़बान का ज़ख़्म अक्सर ज़िन्दगी भर बाक़ी रहता है, इ़ज़्ज़ते नफ़्स की ह़िफ़ाज़त के लिए इस्लाम ने ज़बान के लिए कुछ उसूलो ज़वाबित़ बनाए हैं कि जो किसी दूसरे निज़ाम में इस क़दर जामेइ़य्यत के साथ नज़र नहीं आते।

मज़ाक़ उड़ाने की मुमानअ़त

इस्लामी मुआ़शरे में किसी के लिए भी जाइज़ व दुरुस्त नहीं है कि वोह कोई ऐसा काम करे जो ख़ुद उस की अपनी या किसी दूसरे की इ़ज़्ज़त व ह़ुर्मत को ख़राब करने वाला हो। इन्सानी मुआ़शरे में इ़ज़्ज़ते नफ़्स पर ह़म्ले की जितनी भी सूरतें मौजूद थीं या जो बन सकती थीं इस्लाम ने उन सब से मना फ़रमा दिया है जैसा कि क़ुरआने पाक में है : ﴿یٰۤاَیُّهَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا لَا یَسْخَرْ قَوْمٌ مِّنْ قَوْمٍ عَسٰۤى اَنْ یَّكُوْنُوْا خَیْرًا مِّنْهُمْ وَ لَا نِسَآءٌ مِّنْ نِّسَآءٍ عَسٰۤى اَنْ یَّكُنَّ خَیْرًا مِّنْهُنَّۚ وَ لَا تَلْمِزُوْۤا اَنْفُسَكُمْ وَ لَا تَنَابَزُوْا بِالْاَلْقَابِؕ بِئْسَ الِاسْمُ الْفُسُوْقُ بَعْدَ الْاِیْمَانِۚ وَ مَنْ لَّمْ یَتُبْ فَاُولٰٓىٕكَ هُمُ الظّٰلِمُوْنَ(۱۱)﴾ तर्जमए कन्ज़ुल इ़रफ़ान: ऐ ईमान वालो ! मर्द दूसरे मर्दों पर न हंसें, हो सकता है कि वोह उन हंसने वालों से बेहतर हों और न औ़रतें दूसरी औ़रतों पर हंसें हो सकता है कि वोह उन हंसने वालियों से बेहतर हों और आपस में किसी को त़ाना न दो और एक दूसरे के बुरे नाम न रखो, मुसलमान

होने के बाद फ़ासिक़ कहलाना क्या ही बुरा नाम है और जो तौबा न करें तो वोही ज़ालिम हैं।[8] इस आयत में कितनी तफ़्सील से हतके इ़ज़्ज़त के तमाम त़रीक़ों से रोक दिया गया है, चाहे वोह मज़ाक़ उड़ाने की सूरत हो, त़ानाज़नी करना हो या किसी का नाम बिगाड़ने से तअ़ल्लुक़ रखता हो। ग़ौर करने पर बिल्कुल ज़ाहिर हो जाता है कि अल्लाह पाक ने उन से इस लिए मना फ़रमाया है कि येह सारे काम इन्सानी इ़ज़्ज़तो वक़ार के ख़िलाफ़ और फ़ित्ना व फ़साद का ज़रीआ़ हैं। मुसलमान की इ़ज़्ज़त का मुआ़मला इस क़दर ह़स्सास है कि इशारे किनाए या किसी बात के ज़रीए़ दूसरे को ऐ़ब लगाने से भी रोक दिया गया इस लिए कि मोमिन एक जान की त़रह हैं जब किसी दूसरे मोमिन पर ऐ़ब लगाया जाएगा तो गोया ऐ़ब लगाने वाला ख़ुद अपने आप पर ही ऐ़ब लगा रहा है।[9] ह़ज़रते अ़ल्लामा अ़ब्दुल मुस़्त़फ़ा आज़मी رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ लिखते हैं : इहानत और तह़क़ीर के लिए ज़बान या इशारात, या किसी और त़रीक़े से मुसलमान का मज़ाक़ उड़ाना ह़राम व गुनाह है क्यूंकि इस से एक मुसलमान की तह़क़ीर और उस की ईज़ा रसानी होती है और किसी मुसलमान की तह़क़ीर करना और दुख देना सख़्त ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है।[10] ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللہُ عَنْہ ख़ौफ़े ख़ुदा की वजह से फ़रमाते हैं : لَوْ سَخِرْتُ مِنْ كَلْبٍ، لَخَشِيتُ اَنْ اَكُونَ كَلْبًا यानी अगर मैं किसी कुत्ते का मज़ाक़ उड़ाऊं तो मुझे डर है कि कहीं मैं ख़ुद भी कुत्ता न बना दिया जाऊं।[11]

ऐ़ब तलाश करना मना है

किसी की टोह में लग जाना, उस के पोशीदा ऐ़ब ढूंडना, फिर उन्हें लोगों में आ़म कर देना भी इस्लाम में मना है इस लिए कि येह भी हतके इ़ज़्ज़त (यानी किसी की रुस्वाई करने) के ज़ुमरे में आता है। रसूले अकरम صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ऐ उन लोगों के गिरोह, जो ज़बान से ईमान लाए और ईमान उन के दिलों में दाख़िल नहीं हुवा, मुसलमानों की ग़ीबत न करो और उन की छुपी हुई बातों की टोह न करो, इस लिए कि जो कोई अपने मुसलमान भाई की छुपी हुई चीज़ की टटोल करेगा, अल्लाह पाक उस की छुपी चीज़ की टटोल करे (यानी उसे ज़ाहिर कर दे) गा और जिस के ऐ़ब अल्लाह ज़ाहिर करेगा उस को रुस्वा कर देगा, अगर्चे वोह अपने मकान के अन्दर हो।[12]

ग़ीबत व चुग़ली भी मना है

इस्लाम ने त़ानो तश्नीअ़, ऐ़बजोई, बोहतान और ग़ीबत व चुग़ली जैसे तमाम रवय्यों को सख़्ती से मम्नूअ़ क़रार दिया। इन सब के मना होने की बुन्यादी वजह पर ग़ौर करें तो साफ़ ज़ाहिर है कि ग़ीबत व चुग़ली जैसे तमाम गुनाह सिर्फ़ मुआ़शरती अम्न को ही तबाह नहीं करते बल्कि एक मुसलमान की इ़ज़्ज़ते नफ़्स को भी शदीद मजरूह़ करते हैं। क़ुरआने करीम ने ग़ीबत करने को अपने मुर्दा भाई का गोश्त खाने के मुतरादिफ़ क़रार दिया है।[13] जब कि नबिय्ये करीम صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : لَا يَدْخُلُ الْجَنَّةَ قَتَّاتٌ यानी चुग़लख़ोर जन्नत में हरगिज़ दाख़िल नहीं होगा।[14] ऐसी सख़्त वई़दों से साफ़ ज़ाहिर है कि इस्लाम इन्सान की इ़ज़्ज़त, शोहरत और समाजी वक़ार को नुक़्सान पहुंचाने वाले हर अ़मल से मना करता है। ह़क़ीक़त येह है कि जहां ग़ीबत और चुग़ली का रिवाज हो वहां एतिमाद ख़त्म, रिश्ते कमज़ोर और दिल नफ़रतों से भर जाते हैं, जब कि इन से इज्तिनाब करने वाला मुआ़शरा एह़तिराम, उख़ुव्वत और बाहमी एतिमाद का गहवारा बन जाता है। इन तमाम तालीमात से वाज़ेह है कि इस्लाम का तसव्वुरे इ़ज़्ज़ते नफ़्स एक मुकम्मल ज़ाबित़ए ह़यात है। इस्लाम ने इन्सान की इ़ज़्ज़त को शरई़ ह़क़ क़रार दिया है। इसी लिए ज़बान, निगाह, मआ़श, ख़ानदान, अ़दालत और रियासत हर शोबे में ऐसे उसूल बनाए जिन का मक़्सद इन्सान को बावक़ार ज़िन्दगी अ़त़ा करना है। सोशल मीडिया के इस दौर में चन्द ही लम्ह़ों में किसी की भी किरदार कुशी, मज़ाक़, मीम्ज़, झूटे इल्ज़ामात और बे बुन्याद ख़बरें उड़ा कर इ़ज़्ज़ते नफ़्स मजरूह़ कर दी जाती है। इस्लाम की तालीमात हमें याद दिलाती हैं कि मोबाइल की स्क्रीन के पीछे बैठ कर भी किसी मुसलमान की इ़ज़्ज़त पर ह़म्ला करना उतना ही संगीन जुर्म है जितना उस के रूबरू बैठ कर बे आबरू करना। अगर आज इस्लाम की इन तालीमात को इन्फ़िरादी और इज्तिमाई़ ज़िन्दगी में नाफ़िज़ कर लिया जाए तो नफ़रतों की जगह मह़ब्बत, तह़क़ीर की जगह एह़तिराम और इन्तिशार की जगह उख़ुव्वत का दौर दौरा हो सकता है।

---

(1)ترمذی،3/372،حدیث:1934(2)پ21، الروم:47(3)الترغیب والترہیب، 3/408،حدیث:4371(4)ابوداؤد، 4/354،حدیث:4883 (5) معجم اوسط، 1/287، حدیث:1012(6)الاحسان بترتیب صحیح ابن حبان، 7/193، حدیث: 4860(7) تفسیرِ نعیمی، 10/254ملخصاً(8)پ26، الحجرات:11(9)روح المعانی، الحجرات، تحت الآیۃ:11، 13/424(10)جہنم کے خطرات، ص173(11)مصنف ابن ابی شیبہ، 5/231، حدیث:25546(12)ابوداؤد، 4/354، حدیث:4880 (13)پ26، الحجرات:12(14)بخاری، 4/115، حدیث:6056۔

नाकामी

नाकामी (Failure) ऐसा लफ़्ज़ है जिस का बोलना या सुनना भी अच्छा नहीं लगता, अगर हमारे सामने कोई शख़्स अपने किसी मन्सूबे या हदफ़ का ज़िक्र करे और हम उस से कह दें कि तुम इस में नाकाम हो जाओगे तो उस का मुंह उतर जाएगा। फ़ी ज़माना हर दूसरा शख़्स बिलख़ुसूस नौजवान अपनी नाकामियों का रोना रोता दिखाई देता है कि जनाब मैं ने इतनी कोशिश की फ़ुलां इम्तिहान पास करने की मगर नाकाम रहा, मेरे पास फ़ुलां फ़ुलां डिग्री है मगर नौकरी नहीं मिलती, दिन रात मेहनत करता हूं मगर अख़राजात पूरे नहीं होते, अच्छा ओहदा (High Post) पाने में नाकाम रहा अब घर वाले बातें सुनाते हैं मैं क्या करूं ? वग़ैरा वग़ैरा। इस तरह के लोगों की हालत देख कर एक सुवाल क़ाइम होता है कि हम नाकाम क्यूं होते हैं ? हक़ीक़त तो येही है कि कामयाबी या नाकामी देने वाली ज़ात रब तआला की है, हां ! कुछ ज़ाहिरी अस्बाब (Reasons) भी होते हैं कि अगर उन पर तवज्जोह रखी जाए तो नाकामी से काफ़ी हद तक बचा जा सकता है। नाकामी के चन्द अस्बाब येह हैं :

1 मक़्सद (Aim) के तअय्युन में ग़लती, मसलन एक शख़्स की दिलचस्पी कम्प्यूटर साइन्स में है लेकिन वोह डॉक्टर बनने की ठान लेता है तो नाकामी का ज़िम्मेदार वोह ख़ुद है, फिर उन मक़ासिद को भी शरअन देख लेना चाहिए कि अगर वोह ऐसा शोबा अपनाना चाहता है जहां शरीअत की नाफ़रमानी करनी पड़ेगी मसलन झूट, धोका और रिश्वत का चलन होगा तो ऐसे शोबे को अपना हदफ़ बनाने वाला नादान है।

2 मक़्सद (Aim) के हुसूल के तरीक़एकार में ख़ामी होना मसलन अगर कई शख़्स गाड़ियों का मिकैनिक बनना चाहता है तो उसे सीखने के लिए किसी माहिर के पास जाए अगर वोह शुरूअ़ में ही अपनी वर्कशॉप खोल कर लोगों की गाड़ियों पर तजरिबात शुरूअ़ कर देगा तो शायद लेने के देने पड़ जाएं।

3 ना तजरिबा कार होने के बावुजूद तजरिबाकार लोगों से मश्वरा न करना, हाफ़िज़े मिल्लत हज़रते अ़ल्लामा अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ मुहद्दिस मुबारकपुरी رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه की नसीहत का लुब्बे लुबाब है कि ख़ुद तजरिबे कर के ठोकर खाने के बजाए तजरिबाकारों से मश्वरा कर लेना चाहिए इस से वक़्त बचेगा।

4 इस्तिक़ामत (Steadfastness) का न होना भी नाकाम करवा देता है, रास्ता कितना ही कठिन हो इस्तिक़ामत का वस्फ़ अपना कर पार किया जा सकता है, पानी के क़तरे को देख लीजिए कि अगर मुसल्सल किसी पत्थर पर टपकता रहे तो उस में भी कुछ न कुछ सूराख़ कर देता है।

5 वक़्त ज़ाएअ़ करने वाला अगर नाकामी का सामना करे तो उसे हैरान नहीं होना चाहिए, चीता बहुत तेज़ रफ़्तार जानवर है जो सिर्फ़ तीन छलांगों (Jumps) में तक़रीबन 150 किलो मीटर फ़ी घन्टे की स्पीड हासिल कर लेता है लेकिन माहिरीन के मुताबिक़ वोह इस स्पीड को सिर्फ़ 70 सेकन्ड बरक़रार रख सकता है वरना उस का पेट फट जाए, वोह अपने उन 70 सेकन्ड को ज़ाएअ़ नहीं होने देता और इसी दौरान ही शिकार पर क़ाबू पाने की पहले ही से मन्सूबा बन्दी कर लेता है, चुनान्चे किसी जानवर का उस के हम्ले से बच निकलना बहुत मुश्किल होता है।

6 मिज़ाज (Mood) मूड के तहत चलना भी नाकामी की एक वजह हो सकता है, जब जी चाहा काम कर लिया, जब चाहा आराम कर लिया कामयाब लोगों का तरीक़एकार नहीं चुनान्चे मूड नहीं बल्कि उसूल के तहत काम करना चाहिए।

7 बहुत ज़ियादा तवक़्क़ोआ़त (Expectations) वाबस्ता कर लेने वाले जब अपनी ख़्वाहिशात को पूरा होते नहीं देखते तो एलान कर देते हैं कि जनाब हम नाकाम रहे, बकरे से घोड़े का काम ख़्वाब में तो लिया जा सकता है बेदारी में नहीं।

8 कभी कभार कामयाबी के रास्ते में वक़्ती नाकामी का सामना भी होता है इस मक़ाम पर कई लोग हौसला हार बैठते हैं कि हम कामयाब नहीं हो सकते, ग़ौर करना चाहिए कि हमारे इर्द गिर्द वोह लोग जिन्हें हम कामयाब समझते हैं क्या उन्हें कभी नाकामी का सामना नहीं हुवा !

9 काम करने से होता है सिर्फ़ सोचने से नहीं, कई लोग बड़े बड़े अहदाफ़ मुक़र्रर करने के बाद सोचते ही रह जाते हैं करते कुछ नहीं, ऐसों को कामयाबी मिल जाए तो हैरान कुन बात है।

10 तवील मशक़्क़त से घबरा जाना, बाज़ अवक़ात कामयाबी और नाकामी के दरमियान एक क़दम का फ़ासिला होता है लेकिन बाज़ नादान क़दम बढ़ाने के बजाए वापस चलना शुरूअ़ कर देते हैं और कामयाबी को ख़ुद अपने हाथों से दफ़्ना देते हैं।

11 दूसरों के साथ मिल कर काम करने में उन के मिज़ाज का समझना और उस के मुताबिक़ उन से काम लेना देना बहुत ज़रूरी है। इ़ज़्ज़त, हौसला अफ़ज़ाई किसे अच्छी नहीं लगती अगर दूसरों से काम लेते वक़्त हुक्म नहीं दरख़्वास्त का त़रीक़ा अपनाया जाए तो वोह शख़्स आप का काम ज़ौक़ो शौक़ से करेगा और अगर आप बात बात पर उसे ज़लील करेंगे फिर हुक्मन कोई काम कहेंगे तो सिर्फ़ अपने आप को बचाने के लिए काम करेगा जो शायद मेयारी न हो, येह बहुत अहम बात है लेकिन मिज़ाज शनासी के फ़ुक़्दान की वजह से कई लोग दूसरों के साथ मिल कर काम करने में नाकाम हो जाते हैं।

12 मुख़्लिस लोगों की क़द्र न करना भी नाकामी की एक वजह है।

13 ग़लती की निशानदही करने वाले से नाराज़ हो जाने वाला अपने ऊपर इस्लाह़ का दरवाज़ा गोया बन्द कर लेता है, अब वोह खाई में भी छलांग लगाएगा तो शायद ही कोई उस को रोकने वाला हो।

14 जिसे कोई काम करना हो उसे उस काम की फ़िक्र होती है लेकिन ह़द से बढ़ी हुई फ़िक्रमन्दी (Tension) से बाज़ अवक़ात काम बिगड़ भी जाता है जैसे किसी का दूध पीता बच्चा पलंग से नीचे जा गिरे, उसे उठाने के लिए पलंग हटाना पड़ेगा तो अगर येह शख़्स बद ह़वास हो कर पलंग को इस त़रह़ खींचे कि बच्चा ज़ख़्मी हो जाए तो येह नुक़्सान देह है, कैसी ही एमरजन्सी (Emergency) क्यूं न हो ह़वास पर क़ाबू रखना बेह़द ज़रूरी है।

15 ज़रूरत से ज़ियादा काम अपने ज़िम्मे ले लेना भी नाकाम करवा देता है, गधा जिसे बेवुक़ूफ़ जानवर समझा जाता है इस पर भी अगर ज़ियादा वज़्न रख दिया जाए तो बाज़ अवक़ात चलने के बजाए बैठ जाता है तो इन्सान के बारे में क्या ख़याल है !

16 अपनी ग़लतियों (Mistakes) को तस्लीम करने वाला आइन्दा उन से बच सकता है लेकिन जो अपनी ग़लतियों का ज़िम्मेदार दूसरों को क़रार देना शुरूअ़ कर दे उस का ग़लतियों से बचना बहुत दुश्वार हो जाता है।

17 बाज़ नौजवान, अच्छे ओ़हदा (High Post) के इन्तिज़ार में ख़ाली हाथ बैठे रहते हैं, मुतबादिल नौकरी या कारोबार नहीं करते जब उन की उ़म्र ढलने लगती है तो मायूसियों के साए भी दराज़ होना शुरूअ़ हो जाते हैं, फिर वोह अपनी नाकामियों का रोना रोते दिखाई देते हैं।

18 अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने इन्सान को जो सलाहिय्यतें अ़ता फ़रमाई हैं, उन पर एतिमाद होना बहुत ज़रूरी है, लेकिन बाज़ों को हर काम करते वक़्त धड़का लगा रहता है कि न जाने येह काम मैं कर भी पाऊंगा या नहीं ! यूं वोह घबराहट में नाकाम हो जाते हैं, नज़र अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रह़मत पर हो, उसी की अ़ता कर्दा सलाहिय्यतों पर एतिमाद हो तो कामयाबी ख़ुद आगे बढ़ कर क़दम चूम लिया करती है।

19 बाज़ लोग वसाइल (Resources) की कमी का रोना रोते रहते हैं, अगर दस्तयाब वसाइल को दानाई से इस्तिमाल करें तो वसाइल में इज़ाफ़ा भी हो जाता है और कामयाबी का सफ़र भी शुरूअ़ हो जाता है, अगर कोई येही ख़्वाब देखता रहे कि कहीं से मेरे पास करोड़ों रुपै आ जाएं तो मैं एक फ़ैक्ट्री बनाऊंगा तो उसे चाहिए कि अपने पास मौजूद रक़्म से छोटा सा कारोबार शुरूअ़ कर दे, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने चाहा तो तरक़्क़ी करते करते एक दिन फ़ैक्ट्री का मालिक भी बन सकता है, एक नौजवान एक सेठ के पास पहुंचा कि मैं आप जैसा बड़ा कारोबारी बनना चाहता हूं तो उस ने कहा कि फ़ुटपाथ पर बिस्किट और बच्चों की टॉफ़ियों की ट्रे ले कर बैठ जाओ और उन्हें बेचो, क्यूंकि मैं ने भी अपना सफ़र फ़ुटपाथ से शुरूअ़ किया था।

नौजवान इस्लामी भाइयो ! नाकामियों के येह 19 अस्बाब मुख़्तसर त़ौर पर ज़िक्र किए हैं, आप ख़ुद को सामने रख कर ग़ौर करें तो कई अस्बाब सामने आ सकते हैं, उन अस्बाब को दूर कर के कामयाबी मुम्किन है लेकिन याद रहे कोशिश करना हमारा काम है और कामयाबी देने वाली ज़ात रब عَزَّوَجَلَّ की है।

किरदार की अ़ज़मत

अ़रब के कुछ डाकू क़ाफ़िलों और मुसाफ़िरों को लूटने में बहुत मश्हूर थे। येह लोग किसी जंगल या बाग़ की आड़ में छुप कर बैठ जाते और राह गुज़रते लोगों को लूटते और क़त्लो ग़ारत करते।

एक मरतबा औ़रतों, मर्दों, बुज़ुर्गों और बच्चों पर मुश्तमिल एक क़ाफ़िला अ़रब के किसी अ़लाक़े से गुज़र रहा था, जहां डाकू पहले से उन के लिए घात लगाए बैठे थे। जैसे ही येह क़ाफ़िला क़रीब पहुंचा तो डाकूओं ने इन पर ह़म्ला कर दिया और बेशतर क़ीमती साज़ो सामान लूटने के बाद जाते जाते क़ाफ़िले वालों की त़रफ़ से मुज़ाह़मत करने की पादाश में उन के दो निहत्ते लोगों को भी क़त्ल कर दिया, बाद अज़ां तल्वारें लहराते फ़त्ह़ का जश्न मनाते फ़रार हो गए। ग़रीब क़ाफ़िले के लोग अपने प्यारों की मौत का दुख मनाते अपने क़ाफ़िला सालार के साथ आगे बढ़ते गए, लेकिन किसी ने उन की दादरसी न की और न ही उन के ह़क़ में किसी ने आवाज़ उठाई। कुछ दिनों की मसाफ़त त़ै करने के बाद जब येह क़ाफ़िला रात गुज़ारने के लिए एक सह़रा में ठहरा। क़ाफ़िले की औ़रतें खाना पकाने का सामान करने लगीं और मर्द ह़ज़रात आग जलाने के लिए इर्द गिर्द से लकड़ियों क बन्दोबस्त करने लगे। रात का वक़्त था और आग की रौशनी दूर से बड़ी आसानी से देखी जा सकती थी। कुछ राह भटके हुए भूके घुड़ सुवारों ने आग जलती देखी तो उस त़रफ़ आ निकले, येह घुड़ सुवार वोही डाकू थे जिन्हों ने इस क़ाफ़िले को पहले लूटा और फिर उन के दो अफ़राद को क़त्ल कर दिया था। येह निक़ाब पोश डाकू क़ाफ़िला सालार के पास गए और बोले कि हम राह भटक गए हैं, और बहुत भूके भी हैं, अगर कुछ खाने को मिल जाए और कुछ देर आराम करने के लिए मुनासिब जगह मिल जाए तो बहुत नवाज़िश होगी। सालारे क़ाफ़िला ने फ़ौरन अपने लोगों को हुक्म दिया कि जल्दी जल्दी मेहमानों की ख़ात़िर तवाज़ोअ़ की जाए और इस सिल्सिले में किसी क़िस्म की ग़फ़लत न हो क्यूंकि मेहमान अल्लाह की रह़मत से आते हैं। जब येह डाकू अच्छी त़रह़ से खाना खा चुके और अपनी थकावट भी दूर कर चुके तो जाते जाते एक डाकू सालारे क़ाफ़िला से बोला : यक़ीनन अगर हमारे चेहरों पर निक़ाब न होते और आप हमें पहचान लेते तो कभी हमारी इतनी ख़ात़िर मदारत न करते, क्यूंकि आप जानते नहीं कि हम कौन हैं? सालारे क़ाफ़िला ने मुस्कुराते हुए कहा : बरख़ुरदार ! बेशक तुम लोगों ने अपने चेहरों को निक़ाब से ढांप रखा है और रात का अन्धेरा भी है। लेकिन मैं

तुम्हारे निक़ाबों के अन्दर छुपे हुए चेहरों को भला कैसे भुला सकता हूं ? तुम सब वोही लोग हो जिन्हों ने पहले हमें लूटा था और फिर हमारे दो अफ़राद को क़त्ल किया था जिन में से एक तो मेरा अपना सगा भाई था। सालारे क़ाफ़िला की बात सुन कर वोह डाकू चौंक गए और बोले : तो फिर सब कुछ जानने के बाद भी आप ने हमारे साथ इतना अच्छा सुलूक क्यूं किया ? सालारे क़ाफ़िला बोला : येह तो अपने अपने नसीब की बात है। उस दिन हम लोग आप के मेहमान थे, जो आप से हो सका आप ने हमारे साथ किया, लेकिन आज आप लोग हमारे मेहमान हो, जो हम से हो सका वोह हम ने किया, अल्लाह तो सब देख रहा है वोही इस का अज्र देगा।

वाक़िए से हासिल होने वाले अहम निकात

किरदार की बुलन्दी येह है कि इन्सान क़ुदरत रखने के बावुजूद बदला न ले और अ़फ़्वो दरगुज़र और एहसान का रास्ता इख़्तियार करे। अफ़ज़ल येह है कि शर का जवाब ख़ैर से दिया जाए, येही वोह रवय्या है जो दुश्मनों के दिलों को मोम कर देता है और मुआ़शरे से नफ़रतों का ख़ातिमा करता है।

सालारे क़ाफ़िला का येह जुम्ला "अल्लाह तो सब देख रहा है वोही इस का अज्र देगा" हमें सिखाता है कि मोमिन का कोई भी अ़मल दुनियावी मफ़ाद, तारीफ़ या बदले के लिए नहीं होता। जब हमारा मक़्सद सिर्फ़ और सिर्फ़ अल्लाह पाक की रिज़ा हासिल करना हो, तो फिर सामने वाला चाहे जितना भी बुरा हो, हमें अपने अच्छे अख़्लाक़ का दामन हाथ से नहीं छोड़ना चाहिए और हमारी नज़र बन्दे के रवय्ये पर नहीं बल्कि ख़ालिक़ के अज्र पर होनी चाहिए।

हम अपनी रोज़ मर्रा की ज़िन्दगी को देखें तो जहां जहां हमारा किरदार अच्छा होगा वोह मुआ़मलात हमारे ब हुस्नो ख़ूबी चल रहे होंगे, येही वजह है कि अच्छा किरदार घर को अम्न का गहवारा बना देता है, मुआ़शरे में हमारी शख़्सिय्यत को मुस्तनद और बा वक़ार बना देता है।

इन्सान की अस्ल पहचान उस की कही गई बातें नहीं बल्कि उस का किरदार होता है, हमारे अन्दर कितना सब्र है उस का पता उसी वक़्त चलेगा जब हम पर कोई मुसीबत आएगी। इसी त़रह हमारे अन्दर नर्मी कितनी है इस बात का अन्दाज़ा उसी वक़्त होगा जब कोई हमारे मिज़ाज के ख़िलाफ़ हम से बरताव करेगा या हमें नुक़्सान पहुंचाएगा।

मुबल्लिग़ीने दावते इस्लामी इस बात को लाज़िमन पेशे नज़र रखें कि आप का किरदार सब से ज़ियादा मुअस्सिर मुबल्लिग़ है, लोग आप के अलफ़ाज़ से ज़ियादा आप के किरदार को देखते हैं, वोह आप के किरदार से मुतअस्सिर हो कर दावते इस्लामी और दीने इस्लाम से वाबस्ता होंगे लेकिन ऐसा तभी होगा जब आप के किरदार में उन्हें हुस्ने अख़्लाक़, सच्चाई, दियानत, अ़द्ल और तहम्मुल मिज़ाजी जैसे आला अवसाफ़ नज़र आएंगे, ब सूरते दीगर आप के अलफ़ाज़ फ़क़त सदा ब सहरा होंगे।

हफ़्तावार रसाइल की कारकर्दगी (जून 2026 ई)

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुहम्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ हर हफ़्ते एक मदनी रिसाला पढ़ने/सुनने की तरग़ीब दिलाते और पढ़ने/सुनने वालों को दुआ़ओं से नवाज़ते हैं। जून 2026 ई में दिए गए 4 मदनी रसाइल के नाम और उन की कारकर्दगी पढ़िए : (1) मिन्हाजुल आ़बिदीन से 38 मदनी फूल (क़िस्त : 01) : 14 लाख, 55 हज़ार 474 (2) ज़िक्रुल्लाह के वाक़िआत : 14 लाख, 73 हज़ार 89 (3) चार बुराइयां : 14 लाख, 86 हज़ार 872 (4) फ़ज़ाइले अहले बैत : 12 लाख, 89 हज़ार 373 ।

ग़ौसे आज़म رَحْمَةُ اللّٰه عَلَيْه की नसीहतें

तसव्वुफ़ व त़रीक़त के बाब में ग़ौसे आज़म, हुज़ूर सय्यिदुना शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه का मक़ाम एक ऐसे आफ़ताब की मानिन्द है जिस की रौशनी आज भी दिलों को मुनव्वर कर रही है। **"मुह़युद्दीन"**, **"मह़बूबे सुब्ह़ानी"** और **"ग़ौसे आज़म"** जैसे अलक़ाब आप की उस रूह़ानी अ़ज़मत का पता देते हैं जो इल्मे ज़ाहिर और इल्मे बात़िन, दोनों में कामिल जामेइ़य्यत रखती है।

ज़ेरे नज़र मज़्मून में सरदारे औलिया, हुज़ूर ग़ौसे आज़म رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه के चन्द मुन्तख़ब फ़रामीन पेश किए जा रहे हैं, जो दुनिया की ह़क़ीक़त, रिज़ाए इलाही, इस्लाहे बात़िन, सच्चाई, तक़्वा और इख़्लास जैसे बुन्यादी मौज़ूआ़त का इह़ात़ा करते हैं। आइए ! उन सुनहरी नसीह़तों की रौशनी में अपने नफ़्स का एह़तिसाब करते हैं :

1 दुनिया और आज़माइश

ऐ लोगो ! सब्र से काम लो, दुनिया की ज़िन्दगी आफ़तों और मुसीबतों से भी भरी पड़ी है। कोई बच सका तो बहुत ही कम, दुनिया की कोई नेमत ऐसी नहीं कि जिस के साथ मुसीबत और ग़म न हो, कोई ख़ुशी ऐसी नहीं कि जिस के साथ रंज न हो और कोई फ़राख़ी ऐसी नहीं कि जिस के साथ तंगी न हो। शरीअ़त के दाइरे में दुनिया से अपने मुक़द्दर का लिखा लेते रहो, यक़ीनी बात तो येह है कि दुनिया की लज़्ज़तों से जो मरज़ लाह़िक़ हो, शरीअ़त ही उस का इ़लाज है।[1]

इस फ़रमान में हुज़ूर ग़ौसे आज़म ने दुनिया की ह़क़ीक़त बे निक़ाब कर दी है कि यहां कोई नेमत मुसीबत से ख़ाली नहीं। साथ ही इ़लाज भी तज्वीज़ फ़रमा दिया कि इन्सान शरीअ़त के दाइरे में रह कर अपना मुक़द्दर त़लब करे, क्यूंकि दुनिया की मह़ब्बत से पैदा होने वाले अमराज़े क़ल्ब का वाह़िद इ़लाज शरीअ़ते मुत़ह्हरा ही है।

2 रिज़ाए इलाही

जो शख़्स रिज़ाए इलाही में राज़ी न हो, उस की हमनवाई नहीं होती, न ही तौफ़ीक़ दी जाती है, जो क़ज़ाए इलाही में राज़ी नहीं अल्लाह भी उस से राज़ी नहीं, जो ख़ुद नहीं देता, उसे भी नहीं दिया जाता, जो किसी से नहीं मिलता, कोई उस के पास भी चल के न आएगा।[2]

येह फ़रमान एक बाहमी तअ़ल्लुक़ की तस्वीर खींचता है, इन्सान का अल्लाह और उस की मख़्लूक़ के साथ जैसा रवय्या होगा, उसे वैसा ही बदला मिलेगा। रिज़ा, सख़ावत और तअ़ल्लुक़ क़ाइम रखने से ही अल्लाह की रिज़ा, तौफ़ीक़ और लोगों की मह़ब्बत ह़ासिल होती है।

3 बात़िन की इस्लाह़

ईमान वाला पहले अपने बात़िन को आबाद करता है, फिर ज़ाहिर को, जैसे कोई शख़्स घर बनाता है तो पहले उस के अन्दर वाले हिस्से पर बड़ी रक़म ख़र्च करता है मगर उस का दरवाज़ा ख़राब ही होता है, जब घर की अन्दरूनी तामीर मुकम्मल हो जाती है तब दरवाज़ा बनाता है। इसी त़रह़ से सालिक अल्लाह के साथ इब्तिदा करे और उस की रिज़ा त़लब करे, फिर उस के हुक्म से ख़ल्क़त की त़रफ़ तवज्जोह करे।[3]

इस फ़रमान में सालिक को तामीरे ज़िन्दगी की तरतीब सिखाई गई है कि पहले बातिन की आबादकारी, फिर ज़ाहिर की ज़ीनत। यानी पहले अल्लाह से तअल्लुक़ मज़बूत करे और उस की रिज़ा का तालिब हो, फिर उसी के हुक्म से मख़्लूक़ की तरफ़ मुतवज्जेह हो।

4 दुनिया के बदले आख़िरत

तुम पर अफ़सोस है कि दुनिया के बदले तुम आख़िरत को कैसे ख़राब करते हो, अपने नफ़्स और ख़्वाहिश और शैतान और ख़ल्क़त की इताअत कर के अपने मालिक की ताबेअदारी कैसे फ़ासिद करते हो, उस के ग़ैर से शिक्वा व शिकायत कर के अपने तक़्वा को क्यूं ज़ाएअ करते हो, क्या तुम्हें नहीं मालूम कि अल्लाह तआला परहेज़गारों का हाफ़िज़ो नासिर है, उन से बदी को रोकने वाला है, उन को इल्म की दौलत देने वाला है, उन्हें अपनी मारिफ़त इनायत करने वाला है, उन्हें तक्लीफ़ देह चीज़ों से नजात अता करने वाला है, उन्हें ऐसी जगह से रिज़्क़ पहुंचाने वाला है, जहां से उन्हें गुमान भी नहीं।[4]

इस फ़रमान में इन्सान की इस बुन्यादी ग़लती की निशानदही की गई है कि वोह फ़ानी दुनिया के इवज़ आख़िरत को तबाह कर लेता है। साथ ही मुत्तक़ीन के लिए अल्लाह तआला की ख़ुसूसी हिफ़ाज़त, रिज़्क़, इल्म और नजात की बिशारत दे कर तक़्वा इख़्तियार करने की तरग़ीब दी गई है।

5 औरों को नसीहत ख़ुद रा फ़ज़ीहत

तेरे पर अफ़सोस है कि तू क़ुरआन हिफ़्ज़ करता है मगर उस पर अमल नहीं करता, रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की अहादीस याद करता है मगर उन पर अमल नहीं करता, तू येह क्या कर रहा है ? लोगों को करने के लिए कहता है मगर ख़ुद वोह नहीं करता ! दूसरों को रोकता है और ख़ुद उस से नहीं रुकता।[5]

येह फ़रमान उस मुनाफ़िक़ाना रविश पर कारी ज़र्ब है जिस में इन्सान क़ुरआनो हदीस का इल्म तो रखता है, दूसरों को नेकी की तल्क़ीन भी करता है मगर ख़ुद उस पर अमल पैरा नहीं होता। अस्ल कामयाबी सिर्फ़ इल्म हासिल करने या नसीहत करने में नहीं, बल्कि उस इल्म पर ख़ुद अमल करने और अपने किरदार को संवारने में है कि अमल के बग़ैर इल्म महज़ हुज्जत बन जाता है।

6 मुत्तक़ी और मुनाफ़िक़ का अमल

मुत्तक़ी अल्लाह की इबादत बिला तकल्लुफ़ करता है, क्यूंकि इबादत तो उस की आदत बन गई है, वोह अपने ज़ाहिर और बातिन दोनों से अल्लाह की बन्दगी बिला तकल्लुफ़ करता है, जब कि मुनाफ़िक़ हर हाल में तकल्लुफ़ करता है, ख़ास तौर से अल्लाह की इबादत ज़ाहिरी तौर पर तकल्लुफ़ से अदा करता है, बातिनी तौर पर इबादत का तर्क करने वाला है।[6]

इस फ़रमाने मुबारका में रियाकारी और इख़्लास के दरमियान फ़र्क़ करने वाली लकीर को बयान किया गया है कि मुत्तक़ी की इबादत उस की आदत बन चुकी होती है, इस लिए वोह बिला तकल्लुफ़ अल्लाह की इबादत करता है जब कि मुनाफ़िक़ की इबादत महज़ ज़ाहिरी दिखावा होती है और बातिन में वोह उस से ख़ाली रहता है।

7 सच बोलो, फ़लाह पाओ

ऐ अल्लाह के बन्दो ! सच बोलो और फ़लाह पाओ, सच्चे की हिम्मत आस्मान से बुलन्द है, किसी की बात उसे नुक़्सान नहीं देती अल्लाह अपने अम्र पर ग़ालिब है, जब तुझ से किसी काम का इरादा करेगा तो उस के लिए तुझे तय्यार कर देगा।[7]

इस फ़रमान में सच्चाई को फ़लाह की ज़मानत क़रार दिया गया है। सच्चे इन्सान की हिम्मत इतनी बुलन्द होती है कि लोगों की बातें उसे मुतज़लज़ल नहीं करतीं, क्यूंकि वोह अल्लाह की नुसरत पर भरोसा रखता है, और अल्लाह तआला अपने सच्चे बन्दे को हर काम के लिए ख़ुद तय्यार फ़रमा देता है।

8 आलिम और ज़ाहिद कौन ?

अगर तेरे पास इल्म का फल और बरकत होती तो अपने नफ़्स की ख़्वाहिशात और लज़्ज़ात के लिए बादशाहों के दरवाज़ों पर मारा मारा न फिरता, आलिम के पास वोह पैर ही नहीं होते जिन से वोह मख़्लूक़ के दरवाज़ों की तरफ़ दौड़े और ज़ाहिद के पास वोह दो हाथ ही नहीं होते जिन से वोह लोगों के माल ले।[8]

इस फ़रमान में हुज़ूर ग़ौसे आज़म عَلَیْہِ الرَّحْمَۃ ने ह़क़ीक़ी आ़लिम और ज़ाहिद की पहचान बयान फ़रमाई है कि ह़क़ीक़ी आ़लिम वोह है जो दुनियादारों के दरवाज़ों का रुख़ न करे और ह़क़ीक़ी ज़ाहिद वोह है जो लोगों के माल पर नज़र न रखे।

9 फ़ुज़ूलिय्यात से परहेज़

जिस का इस्लाम सह़ीह़ और साबित हो जाए वोह फ़ायदे की चीज़ों पर राग़िब हो जाता है और बेफ़ायदा चीज़ों से मुंह मोड़ लेता है, बेफ़ायदा कामों में लगना बेकार और मरीज़ों का काम है, वोह अपने रब की रिज़ा से मह़रूम है जो उस के हुक्म पर अ़मल न करे और वोह काम करे जिस से उसे मना किया गया है, येही अस्ल मह़रूमी, अस्ली मौत और हर त़रह़ का नुक़्सान है, दुनिया में तेरे मश्ग़ूल होने के लिए नेक निय्यती की ज़रूरत है, वरना तू अल्लाह के ग़ज़ब का शिकार हो जाएगा।[9]

इस मुबारक फ़रमान में सेह़ते ईमान को बयान किया गया है कि कामिल और सच्चा मुसलमान वोह है जो ला ह़ासिल और फ़ुज़ूल कामों को तर्क कर के अल्लाह तआ़ला की इत़ाअ़त इख़्तियार करता है। मज़ीद येह कि इन्सान के दुनियवी काम भी अगर नेक निय्यती से ख़ाली हों तो वोह अल्लाह की नाराज़ी और ग़ज़ब का बाइ़स बन जाते हैं।

अल्लाह पाक हमें पीराने पीर, हुज़ूर सय्यिदुना ग़ौसे आज़म رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ की इन नसीह़तों पर अ़मल की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए।

اٰمِیْن بِجَاہِ خَاتَمِ النَّبِیّٖن صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

---

(1) فتح الربانی، المجلس السابع، ص40 (2) فتح الربانی، المجلس السابع، ص41 (3) فتح الربانی، المجلس الثامن، ص43 (4) فتح الربانی، المجلس التاسع، ص44 (5) فتح الربانی، المجلس العاشر، ص45 (6) فتح الربانی، المجلس العاشر، ص45 (7) فتح الربانی، المجلس التاسع والخمسون، ص196 (8) فتح الربانی، المجلس التاسع والخمسون، ص196 (9) فتح الربانی، المجلس الستون، ص201۔

अह़कामे तिजारत

1 उधार बेचे हुए माल की रक़म वक़्त से पहले त़लब करना कैसा ?

सुवाल : क्या फ़रमाते हैं उ़लमाए किराम इस मस्अले के बारे में कि मैं ने अपने एक दोस्त को छे माह के उधार पर कुछ सामान फ़रोख़्त किया था लेकिन अभी चार माह ही गुज़रे हैं कि मुझे पैसों की ज़रूरत पड़ गई, तो क्या मैं उस से उधार रक़म का फ़ौरी मुत़ालबा कर सकता हूं ?

जवाब : सूरते मस्ऊला में जब आप ने समन (Price) की अदाएगी के लिए अपने दोस्त को मुअ़य्यन मुद्दत यानी छे माह की मोहलत दी और उस ने भी इस मोहलत को क़बूल कर लिया, तो येह दैन (वाजिबुल अदा रक़म) "**मीआ़दी**" हो गया। अब उस मीआ़द के मुकम्मल होने से पहले आप अपनी उधार रक़म का मुत़ालबा नहीं कर सकते, कि फ़ुक़हाए किराम की सराह़त के मुत़ाबिक़ जब किसी दैन के लिए बाहमी रिज़ामन्दी से कोई मुद्दत तै कर ली जाए तो वोह मुद्दत लाज़िम हो जाती है। इस के बाद दाइन (जिस का दैन है) को येह ह़क़ ह़ासिल नहीं रहता कि मुक़र्ररा मुद्दत पूरी होने से पहले दैन की अदाएगी का मुत़ालबा करे, क्यूंकि येह मोहलत मदयून (जिस के ज़िम्मे दैन लाज़िम है उस) का ह़क़ बन चुकी होती है, और मदयून का ह़क़ कोई दूसरा साक़ित नहीं कर सकता। अलबत्ता सामने वाला राज़ी हो तो वोह रक़म पहले दे सकता है।

बहारे शरीअ़त में है : बाएअ़ ने अगर अ़क़्दे बैअ़ के बाद मुश्तरी को अदाए समन के लिए मोहलत दी यानी उस के लिए मीआ़द मुक़र्रर कर दी और मुश्तरी ने भी क़बूल कर ली तो येह दैन मीआ़दी हो गया यानी बाएअ़ पर वोह मीआ़द लाज़िम हो गई उस से क़ब्ल मुत़ालबा नहीं कर सकता। हर दैन का येही हुक्म है कि मीआ़दी न हो और बाद में मीआ़द मुक़र्रर हो जाए तो मीआ़दी हो जाता है मगर मदयून का क़बूल करना शर्त़ है अगर उस ने इन्कार कर दिया तो मीआ़दी नहीं होगा फ़ौरन उस का अदा करना वाजिब होगा और दाइन जब चाहेगा मुत़ालबा कर सकेगा। (बहारे शरीअ़त, 2/752)

وَاللّٰهُ اَعْلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَرَسُوْلُهٗ اَعْلَم صلَّی اللّٰہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

2 कोटेशन पास करवाने के लिए मैनेजर को कमीशन देना कैसा ?

सुवाल : क्या फ़रमाते हैं उ़लमाए किराम इस मस्अले के बारे में कि मैं एसी डक की सर्विस का काम करता हूं, चन्द इदारे होते हैं जिन्हों ने काम करवाना होता है वोह हम से कोटेशन मांगते हैं जिस में सर्विस वग़ैरा चार्जिज़ और मुकम्मल तफ़्सील होती है कि हम येह काम इतने रुपों में कर के देंगे, मेरी त़रह़ दीगर और लोग भी कोटेशन देते हैं। इदारे के मैनेजर वग़ैरा कहते हैं कि हम आप की कोटेशन ओके कर देंगे, लेकिन काम करने के बाद आप को इदारा जो काम

की रक़म देगा उस में से हम कमीशन लेंगे। अगर हम कमीशन देने पर रिज़ामन्द न हों तो वोह किसी और की कोटेशन ओके कर देगा। तो क्या हम कोटेशन ओके करवाने के लिए उस शर्त को मान सकते हैं या नहीं ? और उस शर्त पर हम काम ले कर मैनेजर को कमीशन दे सकते हैं या नहीं ?

जवाब : पूछी गई सूरत में आप का कोटेशन पास करवाने के लिए मैनेजर को पैसे देना और मैनेजर का येह पैसे लेना रिश्वत है, इस की वजह येह है कि अपना काम निकलवाने के लिए किसी को पैसे देना रिश्वत कहलाता है, इसी तरह जो काम अपने मन्सब की वज्ह से पहले से करना लाज़िम हो उस काम के पैसे लेना भी रिश्वत के ज़ुमरे में आता है और रिश्वत का लेन देन नाजाइज़ो हराम है। लिहाज़ा इस से बचना लाज़िम है।

तिरमिज़ी शरीफ़ में है: "لعن رسول الله صلّى الله عليه وسلّم الراشی والمرتشی" यानी रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने रिश्वत देने और लेने वाले पर लानत फ़रमाई। (ترمذی، 3/614)

शामी में है: "الرشوة بالكسر ما يعطيه الشخص الحاكم وغيره ليحكم له او يحمله على ما يريد" यानी रिश्वत वोह है जो कोई शख़्स हाकिम या किसी और को इस लिए दे कि वोह उस के हक़ में फ़ैसला करे या उस की मुराद पर राग़िब हो। (ردالمحتار، 8/34)

इमामे अहले सुन्नत इमाम अहमद रज़ा ख़ान رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं : "रिश्वत लेना मुत्लक़न हराम, किसी हालत में जाइज़ नहीं। जो पराया हक़ दबाने के लिए दिया जाए, रिश्वत है। यूंही जो अपना काम निकलवाने के लिये हाकिम को दिया जाए रिश्वत है।" (फ़तावा रज़विय्या, 23/597)

وَاللہُ اَعْلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَرَسُوْلُہٗ اَعْلَم صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

3 मोटर से निकलने वाला कॉपर ख़ुद रख लेना कैसा ?

सुवाल : क्या फ़रमाते हैं उलमाए किराम इस मस्अले के बारे में कि मेरा मोटर वाइंडिंग का काम है, कॉपर में बनी हुई मोटर जब जल जाती है और मेरे पास बनने के लिए आती है तो उस में से जो पुराना कॉपर निकलता है वोह ज़ियादा मालियत का होता है तो मैं गाहक को बता देता हूं कि इतना कॉपर निकला है जिस की मालियत इतनी है और फिर उस रक़म को मोटर बनाने की मज़्दूरी में एडजस्ट कर लेता हूं, लेकिन जब कोई सिल्वर में बनी हुई मोटर बनने के लिए मेरे पास आती है तो उस में से बहुत कम मालियत का सिल्वर निकलता है तो मैं वोह सिल्वर अपने पास स्क्रेप में रख लेता हूं और गाहक को न वोह सिल्वर देता हूं न उस की क़ीमत को मज़्दूरी में एडजस्ट करता हूं अब सुवाल येह है कि क्या मेरा इस तरह स्क्रेप सिल्वर गाहक को बताए बग़ैर अपने पास रखना दुरुस्त है ?

जवाब : पूछी गई सूरत में आप के लिए मोटर से निकलने वाला पुराना सिल्वर ख़ुद रख लेना जाइज़ नहीं।

वजह इस की येह है कि मज़्कूरा काम में आप की हैसिय्यत अजीर मुश्तरक की है और अजीर मुश्तरक के पास लोगों की चीज़ें अमानत होती हैं, लिहाज़ा मोटर वाइंडिंग के दौरान मोटर से निकलने वाला पुराना सिल्वर, ख़्वाह उस की मालियत कम हो या ज़ियादा हो वोह मोटर के मालिक की मिल्कियत है और आप के हाथ में अमानत है, लिहाज़ा आप पर लाज़िम है कि जिस मोटर से जितना सिल्वर निकले उसे उस के मालिक के सिपुर्द कर दें, और येह भी मुम्किन है कि जितनी मालियत का वोह सिल्वर हो उतनी रक़म मालिक को दे दी जाए। मालिक की इजाज़त के बग़ैर उस सिल्वर को अपने इस्तिमाल में लाना या अपने पास रख कर बाद में बेच देना गुनाह और नाहक़ तरीक़े से दूसरों का माल खाना है। मालिक की सराहत के साथ या दलालत के साथ इजाज़त के बग़ैर उस को इस्तिमाल नहीं किया जा सकता।

रद्दुल मुहतार में है: "لايجوز لاحد من المسلمين اخذ مال احد بغير سبب شرعی" तर्जमा : किसी मुसलमान के लिए येह जाइज़ नहीं कि बग़ैर किसी सबबे शरई के किसी का माल ले।
(ردالمحتار علی الدر المختار، 4/61)

وَاللہُ اَعْلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَرَسُوْلُہٗ اَعْلَم صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

ह़ज़रते सय्यिदुना औ़फ़ बिन मालिक अश्जई़ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا

ह़ज़रते सय्यिदुना औ़फ़ बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا का शुमार प्यारे आक़ा ह़ज़रत मुह़म्मद मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के उन जां निसारों में होता है जो न सिर्फ़ शुजाअ़त के एतिबार से दिलावर और सफ़ शिकन थे बल्कि इ़ल्मो फ़ज़्ल के लिह़ाज़ से आस्माने हिदायत के निहायत दरख़्शन्दा सितारे थे। आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ 5 हिजरी में मुशर्रफ़ ब इस्लाम हुए आप का तअ़ल्लुक़ अ़रब के मश्हूर क़बीले बनू अश्जअ़ से था जब कि कुन्यत अबू अ़ब्दुर्रह़मान या अबू ह़म्माद थी। वालिद माजिद ह़ज़रत मालिक बिन अबू औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ भी शरफ़े सह़ाबियत से सरफ़राज़ हुए, आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ एक जांबाज़ सिपाही की ह़ैसिय्यत से कई ग़ज़्वात में शामिल हुए। ग़ज़्वए ख़ैबर में दुश्मनों के दांत खट्टे किए जब कि जंगे मौता में ह़ज़रते ख़ालिद बिन वलीद की मइ़य्यत में सर हथेली पर रख कर दुश्मनों की सफ़ों से जा टकराए। फ़त्ह़े मक्का के मौक़े पर उन बारह हज़ार नुफ़ूसे क़ुदसिय्या का ह़िस्सा थे जिन की अ़ज़मत ता क़ियामत बाक़ी रहेगी। उस वक़्त बनू अश्जअ़ का झन्डा आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ के हाथ में था जब कि फ़ुतूह़ाते शाम में बहादुरी और शुजाअ़त की दास्तान रक़म की।[1]

आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ को तह़सीले इ़ल्मे दीन का बहुत शौक़ था, बारगाहे रिसालत में अक्सर ह़ाज़िर रहते थे, नफ़ीस कलिमाते मुस्तफ़वी सुनते और फ़ैज़ाने नबवी से ख़ूब बहरामन्द होते, यूं आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ ने जल्द ही क़ुरआनो ह़दीस में दर्जए तबह़्ह़ुर ह़ासिल कर लिया था।

आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ क़बूले इस्लाम से क़ब्ल झाड़ फूंक के ज़रीए लोगों का इ़लाज किया करते थे चुनान्चे मुस्लिम शरीफ़ में है : आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ बारगाहे रिसालत में यूं अ़र्ज़ गुज़ार हुए कि या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! इन कलिमात के बारे में आप क्या फ़रमाते हैं ? सरकार صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : अपने कलिमात मुझे सुनाओ। इन में कोई ह़रज नहीं जब तक कि इन में शिर्क न हो।[2]

ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नई़मी رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं : नाजाइज़ या शिर्किया अलफ़ाज़ से दम करना ह़राम या कुफ़्र है, जाइज़ दुआ़एं पढ़ कर दम करना सुन्नत है, जिस दम झाड़ फूंक के मआ़नी मालूम न हों उन्हें न पढ़े।[3]

ह़ज़रते औ़फ़ बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا की त़बीअ़त में ख़ुश मिज़ाजी भी थी चुनान्चे ग़ज़्वए तबूक में जब रह़मते आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم चमड़े के एक छोटे ख़ैमे में तशरीफ़ फ़रमा थे तो आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ ने दाख़िल होने की इजाज़त चाही, इजाज़त मिलने पर अ़र्ज़ गुज़ार हुए : क्या पूरा ही अन्दर आ जाऊं ? इरशाद

फ़रमाया : पूरे दाख़िल हो जाओ।[4]

क़ुरआने मजीद फ़ुरक़ाने ह़मीद में एक आयते मुबारका है :

﴿وَمَنْ يَّتَّقِ اللّٰهَ يَجْعَلْ لَّهٗ مَخْرَجًاۙ(۲) وَّيَرْزُقْهُ مِنْ حَيْثُ لَا يَحْتَسِبُ ؕ﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और जो अल्लाह से डरे अल्लाह उस के लिए नजात की राह निकाल देगा और उसे वहां से रोज़ी देगा जहां उस का गुमान न हो।[5] इस आयत का शाने नुज़ूल येह है : ह़ज़रते औ़फ़ बिन मालिक رَضِیَ اللہُ عَنْہُمَا के फ़रज़न्द को मुश्रिकीन ने क़ैद कर लिया तो आप नबिय्ये करीम صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुए और अ़र्ज़ किया : मेरा बेटा मुश्रिकीन ने क़ैद कर लिया है और उसी के साथ अपनी मोह़ताजी व नादारी की शिकायत भी की, सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : अल्लाह तआ़ला का डर रखो और सब्र करो और कसरत से لَاحَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيْم पढ़ते रहो। ह़ज़रते सय्यिदुना औ़फ़ बिन मालिक رَضِیَ اللہُ عَنْہُمَا ने घर आ कर अपनी बीबी से येह कहा और दोनों ने पढ़ना शुरूअ़ किया वोह पढ़ ही रहे थे कि बेटे ने दरवाज़ा खटखटाया, अन्दर दाख़िल हो कर बेटे ने बताया कि दुश्मन ग़ाफ़िल हो गया था उस ने मौक़ा पाया क़ैद से निकल भागा और चलते हुए चार हज़ार बकरियां भी दुश्मन की साथ ले आया, ह़ज़रते औ़फ़ बिन मालिक رَضِیَ اللہُ عَنْہُمَا ने ख़िदमते अक़्दस में ह़ाज़िर हो कर दरयाफ़्त किया : येह बकरियां उन के लिए ह़लाल हैं ? हुज़ूरे अनवर صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इजाज़त दी और येह आयत नाज़िल हुई।[6]

एक मरतबा ह़ज़रते औ़फ़ बिन मालिक رَضِیَ اللہُ عَنْہُمَا कहीं जा रहे थे कि अचानक एक शख़्स आया और आप رَضِیَ اللہُ عَنْہ को गालियां देने लगा लेकिन आप رَضِیَ اللہُ عَنْہ ने कमाले ज़ब्त का मुज़ाहरा करते हुए उसे कोई जवाब न दिया और ज़मीन पर लेट गए, उस वक़्त आप के सरे मुबारक पर टोपी थी आप رَضِیَ اللہُ عَنْہ ने टोपी अपने चेहरे पर डाली और आंखें मूंद लीं वोह शख़्स कुछ देर तक खड़ा गालियां देता रहा लेकिन जब आप की जानिब से कोई जवाब न मिला तो मायूस हो कर चला गया उस के जाने के बाद किसी ने आप رَضِیَ اللہُ عَنْہ से पूछा: अल्लाह पाक आप की मग़्फ़िरत फ़रमाए, ह़ैरत है कि एक शख़्स आप को गालियां दे रहा था और आप आराम कर रहे थे ? आप رَضِیَ اللہُ عَنْہ ने फ़रमाया : मैं ने तो सिर्फ़ येह देखा था कि मेरे पास शैत़ान आया है लिहाज़ा चुप साध ली और जब उसे मेरी जानिब से कोई जवाब न मिला तो वोह भाग खड़ा हुवा।[7]

आ़लमी मज़हबी स्कॉलर मौलाना मुह़म्मद इल्यास क़ादिरी साहिब फ़रमाते हैं कि जब कोई हम से उलझे या बुरा भला कहे उस वक़्त ख़ामोशी में ही हमारे लिए आ़फ़ियत है अगर्चे शैत़ान लाख वस्वसे डाले कि तू भी उस को जवाब दे वरना लोग तुझे बुज़्दिल कहेंगे, मियां ! शराफ़त का ज़माना नहीं है इस त़रह तो लोग तुझ को जीने भी नहीं देंगे वग़ैरा वग़ैरा। एक ह़दीसे मुबारका पेशे ख़िदमत है जिसे पढ़ कर आप को अन्दाज़ा होगा कि दूसरे के बुरा भला कहते वक़्त ख़ामोश रहने वाला रह़मते इलाही के किस क़दर नज़्दीक तर होता है। चुनान्चे अबू दाऊद में है, किसी शख़्स ने सरकारे मदीना صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की मौजूदगी में ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ عَنْہ को बुरा कहा तो जब उस ने बहुत ज़ियादती की। तो उन्हों ने उस की बाज़ बातों का जवाब दिया (ह़ालांकि आप की जवाबी कारवाई मअ़सिय्यत से पाक थी मगर) सरकारे नामदार صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم वहां से उठ गए । सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ عَنْہ हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के पीछे पहुंचे, अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! वोह मुझे बुरा कहता रहा आप तशरीफ़ फ़रमा रहे, जब मैं ने उस की बात का जवाब दिया तो आप उठ गए, फ़रमाया : तुम्हारे साथ फ़िरिश्ता था, जो उस का जवाब दे रहा था, फिर जब तुम ने ख़ुद उसे जवाब देना शुरूअ़ किया, तो शैत़ान दरमियान में आ कूदा।[8]

एक मरतबा ह़ज़रते औ़फ़ बिन मालिक अश्जई رَضِیَ اللہُ عَنْہُمَا मस्जिद

में टांगें फैलाए हुए एक ह़ल्क़े में जल्वा फ़रमा थे कि आप के शागिर्द ह़ज़रते कसीर बिन मुर्रह رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ आ गए, उन्हें देख कर आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने अपने पांव समेट लिए और फ़रमाया : मैं ने पांव इसी लिए फैलाए थे कि कोई नेक मर्द आए तो मैं उसे अपने पास बिठा लूं।[9]

आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ को जहां भी मौक़अ़ मिलता लोगों को ज़ेवरे इ़ल्म से आरास्ता करते और इ़ल्म की रौशनी फैलाया करते थे चुनान्चे दिमश्क़ से बाहर देहात में आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ के एक दोस्त रहा करते थे जब भी आप उन से मिलने जाते तो लोग आप के इर्द गिर्द जमा हो जाते और दीनी मसाइल पूछते और आप निहायत ही दिलनशीन अन्दाज़ में उन्हें जवाबात अ़ता फ़रमाया करते थे।[10]

आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ख़ौफ़े ख़ुदा के ग़लबे की वजह से और आख़िरत के ह़िसाब की जवाबदही के पेशे नज़र इस ख़्वाहिश का इज़्हार किया करते थे कि काश ! मैं किसी घर में मेंढा होता जिसे घर वाले ज़ब्ह़ कर लेते और मुझे भून लेते और मेरा गोश्त खा लेते।[11]

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ के दौरे ख़िलाफ़त में आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ मुल्के शाम चले गए और ह़िम्स में क़ियाम किया और यहीं 73 हिजरी में वफ़ात पा कर रफ़ीक़े आला से जा मिले।[12] ह़ज़रते सय्यिदुना औ़फ़ बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا का शुमार फ़ुज़ला सह़ाबा में होता है, आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से रिवायत कर्दा "67" अह़ादीस के चमकते दमकते क़ीमती मोती कुतुबे अह़ादीस व सियर में बिखरे हुए हैं,[13] एक ह़दीसे पाक मुलाह़ज़ा फ़रमाइए, चुनान्चे ह़ज़रते औ़फ़ बिन मालिक अश्जई रिवायत करते हैं कि नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : तुम्हारे बेहतरीन इमाम (ख़लीफ़ा) वोह हैं जिन से तुम मह़ब्बत करो और वोह तुम से मह़ब्बत करें, तुम उन के लिए दुआ़ए मग़्फ़िरत करो और वोह तुम्हारे लिए दुआ़ए मग़्फ़िरत करें और तुम्हारे बदतरीन इमाम (ख़लीफ़ा/हुक्मरान) वोह हैं जिन से तुम बुग़्ज़ रखो और वोह तुम से बुग़्ज़ रखें, तुम उन पर लानत करो और वोह तुम पर लानत करें।[14]

ह़ज़रते सय्यिदुना औ़फ़ बिन मालिक अश्जई رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا से रिवायत करने वालों में ह़ज़रते अबू हुरैरा और ह़ज़रते अबू अय्यूब अन्सारी رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا जैसे जलीलुल क़द्र और अ़ज़ीमुल मर्तबत सह़ाबा जब कि ह़ज़रत अबू मुस्लिम ख़ौलानी और ह़ज़रते अबू इदरीस ख़ौलानी जैसे ताबेई़न भी शामिल हैं जिन की फ़हमो फ़िरासत व इ़ल्मी जलालत को हर एक ने तस्लीम किया।[15]

अल्लाह पाक की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो। اٰمِیْن بِجَاہِ خَاتَمِ النَّبِیّٖن صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

---

(1)طبقات ابن سعد،4/211(2)مسلم، ص931، حدیث:5732(3)مراٰۃ المناجیح، 6/213(4)ابن ماجہ،4/380، حدیث:4042(5)پ28، الطلاق:2، 3(6)تفسیر خزائن العرفان، ص1033 ملخصاً(7)تاریخ ابن عساکر،47/52(8)ابو داؤد، 4/359، 358، حدیث:4836، 4837، غصے کا علاج، ص19(9)الادب المفرد للبخاری، ص294، رقم:1147(10)مسند الشامیین للطبرانی، 4/115، رقم: 2872(11)موسوعۃ ابن ابی الدنیا،2/565، رقم:159(12)طبقات ابن سعد، 4/211(13)تہذیب الاسماء واللغات للنووی، 2/354(14)مسلم، ص795، حدیث:4804(15)تاریخ ابن عساکر،27/44۔

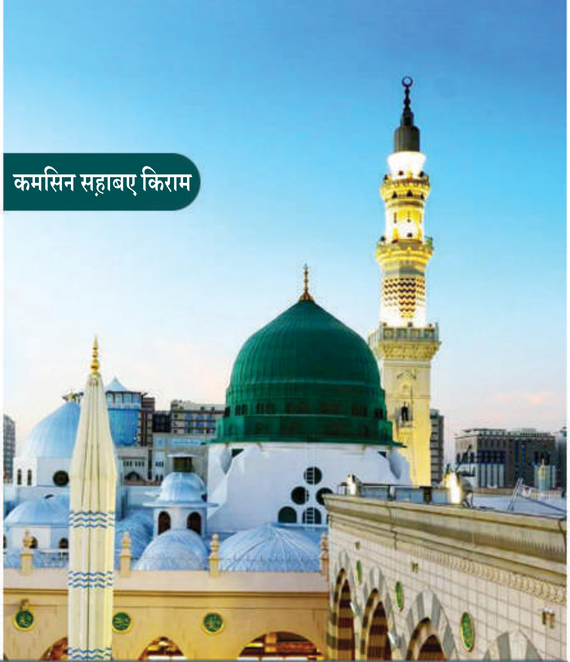

رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُمَا

ह़ज़रते अ़ब्दुर्रह़मान बिन ज़ैद

कम उ़म्री में जिन ख़ुशनसीब बच्चों को अल्लाह पाक के आख़िरी नबी ह़ज़रत मुह़म्मदे मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में ह़ाज़िरी का शरफ़ मिला उन में ह़ज़रते अ़ब्दुर्रह़मान बिन ज़ैद رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُمَا भी शामिल हैं, आइए ! उन के बचपन के बारे में पढ़ कर अपने दिलों को मह़ब्बते सहाबए किराम से रौशन करते हैं :

मुख़्तसर तआ़रुफ़

आप ह़ज़रते ज़ैद बिन ख़त्ताब और ह़ज़रते लुबाबा बिन्ते अबी लुबाबा के बेटे और मुसलमानों के दूसरे ख़लीफ़ा ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़े आज़म رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُ के भतीजे हैं, आप की विलादत 5 हिजरी को मदीनए मुनव्वरा में हुई (رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُمۡ اَجۡمَعِیۡن)।[1]

हु़ज़ूर ने घुट्टी दी, सर पर हाथ फेरा और दुआ़ए बरकत से नवाज़ा

ह़ज़रते अ़ब्दुर्रह़मान बिन ज़ैद رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُمَا जब पैदा हुए तो उन के नानाजान ह़ज़रते अबू लुबाबा رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُ ने उन्हें एक कपड़े में लपेट कर रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में पेश किया और अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! मैं ने आज तक इतने छोटे जिस्म वाला बच्चा नहीं देखा। मदनी आक़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने बच्चे को घुट्टी दी, सर पर हाथ मुबारक फेरा और दुआ़ए बरकत से नवाज़ा। (दुआ़ए मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बरकत येह ज़ाहिर हुई कि) ह़ज़रते अ़ब्दुर्रह़मान बिन ज़ैद رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُمَا जब किसी क़ौम में होते तो क़द में सब से ऊंचे नज़र आते।[2]

विसाल

हु़ज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के विसाले ज़ाहिरी के वक़्त आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُ 6 साल के थे। आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُ का विसाल ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُمَا के दौरे ख़िलाफ़त में सिन 65 हिजरी में हुवा।[3]

अल्लाह पाक की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो।

اٰمِیْن بِجَاہِ خَاتَمِ النَّبِیّٖن صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

(1) طبقات ابن سعد، 5/37-الاصابۃ فی تمیز الصحابۃ، 5/29(2)الاصابۃ فی تمیز الصحابہ، 5/30(3)اعلام للزرکلی، 3/307-الاصابۃ فی تمیز الصحابہ، 5/30۔

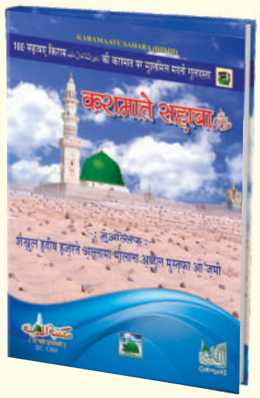

100 सहाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُم की करामात पर मुश्तमिल किताब **"करामाते सह़ाबा"** आज ही अपने क़रीबी मक्तबतुल मदीना से ह़ासिल कीजिए या पीडीएफ़ डाउनलोड कीजिए और पढ़िए।

सुल्तानुल औलिया हुज़ूर ग़ौसुल आज़म

एक क़ाफ़िला जीलान से बग़दाद की त़रफ़ रवां दवां था। जब येह क़ाफ़िला हमदान शहर से आगे बढ़ा और कोहिस्तानी सिल्सिला में दाख़िल हुवा तो डाकूओं के एक गिरोह ने उस क़ाफ़िले पर ह़म्ला कर के अहले क़ाफ़िला के मालो अस्बाब को लूटना शुरूअ़ कर दिया। क़ाफ़िले के हर फ़र्द पर ख़ौफ़ो हिरास छाया हुवा था, किसी में हिम्मत न थी कि आगे बढ़ कर उन ख़ूंख़्वार लुटेरों का मुक़ाबला कर सके, उस क़ाफ़िले में लगभग 18 साला एक ख़ूबरू नौजवान भी था, जिस के चेहरे पर न ख़ौफ़ था न परेशानी की कोई अ़लामत, इत़मीनान व सुकून का नूर उस के चेहरे से छलक रहा था। एक राहज़न उस नौजवान के पास आया और पूछने लगा : तुम्हारे पास भी कुछ है ? नौजवान बोला : मेरे पास चालीस दीनार हैं। राहज़न ने तेज़ लहजे में कहा : मज़ाक़ न करो, सच सच बताओ ? नौजवान ने कहा : मेरे पास वाक़ेई चालीस दीनार हैं येह देखो ! मेरी बग़ल के नीचे दीनारों वाली थैली कपड़ों में सिली हुई है। राहज़न ने देखा तो ह़ैरान रह गया, फिर उस नौजवान को अपने सरदार के पास ले गया और सारा वाक़िआ़ बयान किया। सरदार ने कहा : नौजवान ! क्या बात है लोग तो डाकूओं से अपनी दौलत छुपाते हैं, मगर तुम ने किसी दबाव के बग़ैर ही अपनी दौलत ज़ाहिर कर दी ? नौजवान ने कहा : मेरी मां ने घर से चलते वक़्त मुझे नसीह़त फ़रमाई थी कि बेटा ! हर ह़ाल में सच बोलना। बस ! मैं अपनी वालिदा के साथ किया हुवा वादा निभा रहा हूं। नौजवान का येह जुम्ला तासीर का तीर बन कर लुटेरों के सरदार के दिल में पैवस्त हो गया और उसकी आंखों से आंसू छलकने लगे, उस का सोया हुवा मुक़द्दर जाग उठा, लिहाज़ा कहने लगा : साहिबज़ादे ! तुम किस क़दर ख़ुशनसीब हो कि दौलत लुटने की परवा किए बग़ैर अपनी वालिदा के साथ किए हुए वादे को निभा रहे हो और मैं किस क़दर ज़ालिम हूं कि अपने ख़ालिक़ो मालिक के साथ किए हुए वादे को पामाल कर रहा हूं और मख़्लूक़े ख़ुदा का दिल दुखा रहा हूं। येह कहने के बाद वोह साथियों समेत सच्चे दिल से ताइब हो गया और लूटा हुवा सारा माल वापस कर दिया। (قلائد الجواہر، ص:ص9)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! 18 साला येह ख़ूबरू नौजवान कोई और नहीं ह़ुज़ूर ग़ौसुल आज़म ह़ज़रते शैख़ सय्यिद अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه थे, आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه त़ब्क़ए औलिया के सरदार हैं, चमनिस्ताने सूफ़िया के महकते फूल हैं, उस नूरानी क़ाफ़िले के सिपेह सालार हैं जिस का हर मुसाफ़िर वफ़ादार और क़ुदरत के राज़ों का पासदार है। आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की कुन्यत अबू मुह़म्मद, नाम अ़ब्दुल क़ादिर जब कि मुह़युद्दीन, मह़बूबे सुब्ह़ानी, ग़ौसे आज़म, ग़ौसुस्सक़लैन वग़ैरा मश्हूर अल्क़ाबात हैं। ग़ौसियत बुज़ुर्गी का एक ख़ास दर्जा है, लफ़्ज़े ग़ौस के लुग़वी माना हैं "फ़रियाद रस" यानी फ़रियाद को पहुंचने वाला चूंकि ह़ज़रते शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ग़रीबों, बेकसों और ह़ाजतमन्दों के मददगार हैं, इसी लिए आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه को ग़ौसे आज़म के ख़िताब से सरफ़राज़ किया गया। अ़क़ीदतमन्द आप को "**पीराने पीर दस्तगीर**" के लक़ब से भी याद करते हैं। (ग़ौसे पाक के ह़ालात, स. : 15, मुल्तक़त़न)

आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه का क़द दरमियाना, बदन नह़ीफ़, सीना चौड़ा, दाढ़ी घनी, रंग गन्दुमी, गर्दन ऊंची, आंखें सियाह थीं जब कि अब्रू मिली हुई थीं। (نزہۃ الخاطر الفاتر، ص۱۹)

ह़ुज़ूर ग़ौसे आज़म की विलादते बा सआ़दत यकुम रमज़ान 470 हिजरी को जीलान में हुई। आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने पहले दिन ही से रोज़ा रखा चुनान्चे आप सह़री से ले कर इफ़्तारी तक अपनी वालिदा मोह़तरमा का दूध न पीते थे। (بہجۃ الاسرار، ص:171، 172)

आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने इब्तिदाई तालीम क़स्बा जीलान में ह़ासिल की, फिर मज़ीद तालीम के लिए सिन 488 हिजरी में बग़दाद तशरीफ़ लाए और अपने ज़माने के मारूफ़ असातिज़ा और अइम्मए फ़न से इक्तिसाबे फ़ैज़ किया। आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने उ़लूमे क़ुरआन को रिवायत व दरायत और तज्वीज़ व क़िराअत के असरार व रुमूज़ के साथ ह़ासिल किया और ज़माने के बड़े मुह़द्दिसीन और अहले फ़ज़्लो कमाल व मुस्तनद उ़लमाए किराम से ह़दीस का समाअ़त फ़रमा कर उ़लूम की इस शानदार त़रीक़े से तह़सील व तक्मील फ़रमाई कि अपने हम अ़स्र उ़लमा में नुमायां मक़ाम पा लिया बल्कि उन के भी मर्जअ़ बन गए। (نزہۃ الخاطر الفاتر،۲۰ بتغیر)

आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه तेरह (13) उ़लूम में तक़रीर फ़रमाया करते थे। एक जगह अ़ल्लामा अ़ब्दुल वह्हाब शअ़रानी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं कि हुज़ूर ग़ौसे आज़म رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के मद्रसए आ़लिया में लोग उन से मुख़्तलिफ़ उ़लूमो फ़ुनून पढ़ा करते थे। दोपहर से पहले और बाद दोनों वक़्त आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه लोगों को तफ़्सीर, ह़दीस, फ़िक़्ह, कलाम, उसूल और नह़व पढ़ाते थे और ज़ोहर के बाद मुख़्तलिफ़ क़िराअतों के साथ क़ुरआने मजीद पढ़ाते थे। (الطبقات الکبریٰ للشعرانی، ۱/۱۷۹)

बिलादे अ़जम से एक सुवाल आया कि एक शख़्स ने तीन त़लाक़ों की क़सम इस त़ौर पर खाई है कि वोह अल्लाह तआ़ला की ऐसी इ़बादत करेगा कि जिस वक़्त वोह इ़बादत में मश्ग़ूल हो तो लोगों में से कोई शख़्स भी वोह इ़बादत न कर रहा हो, अगर वोह ऐसा न कर सका तो उस की बीवी को तीन त़लाक़ें हो जाएं, तो इस सूरत में कौन सी इ़बादत करनी चाहिए ? इस सुवाल से उ़लमाए इ़राक़ ह़ैरान और शश्दर रह गए। और इस मस्अले को उन्हों ने हुज़ूर ग़ौसे आज़म رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की ख़िदमते अक़्दस में पेश किया तो आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने फ़ौरन उस का जवाब इरशाद फ़रमाया कि वोह शख़्स मक्कए मुकर्रमा चला जाए और त़वाफ़ की जगह सिर्फ़ अपने लिए ख़ाली किराए और तन्हा सात मरतबा त़वाफ़ कर के अपनी क़सम को पूरा करे। उस शाफ़ी जवाब से उ़लमाए इ़राक़ को निहायत ही तअ़ज्जुब हुवा क्यूंकि वोह इस सुवाल के जवाब से आ़जिज़ हो गए थे। (بہجۃ الاسرار، ص:226)

आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه का चालीस साल तक येह मामूल रहा कि इ़शा के लिए वुज़ू करते और पूरी रात इ़बादत में गुज़ार देते यहां तक कि उसी वुज़ू से सुब्ह़ की नमाज़ पढ़ते। (بہجۃ الاسرار، ص:164) पन्दरह साल तक रात भर में एक क़ुरआने पाक ख़त्म करते रहे। (بہجۃ الاسرار، ص:118) आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه का येह फ़रमान आज भी आप के करोड़ों अ़क़ीदत मन्दों और मुरीदों की तवज्जोह का मर्कज़ और मह़वर है कि जो कोई मुसीबत में मुझ से फ़रियाद करे या मुझ को पुकारे तो मैं उस की मुसीबत को दूर कर दूंगा और जो कोई मेरे वसीले से **अल्लाह** तआ़ला से अपनी ह़ाजत त़लब करेगा तो **अल्लाह** तआ़ला उस की ह़ाजत को पूरा फ़रमा देगा। (بہجۃ الاسرار، ص:197) एक मरतबा आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه से किसी ने पूछा कि शुक्र क्या होता है ? तो आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने इरशाद फ़रमाया कि शुक्र की ह़क़ीक़त येह है कि आ़जिज़ी करते हुए नेमत देने वाले की नेमत का इक़रार हो और इसी त़रह़ आ़जिज़ी करते हुए अल्लाह तआ़ला के एह़सान को माने और अपना येह ज़ेहन बनाए कि शुक्र करने का ह़क़ अदा नहीं कर पाया। (بہجۃ الاسرار، ص:234) आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने 11 रबीउ़स्सानी 561 हिजरी में 91 बरस की उ़म्र में बग़दाद शरीफ़ में इन्तिक़ाल फ़रमाया। आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه का मज़ारे पुरअनवार आज भी बग़दादे मुअ़ल्ला में मर्जए ख़लाइक़ है।

(الطبقات الکبریٰ للشعرانی، ۱/۱۷۸)

इ़ल्मो ह़िक्मत के मदनी फूल

मिस्वाक शरीफ़ के फ़ज़ाइल पर 10 फ़रामीने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

﴾1﴿ **मिस्वाक** कर के दो रकअ़तें पढ़ना बग़ैर **मिस्वाक** की 70 रकअ़तों से अफ़्ज़ल है[1] ﴾2﴿ **मिस्वाक** के साथ नमाज़ पढ़ना बग़ैर **मिस्वाक** के नमाज़ पढ़ने से 70 गुना अफ़्ज़ल है[2] ﴾3﴿ चार चीज़ें रसूलों की सुन्नत हैं : (1) इ़त्र लगाना (2) निकाह़ करना (3) **मिस्वाक** करना और (4) ह़या करना[3] ﴾4﴿ **मिस्वाक** करो ! **मिस्वाक** करो ! मेरे पास **पीले दांत** ले कर न आया करो[4] ﴾5﴿ **मिस्वाक** में मौत के सिवा हर मरज़ से शिफ़ा है[5] ﴾6﴿ अगर मुझे अपनी उम्मत की मशक़्क़त व दुश्वारी का ख़याल न होता तो मैं उन को हर वुज़ू के साथ **मिस्वाक** करने का हुक्म देता[6] ﴾7﴿ **मिस्वाक** का इस्तिमाल अपने लिए लाज़िम कर लो क्यूंकि इस में मुंह की सफ़ाई है और येह रब तआ़ला की रिज़ा का सबब है[7] ﴾8﴿ वुज़ू निस्फ़ (यानी आधा) ईमान है, और **मिस्वाक** करना निस्फ़ (यानी आधा) वुज़ू है[8] ﴾9﴿ बन्दा जब **मिस्वाक** कर लेता है फिर नमाज़ को खड़ा होता है तो फ़िरिश्ता उस के पीछे खड़ा हो कर क़िराअत सुनता है, फिर उस से क़रीब होता है यहां तक कि अपना मुंह उस के मुंह पर रख देता है[9] ﴾10﴿ "जिस शख़्स ने जुमुए के दिन ग़ुस्ल किया और **मिस्वाक** की, ख़ुश्बू लगाई, उ़म्दा कपड़े पहने, फिर मस्जिद में आया और लोगों की गर्दनों को नहीं फलांगा, बल्कि नमाज़ पढ़ी और इमाम के आने के बाद (यानी ख़ुत़्बे में और) नमाज़ से फ़ारिग़ होने तक ख़ामोश रहा तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के तमाम गुनाहों को जो उस पूरे हफ़्ते में हुए थे, मुआ़फ़ फ़रमा देता है।"

(مُسندِ احمد بن حنبل ج٤ ص١٦٢ حديث١١٧٦٨) (मिस्वाक शरीफ़ के फ़ज़ाइल, स. 2 अज़ अमीरे अहले सुन्नत)

مدینہ

۱:اَلتَّرغِیب وَالتَّرهِیب ج۱ ص۱۰۲ حدیث۱۸ ۲:شعب الایمان ج۳ ص۲٦ حدیث۲۷۷٤ ۳:مُسندِ احمد بن حنبل ج۹ ص۱٤۷ حدیث۲۳٦٤۱
٤:جَمْعُ الْجَوامِع ج۱ ص۳۸۹ حدیث۲۸۷۵ ۵:جامعِ صغیر ص۲۹۷ حدیث٤۸٤۰ ٦:بُخاری ج۱ ص٦۳۷ ۷:مُسندِ احمد بن حنبل ج۲ ص٤۳۸ حدیث۵۸٦۹
۸:مُصَنَّف ابنِ اَبی شیبه ج۱ ص۱۹۷ حدیث۲۲ ۹:البحر الزخار ج۲ ص۲۱٤ حدیث:٦۰۳

मज़ार हज़रते अ़ल्लामा गुलपीर क़ादिरी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه

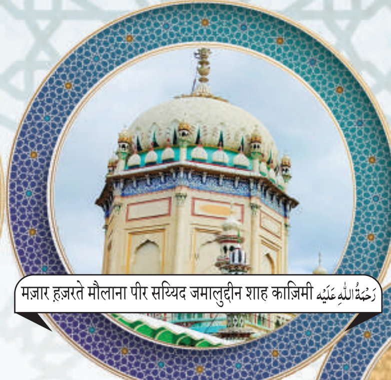

मज़ार हज़रते मौलाना पीर सय्यिद जमालुद्दीन शाह काज़िमी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه

मज़ार हज़रते शाह सय्यिद नूरुल उ़ला नक़्शबन्दी अबुल उ़लाई رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه

मज़ार पीरे त़रीक़त सूफ़ी इक़्बाल अह़मद नूरी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه

अपने बुज़ुर्गों को याद रखिये

रबीउ़ल आख़िर इस्लामी साल का चौथा महीना है। इस में जिन सह़ाबए किराम, औलियाए उ़ज़ाम और उ़लमाए इस्लाम का विसाल हुवा, उन में से 117 का मुख़्तसर ज़िक्र **“माहनामा फ़ैज़ाने मदीना”** रबीउ़ल आख़िर 1439 हि. ता 1447 हि. के शुमारों में किया जा चुका है। मज़ीद 11 औलियाए किराम व उ़लमाए इस्लाम का तआ़रुफ़ मुलाह़ज़ा फ़रमाइए :

औलिया व मशाइख़े किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام

1 मीरां सय्यिद अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़ क़ादिरी बग़दादी बेजापूरी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की पैदाइश ख़ानदान ग़ौसुल आज़म में बग़दाद, इ़राक़ में हुई और 22 रबीउ़ल आख़िर 1051 हि. को बेजापूर, कर्नाटक हिन्द में विसाल फ़रमाया। मज़ार जोड़ गुम्बद के नाम से मश्हूर है। आप क़ुत़्बुल वक़्त, वह़ीदुल अ़स्र, कसीरुल फ़ैज़ और अकाबिर मशाइख़ क़ादिरिय्या से थे।[(1)]

2 ह़ज़रते शाह सय्यिद नूरुल उ़ला नक़्शबन्दी अबुल उ़लाई رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه आलिमे दीन, साह़िबे सिद्क़ो सफ़ा, कसीरुल फ़ैज़, और सज्जादा नशीन वालिदे गिरामी ह़ज़रते शाह अबुल उ़ला अह़रारी थे। ह़ज़रते शाह वलियुल्लाह मुह़द्दिस देहल्वी के वालिदे गिरामी शाह अ़ब्दुर्रह़ीम देहल्वी को उन से ख़िर्क़ए ख़िलाफ़त ह़ासिल था। उन का विसाल 7 रबीउ़ल आख़िर 1090 हि. में हुवा, आग्रा सिटी (यूपी) हिन्द में वालिदे गिरामी के पांव की जानिब तदफ़ीन की गई।[(2)]

3 जद्दे आला ख़ानदाने राशिदी (पीर पगारा) ह़ज़रत मियां पीर साईं सय्यिद मुह़म्मद बक़ा शाह शहीद पट धनी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की पैदाइश रसूल छोटी साईदी मीरस में ह़ुसैनी सादात घराने में 1135 हि. को हुई और रबीउ़ल आख़िर 1198 हि. को शहीद हुए, मज़ार मुबारक क़स्बा शैख़ त़य्यिब मीरस सिन्ध में है। आप उ़लूमे ज़ाहिरी व बात़िनी के जामेअ़, मुरीदो ख़लीफ़ा पीर सय्यिद अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी (आस्तानए आ़लिया चिन्नाह शरीफ़) मख़्दूम इस्माई़ल रोहड़ी चिश्ती नक़्शबन्दी के फ़ैज़ याफ़्ता, सिन्धी के बुलन्द पाया शाइ़र, शैख़े त़रीक़त, रुश्दो हिदायत के पैकर थे।[(3)]

4 ह़ज़रते अ़ल्लामा गुलपीर क़ादिरी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه पीर मुह़म्मद क़ासिम अंगवी क़ादिरी के पड़पोते, पीर चराग़ अ़ली अंगवी के फ़रज़न्द, बानिए आस्ताना क़ादिरिय्या क़ासिमिय्या, साह़िब मुजाहदा, क़सीदए ग़ौसिया के आ़मिल और साह़िबे करामत थे। आप की पैदाइश अंगा शरीफ़, में हुई और 10 रबीउ़ल आख़िर 1331 हि. को विसाल फ़रमाया, मज़ार ढूडा शरीफ़ में है।[(4)]

5 जमाल मिल्लत ह़ज़रते मौलाना पीर सय्यिद जमालुद्दीन शाह काज़िमी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की पैदाइश ख़ानक़ाह ख़्वाजाबाद में हुई और यहीं 5 रबीउ़ल आख़िर 1420 हि. को विसाल फ़रमाया। आप तल्मीज़ अ़ल्लामा अ़ता मुह़म्मद बन्दयालवी, फ़ाज़िले दारुल उ़लूम अमजदिया व जामिआ़ शम्सिया नसीरिया, मुरीद व ख़लीफ़ा वालिदे गिरामी ख़्वाजा पीर सय्यिद कमालुद्दीन शाह, बानी जामिआ़ क़मरुल उ़लूम फ़रीदिया और अहले सुन्नत के मुतह़र्रिक राहनुमा थे।[(5)]

6 पीरे त़रीक़त सूफ़ी इक़्बाल अह़मद नूरी رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ की पैदाइश 1340 हि. को मह़ल्ला बाज़ार सन्दल ख़ान, इक़्बाल चौक क़ल्अ़ा बरेली शरीफ़ यूपी हिन्द के सूफ़ी अ़ज़ीज़ अह़मद ह़ामिदी के हां हुई। आप मुस्तफ़ीज़ दारुल उ़लूम मन्ज़रे इस्लाम बरेली ख़लीफ़ए मुफ़्तिए आज़म हिन्द, मुसन्निफ़े कुतुब, मुदीरे माहनामा नूरी किरन बरेली हैं, 14 कुतुबो रसाइल में शम्ए शबिस्ताने रज़ा और शम्ए शबिस्ताने नूरी ने शोहरत पाई। विसाल 6 रबीउ़ल आख़िर 1425 हि. को हुवा, मज़ार जाए पैदाइश में है।(6)

उ़लमाए इस्लाम رَحِمَہُمُ اللہُ السَّلَام

7 ह़ज़रते मौलाना ह़फ़ीज़ुल्लाह फ़िरंगी मह़ल्ली رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ की पैदाइश लखनौ, यूपी हिन्द के इ़ल्मी घराने में हुई और वफ़ात 20 रबीउ़ल आख़िर 1279 हि. को फ़रमाई, तदफ़ीन बाग़ मौलाना अनवारुल ह़क़ फ़िरंगी मह़ल्ली लखनौ में की गई। आप सल्त़नत अवध की जानिब से फ़ैज़ाबाद के मुन्तज़िम व मोहतमिम बनाए गए, अ़दालती मसरूफ़ियात के साथ ज़िन्दगी भर दर्सो तदरीस भी करते रहे।(7)

8 मनाज़िले इस्लाम मौलाना आले ह़सन मोहानी رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ की पैदाइश तक़रीबन 1202 हि. और वफ़ात 17 रबीउ़ल आख़िर 1287 हि. को हुई। तदफ़ीन मक़ामी क़ब्रिस्तान, मह़ल्ला पकरा, क़स्बा मोहान ज़िला उन्नाव हिन्द में हुई। आप मश्हूर आ़लिमे दीन, साहिबे तसानीफ़, फ़ातेह ईसाइय्यत, फ़न्ने मुनाज़रा के माहिर, सिल्सिलए क़ादिरिय्या क़मीसिया में अ़ल्लामा अनवारुल ह़क़ फ़िरंगी मह़ल्ली के मुरीद थे, देहली में शोबा वकालत से मुन्सलिक रहे और कुछ अ़र्सा नाज़िम सदारतुल आ़लिया रियासत ह़ैदराबाद के ओ़हदा पर भी फ़ाइज़ रहे। तन्क़ीहुल इ़बादात और अल इस्तिफ़सार अहम कुतुब हैं।(8)

9 आ़लिमे जलील शैख़ अ़ल्लामा अ़ब्दुल ह़क़ जावी رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ की पैदाइश मक्कए मुकर्रमा में 1285 हि. को हुई, अपने नाना इमाम मुह़म्मद नववी और दीगर उ़लमाए मक्का से तालीमो तरबियत पाई। येह ह़ाफ़िज़े क़ुरआन, फ़ाज़िले नौजवान, उ़लूमे अ़क़्लिया व नक़्लिया के माहिर, आ़लिमे फ़लकी, मुदर्रिसे मक्का और शबीह शैख़ नववी थे। कसीर त़लबा ने आप से इ़ल्मे दीन ह़ासिल किया। उन की किताब تدریج الادانی الی قراءۃ شرح التفتازانی طلبہ में मुतदावल है। उन का विसाल 19 रबीउ़ल आख़िर 1324 हि. को हुवा, तदफ़ीन मुअ़ल्ला क़ब्रिस्तान में की गई।(9)

10 मुस्तफ़्ती आला ह़ज़रत मौलाना मियां अह़मद शैख़ ख़ाकी क़ादिरी सोहरवर्दी رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ की पैदाइश शैख़ बिरादरी में हुई, इ़ल्मे दीन व तसव्वुफ़ पीरो मुर्शिद मौलाना मियां मुह़म्मद बख़्श पन्डोडवी से ह़ासिल की। आप पंजाबी, फ़ारसी और उर्दू के शाइ़र थे, आप का तख़ल्लुस ख़ाकी है। बेहतरीन कातिब थे, अपने हाथ से 7 क़ुरआने पाक लिखे। आप फ़क़ीहे ज़मां, आ़लिमे बा अ़मल थे। मुत्तक़ी व परहेज़गार थे, आप की 13 तसानीफ़ हैं। 23 रबीउ़ल आख़िर 1343 हि. में विसाल फ़रमाया।(10)

11 रियाज़ुल मिल्लत, शैख़ुल ह़दीस वत्तफ़्सीर ह़ज़रते मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद रियाज़ुद्दीन क़ादिरी चिश्ती رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ की पैदाइश 1351 हि. में हुई और 13 रबीउ़ल आख़िर 1421 हि. को विसाल फ़रमाया। आप जय्यिद आ़लिमे दीन, तल्मीज़ व मुरीदो ख़लीफ़ए मुह़द्दिसे आज़म मौलाना सरदार अह़मद, मुफ़स्सिरे क़ुरआन (तफ़्सीर रियाज़ुल क़ुरआन मअ़ तर्जमा रियाज़ुल ईमान), बेहतरीन मुदर्रिस, कसीरुल तलामिज़ा, शैख़े त़रीक़त, बानिए आस्ताना आ़लिया फ़ैज़ाबाद शरीफ़, साहिबे दीवान नातगो शाइ़र और 50 के क़रीब कुतुब के मुसन्निफ़ हैं।(11)

---

(1) तज़्किरतुल निसाब, स. 108 (2) आग्रा के 283 औलियाए किराम की सीरत, स. 183 (3) तज़्किरए औलियाए सिन्ध, स. 360, 361 (4) ख़ोशाब सरज़मीने औलिया, स. 62 ता 65 (5) तज़्किरए उ़लमाए अहले सुन्नत म्यानवाली, स. 205, 206 (6) मुलख़्ख़स अज़ तज़्किरए ह़यात व ख़िदमात सूफ़ी इक़्बाल अह़मद नूरी (7) तज़्किरए उ़लमाए हिन्द, स. 167 (8) माहनामा मआ़रिफ़ रज़ा, नवम्बर 2015, स. 34 ता 36

(9) تحفۃ الراوی، ص13- فیض الملک المتعالی، ص1136- نشر النور،

(10) गोजर ख़ान के सोहरवर्दी मशाइख़, स. 549 ता 562 (11) तज़्किरए उ़लमाए अहले सुन्नत, स. 372 ता 378।

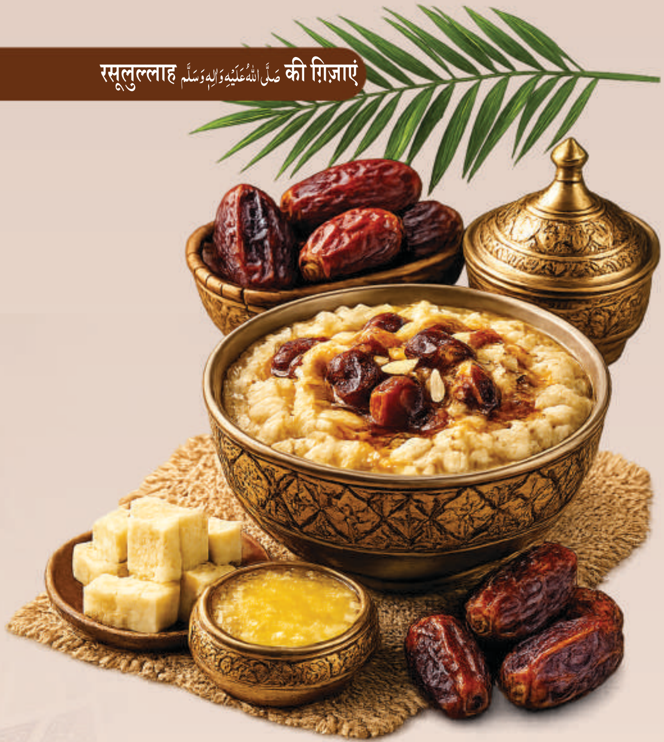

हैस

अल्लाह पाक के आख़िरी नबी हज़रत मुहम्मदे मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को बाज़ खाने बहुत पसन्द थे जिन्हें आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم बड़ी रग़बत के साथ तनावुल फ़रमाते थे। मसलन अ़रब में एक खाना होता है जो "**हैस**" कहलाता है, येह घी, पनीर और खजूर मिला कर पकाया जाता है उस को आप बड़ी रग़बत के साथ तनावुल फ़रमाया करते थे।[(1)]

हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا फ़रमाते हैं : हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का महबूब तरीन खाना हैस का सरीद था।[(2)]

येह निहायत लज़ीज़ होता है, छुहारा और खजूर वैसे भी ताक़त बढ़ाने वाली चीज़ है, मख्खन से मिल कर उस की ख़ुश्की कम हो जाती है, लज़्ज़त भी ज़ियादा हो जाती है, नुक़्सान भी जाता रहता है।

आज कल उसे हरीसा भी कहा जाता है, हरीसा बहुत सी क़िस्म का होता है। मुख़्तलिफ़ तरीक़ों और मुख़्तलिफ़ चीज़ों से बनाया जाता है।[(3)]

रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने हैस से वलीमा फ़रमाया : हज़रते अनस رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ फ़रमाते हैं : हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने जब हज़रते सफ़िय्या رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا से निकाह फ़रमाया तो हैस से वलीमा किया।[(4)]

नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने जशीशा और हैस से मेहमान नवाज़ी फ़रमाई : हज़रते मुआ़विया बिन हकम رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ फ़रमाते हैं : हम रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के हमराह सुफ़्फ़ा में बैठे थे कि आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मुहाजिरीन में से किसी अन्सारी के हमराह एक को, किसी के साथ दो को और किसी के साथ तीन आदमियों को भेज रहे थे हत्ता कि आख़िर में हम चार अफ़राद बचे और पांचवें ख़ुद रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم थे। इरशाद फ़रमाया : तुम मेरे साथ चलो। चुनान्चे जब हम दरे दौलत पर हाज़िर हुए तो आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उम्मुल मोमिनीन हज़रते आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا से इरशाद फ़रमाया : ऐ आ़इशा ! हमें रात का खाना खिलाओ। चुनान्चे उन्हों ने जशीशा[(5)] हाज़िर कर दिया। हम ने खा लिया, फिर इरशाद फ़रमाया : ऐ आ़इशा ! हमें कुछ खिलाओ। आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا हैसा ले कर हाज़िर हुईं। हम ने खा लिया, फिर इरशाद फ़रमाया : ऐ आ़इशा ! हमें कुछ पिलाओ। आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا दूध से भरा हुवा बरतन ले कर हाज़िर हुईं। हम ने दूध नोश किया। आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फिर इरशाद फ़रमाया : ऐ आ़इशा ! हमें कुछ और

पिलाओ। आप पानी से भरा हुवा एक बड़ा प्याला ले कर ह़ाज़िर हुईं। हम ने ख़ूब सैर हो कर पिया।[6]

ह़ुज़ूरे अकरम صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में सत्तू और ह़ैस पेश किया : ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन बुसर رَضِیَ اللہُ عَنْہ फ़रमाते हैं : नबिय्ये करीम صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मेरे वालिद के पास तशरीफ़ लाए तो मेरे वालिद साहिब ने आप صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में सत्तू और ह़ैस का खाना पेश किया, आप صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उसे तनावुल फ़रमाया। फिर आप صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में खजूरें पेश कीं, ह़ुज़ूरे अकरम صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन में से कुछ खजूरें तनावुल फ़रमाईं, फिर आप صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में मशरूब पेश किया, आप صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उसे नोश फ़रमाया और उसे अपने दाएं जानिब वाले को दे दिया। जब रसूले करीम صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم सुवार होने लगे तो मेरे वालिद खड़े हो गए और आप صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की सुवारी की लगाम पकड़ कर अ़र्ज़ गुज़ार हुए कि या रसूलल्लाह صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم! हमारे लिए दुआ फ़रमा दीजिए। ह़ुज़ूरे अकरम صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने दुआ फ़रमाई : اَللّٰھُمَّ بَارِکْ لَھُمْ فِیْمَا رَزَقْتَھُمْ، وَاغْفِرْ لَھُمْ، وَارْحَمْھُمْ यानी ऐ अल्लाह पाक ! तू ने जो इन को रिज़्क़ दिया है इस में बरकत अ़ता फ़रमा, इन की बख़्शिश फ़रमा और इन पर रह़म फ़रमा।[7]

ह़ैस और त़िब

- ह़ैस खजूर, मख्खन या घी और पनीर मिला कर बनाया जाता है जो एक लज़ीज़ मुक़व्वी ग़िज़ा है।
- बीमारी और कमज़ोरी में त़ाक़त बख़्श है।
- ज़ूद हज़्म है।
- मेदे को राह़त पहुंचाता है।
- दिमाग़ और आसाब को तक़्वियत देता है।
- जोड़ों के दर्द में निहायत मुफ़ीद है।
- बलग़मी अमराज़ में फ़ायदेमन्द है।
- क़ुव्वते बाह में इज़ाफ़ा करता है।
- येह सर्द मिज़ाज वाले अफ़राद के लिए मुफ़ीद ग़िज़ा है।
- ह़ैस के फ़वाइद के पेशे नज़र इसे (Balanced Energy Food) (मुतवाज़न तवानाई वाली ग़िज़ा) कहा जाता है।
- शूगर (Diabetes) के मरीज़ खाने से परहेज़ करें।[8]

नोट : हर दवाई अपने त़बीब (डॉक्टर या ह़कीम) के मश्वरे से इस्तिमाल कीजिए। इस मज़मून की त़िब्बी तफ़्तीश ह़कीम रिज़्वान फ़िरदौस अ़त्तारी ने की है।

---

(1) देखिए : सीरते मुस्त़फ़ा, स. 585 (2) دیکھئے: ابوداؤد، 3/492، حدیث:3783

(3) मिरआतुल मनाजीह़, 5/73-6/38 (4) دیکھیے: بخاری، 3/453، حدیث:5169

(5) गेहूं पीस कर आटा हांडी में डाल कर ऊपर से गोश्त या खजूरें डाल कर पकाने से जो खाना तय्यार हो उसे जशीशा कहते हैं। (अल्लाह वालों की बातें, 2/60)

(6) حلیۃ الاولیاء، 2/41، حدیث:1420 , अल्लाह वालों की बातें, 2/60 ह़दीस : 1420

(7) مسند امام احمد، 29/228، حدیث:17683

(8) मुख़्तलिफ़त वेबसाइट से माख़ूज़।

मुख़्तलिफ़ बीमारियों के घरेलू त़िब्बी इ़लाज जानने के लिए किताब "घरेलू इ़लाज" आज ही दावते इस्लामी की वेबसाइट के ज़रीए डाउनलोड कीजिए, ख़ुद भी पढ़िए और दूसरों को शेर भी कीजिए।

मदनी क्लीनिक

सफ़ाई सुथराई की अहमियत व ज़रूरत

हमारे प्यारे दीन **"इस्लाम"** में सफ़ाई सुथराई को भी बहुत अहमियत हासिल है। हमारे आक़ा हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم सरापा त़हारत व नज़ाफ़त का नमूना थे। बदन तो बदन, आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के कपड़ों पर भी कभी मक्खी नहीं बैठी, न कपड़ों में कभी जूएं पड़ीं। मक्खियों की आमद, जूओं का पैदा होना चूंकि गन्दगी बदबू वग़ैरा की वजह से हुवा करता है और आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم चूंकि हर क़िस्म की गन्दगियों से पाक और जिस्मे अत़्हर ख़ुश्बूदार था इस लिए आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم इन चीज़ों से मह़फ़ूज़ रहे। (सीरते मुस्तफ़ा, स. 566 मुलख़्ख़सन) (जो शख़्स) आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के लिबास मुबारक को गन्दा और मैला बताए, हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के नाख़ुन बड़े बड़े कहे येह सब कुफ़्र है।

(कुफ़्रिया कलिमात के बारे में सुवाल जवाब, स. 207)

आला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं:

मैल से किस दर्जा सुथरा है वोह पुतला नूर का
है गले में आज तक कोरा ही कुर्ता नूर का

(ह़दाइक़े बख़्शिश,स. 244)

मुतअ़द्दद अह़ादीसे मुबारका में सफ़ाई की अहमियत को बयान किया गया है। हुज़ूर निबय्ये रह़मत صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया: **अल्लाह तआ़ला** पाक है, पाकी पसन्द फ़रमाता है, सुथरा है, सुथरापन पसन्द फ़रमाता है लिहाज़ा तुम अपने सेह़न साफ़ रखो और यहूद से मुशाबहत न करो। (ترمذی، 4/325، حدیث:2808) **अल्लाह तआ़ला** बन्दे की ज़ाहिरी बात़िनी पाकी पसन्द फ़रमाता है, बन्दे को चाहिए कि हर त़रह़ पाक रहे जिस्म, नफ़्स रूह़, लिबास, बदन, अख़्लाक़ ग़रज़ कि हर चीज़ को पाक साफ़ रखे, अक़्वाल, अफ़आ़ल, अह़वाल अ़क़ाइद सब दुरुस्त रखे। **(अपने सेह़न साफ़ रखो)** यानी अपने घर तक साफ़ रखो, लिबास बदन वग़ैरा की सफ़ाई तो बहुत ही ज़रूरी है घर भी साफ़ रखो वहां कूड़ा जाला वग़ैरा जमा न होने दो। हर त़रह़ की सफ़ाई इस्लाम ने ही सिखाई है।

(मिरआतुल मनाजीह़, जि. 6, स. 192 मुलख़्ख़सन)

इस्लाम में जुम्अ़तुल मुबारक का दिन ख़ुसूसी अहमियत का ह़ामिल है, इस लिए नमाज़े जुमुआ़ के लिए ग़ुस्ल करने और तेल ख़ुश्बू वग़ैरा के इस्तिमाल की अह़ादीस में ख़ुसूसी तरग़ीब दिलाई गई है। आला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं: मैल दूर करने के लिए येह (ग़ुस्ल करना) बि ऐ़निही मत़्लूब शरअ़ (बज़ाते ख़ुद शरीअ़त को दरकार) है। दीन की बुन्याद ही नज़ाफ़त पर है और जुमुआ़ के दिन ग़ुस्ल के हुक्म की ह़िक्मत येही है। (फ़तावा रज़विय्या, जि. 2, स. 61)

एक ह़दीस में बिलख़ुसूस मुंह की सफ़ाई की ताकीद करते हुए फ़रमाया गया: طَيِّبُوْا اَفْوَاهَكُمْ بِالسِّوَاكِ فَاِنَّهَا طُرُقُ الْقُرْاٰنِ **तर्जमा :** अपने मुंह को मिस्वाक के ज़रीए साफ़ रखो क्यूंकि येह क़ुरआन का रास्ता हैं। (شعب الایمان، 2/382، حدیث:2119) जब कि एक रिवायत में फ़रमाया: उम्मत के मशक़्क़त में पड़ने का ख़याल न होता तो मैं हर नमाज़ के वक़्त उन को मिस्वाक का हुक्म देता।

(بخاری، 1/307، حدیث:887)

मुजद्दिदे आज़म इमामे अहले सुन्नत رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه ने फ़रमाया: ह़दीसे सिवाक (मिस्वाक वाली ह़दीसे पाक) का सबब येह है कि लोग मैले कुचैले दांतों के साथ रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के पास आए तो आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया: मिस्वाक किया करो और मेरे पास मैले कुचैले दांतों के साथ मत आया करो, अगर मुझे उम्मत की मशक़्क़त का लिह़ाज़ न होता तो मैं उन पर हर नमाज़ के वक़्त फ़र्ज़ कर देता। (फ़तावा रज़विय्या, 30/557)

तिब्बी एतिबार से सफ़ाई की अहमियत

अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ सफ़ाई सुथराई की आ़दत डालना न सिर्फ़ अज्रो सवाब के ह़ुसूल का बाइ़स है बल्कि इस के

मुतअ़द्द दुनियवी फ़वाइद भी हैं। इस के बरअ़क्स गन्दगी और आलूदगी न सिर्फ़ इस्लामी नुक़्तए नज़र से नापसन्दीदा चीज़ है बल्कि दुनियवी एतिबार से भी उस के कसीर नुक़्सानात हैं। सफ़ाई का ख़याल न रखने के बाइ़स कसीर बीमारियां लाहिक़ हो सकती हैं मसलन डाइरिया, टाइफ़ाइड, टीबी और जिल्दी बीमारियां ख़ारिश वग़ैरा।

सफ़ाई की दो अक़्साम की जा सकती हैं :

ज़ाती सफ़ाई : अपने जिस्म और लिबास वग़ैरा को साफ़ सुथरा रखना मुतअ़द्द बीमारियों से बचाने के साथ साथ इन्सान की शख़्सियत को पुर कशिश बनाता और एतिमाद वक़ार में इज़ाफ़ा करता है। इस के बरअ़क्स गन्दे लिबास और मैले जिस्म के ह़ामिल अफ़राद को न सिर्फ़ ह़क़ारत की निगाह से देखा जाता और लोग उन से घिन खाते हैं बल्कि ऐसे लोगों में ख़ुद एतिमादी की कमी भी पाई जाती है। जिस्म व लिबास के इ़लावा अपनी सुवारी, मोबाइल फ़ोन, लैपटोप (Laptop), टैबलेट पीसी (Tablet PC), चप्पल, जुराबें, इ़मामा, चादर, टोपी, रूमाल, घड़ी, क़लम, बैग वग़ैरा इस्तिमाली अश्या को भी साफ़ सुथरा रखा जाए और जिन चीज़ों को धोना मुम्किन हो वक़्ते मुनासिब पर धोया जाए।

हाथ पांव के नाख़ुन हफ़्ते में एक मरतबा ज़रूर काटें वरना उन में मैल जमा होता और जरासीम परवरिश पाते हैं जो खाने के ज़रीए पेट में जा कर मुख़्तलिफ़ बीमारियों मसलन डाइरिया, हैज़ा वग़ैरा का बाइ़श बन सकते हैं। दांतों की सफ़ाई का भी ख़ास एहतिमाम रखें। सुन्नत के मुताबिक़ मिस्वाक करें। खाने के बाद दांतों में ख़िलाल करने का मामूल बनाएं। खाने से पहले और बाद अच्छी त़रह हाथ धोएं। कानों की सफ़ाई का भी मुनासिब एहतिमाम करें लेकिन इस के लिए माचिस की तीली का इस्तिमाल ख़त़रनाक साबित हो सकता है। इस मक़्सद के लिए अपने कान किसी अ़त़ाई डॉक्टर को पेश करना भी ख़त़रे से ख़ाली नहीं कि इस त़रह लेने के देने पड़ सकते हैं।

जिस से बन पड़े वोह रोज़ाना नहाए कि काफ़ी ह़द तक बदन की बाहरी बदबू ज़ाइल होगी और येह सेहत के लिए भी मुफ़ीद है। दाढ़ी में अक्सर ग़िज़ाई अज्ज़ा अटक जाते हैं, सोने में बाज़ अवक़ात मुंह की बदबूदार राल भी दाख़िल हो जाती है और इस त़रह बदबू आती है लिहाज़ा दिन में एक मरतबा साबुन से दाढ़ी धो लेना मुनासिब है। यूंही सर के बाल बी वक़्तन फ़ वक़्तन धोते रहिए।

माह़ौल की सफ़ाई : बिलख़ुसूस अपने घर के मत़बख़ (Kitchen) और बैतुल ख़ला की सफ़ाई का भी एहतिमाम रखें। बेहतर येह है कि सफ़ाई का शिड्यूल बना लें कि किन चीज़ों की रोज़ाना, किन की हफ़्तावार और किन की माहाना सफ़ाई करनी है मसलन फ़्रीज, पंखों और एनर्जी सेवरों की सफ़ाई महीने में एक दफ़ा, दरवाज़ों अल्मारियों वग़ैरा की हफ़्तावार वग़ैरा। वक़्तन फ़ वक़्तन घर के ज़ेरे ज़मीन और ऊपरी वॉटर टैन्क की सफ़ाई भी निहायत ज़रूरी है। सेहतमन्द रहने के लिए साफ़ पानी का इस्तिमाल निहायत अहमियत रखता है, पानी उबाल कर पीना इस सिल्सिले में मुफ़ीद हो सकता है। माह़ौल की सफ़ाई सिर्फ़ अपने घर तक ही मह़दूद नहीं बल्कि अपनी गली, मह़ल्ले, दफ़्तर, मस्जिद, अ़वामी सुवारी मसलन बस ट्रेन वग़ैरा की सफ़ाई भी इस में शामिल है। अपने घर को साफ़ कर के तमाम कचरा गली मह़ल्ले में डाल देना नीज़ अपने सेह़न को धो कर गली में पानी खड़ा कर देना कि पड़ोसियों और राहगीरों को तक्लीफ़ पहुंचे, यक़ीनन एक नापसन्दीदा अ़मल है जो दूसरों के लिए तक्लीफ़ का बाइ़स भी बनता है।

बच्चों की तरबियत : अपने बच्चों को भी इब्तिदा ही से सफ़ाई की तरबियत दी जाए, खाने से पहले और बाद हाथ धोने की मश्क़ कराई जाए और कम अज़ कम रात सोने से पहले और बेदार होने पर दांत साफ़ करने की आ़दत डाली जाए। ख़ुलासा येह है कि अपने जिस्म बिलख़ुसूस हाथों, सर और दाढ़ी के बालों, दांतों, लिबास, सुवारी, चप्पल वग़ैरा की और अपने अत़राफ़ बिलख़ुसूस घर, दफ़्तर, सुवारी, सीढ़ियों, गली मह़ल्ले, मुलाज़मत के मक़ाम, बाग़ीचे, सेहन, दालान वग़ैरा की सफ़ाई पर भरपूर तवज्जोह देनी चाहिए।

ऐ हमारे प्यारे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हमें अच्छी निय्यत के साथ ज़ाहिरी सफ़ाई का एहतिमाम करने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमा और इस की बरकत से हमारे बात़िन को भी साफ़ सुथरा फ़रमा।

اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

नए लिखारी
(New Writers)

हज़रते सुलैमान عَلَیْہِ السَّلَام और क़ुरआन

मुहम्मद अमीर हम्ज़ा अ़त्तारी
(दर्जए ख़ामिसा जामिअ़तुल मदीना)

हज़रते सुलैमान عَلَیْہِ السَّلَام वोह अ़ज़ीमुश्शान नबी हैं कि जिन्हें अल्लाह करीम ने नुबुव्वत के साथ अ़ज़ीम बादशाहत भी अ़ता फ़रमाई यहां तक कि इन्सानों के साथ साथ जिन्नात, परिन्दों और हवाओं पर भी आप की हुकूमत थी, यहां उन आयात का ज़िक्र किया जा रहा है जिन में आप عَلَیْہِ السَّلَام का ज़िक्र है :

1 हज़रते सुलैमान عَلَیْہِ السَّلَام अल्लाह तआ़ला की अ़ता : हज़रते सुलैमान عَلَیْہِ السَّلَام का येह शरफ़ है कि आप अल्लाह तआ़ला की ख़ास अ़ता हैं, चुनान्चे इरशादे बारी तआ़ला है :

﴿وَوَهَبْنَا لِدَاوٗدَ سُلَیْمٰنَؕ نِعْمَ الْعَبْدُؕ اِنَّهٗۤ اَوَّابٌؕ(۳۰)﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और हम ने दाऊद को सुलैमान अ़ता फ़रमाया क्या अच्छा बन्दा बेशक वोह बहुत रुजूअ़ लाने वाला।

(پ23، صٓ:30)

2 अपने वालिद के जानशीन : हज़रते सुलैमान عَلَیْہِ السَّلَام अपने वालिद हज़रते दाऊद عَلَیْہِ السَّلَام के जानशीन हैं चुनान्चे इरशादे बारी तआ़ला है : ﴿وَوَرِثَ سُلَیْمٰنُ دَاوٗدَ﴾ तर्जमए कन्ज़ुल ईमान: और सुलैमान दाऊद का जानशीन हुवा। (پ19، النمل:16)

आयत में नुबुव्वत, इ़ल्म और मुल्क की जानशीनी मुराद है माल की विरासत मुराद नहीं। (सिरातुल जिनान, 7/186)

3 आप परिन्दों की बोली समझते : अल्लाह पाक ने परिन्दों की बोली भी आप عَلَیْہِ السَّلَام को सिखाई चुनान्चे इरशादे बारी तआ़ला है : ﴿وَقَالَ یٰۤاَیُّهَا النَّاسُ عُلِّمْنَا مَنْطِقَ الطَّیْرِ﴾ तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और कहा ऐ लोगो हमें परिन्दों की बोली सिखाई गई। (پ19، النمل:16)

च्यूंटियों की मलिका ने अपनी दीगर च्यूंटियों से जो कहा क़ुरआने करीम में उस का ज़िक्र यूं हुवा : ﴿یٰۤاَیُّهَا النَّمْلُ ادْخُلُوْا مَسٰكِنَكُمْۚ لَا یَحْطِمَنَّكُمْ سُلَیْمٰنُ وَ جُنُوْدُهٗۙ وَ هُمْ لَا یَشْعُرُوْنَ(۱۸)﴾ तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ च्यूंटियो अपने घरों में चली जाओ तुम्हें कुचल न डालें सुलैमान और उन के लश्कर बेख़बरी में। (پ19، النمل:18)

जब च्यूंटी ने येह कहा तो हज़रते सुलैमान عَلَیْہِ السَّلَام ने दूर से ही उस च्यूंटी की बात सुन ली और मुस्कुरा दिए, चुनान्चे इरशादे बारी तआ़ला है : ﴿فَتَبَسَّمَ ضَاحِكًا مِّنْ قَوْلِهَا وَ قَالَ رَبِّ اَوْزِعْنِیْۤ اَنْ اَشْكُرَ نِعْمَتَكَ الَّتِیْۤ اَنْعَمْتَ عَلَیَّ وَ عَلٰى وَالِدَیَّ وَ اَنْ اَعْمَلَ

﴿صَالِحًا تَرْضٰىهُ وَاَدْخِلْنِیْ بِرَحْمَتِكَ فِیْ عِبَادِكَ الصّٰلِحِیْنَ(۱۹)﴾ तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : तो उस की बात से मुस्कुरा कर हंसा और अ़र्ज़ की ऐ मेरे रब मुझे तौफ़ीक़ दे कि मैं शुक्र करूं तेरे एह़सान का जो तू ने मुझ पर और मेरे मां बाप पर किए और येह कि मैं वोह भला काम करूं जो तुझे पसन्द आए और मुझे अपनी रह़मत से अपने उन बन्दों में शामिल कर जो तेरे क़ुर्बे ख़ास के सज़ावार हैं। (پ19،النمل:19)

4 हवाओं पर हुकूमत : अल्लाह तआ़ला ने आप को हवाओं पर भी हुकूमत अ़ता फ़रमाई है चुनान्चे क़ुरआने करीम में है : ﴿وَلِسُلَیْمٰنَ الرِّیْحَ عَاصِفَةً تَجْرِیْ بِاَمْرِهٖۤ اِلَى الْاَرْضِ الَّتِیْ بٰرَكْنَا فِیْهَاؕ وَكُنَّا بِكُلِّ شَیْءٍ عٰلِمِیْنَ(۸۱)﴾ तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और सुलैमान के लिए तेज़ हवा मुसख़्ख़र कर दी कि उस के हुक्म से चलती उस ज़मीन की त़रफ़ जिस में हम ने बरकत रखी और हम को हर चीज़ मालूम है। (پ17،الانبیاء:81)

5 आप عَلَیْهِ السَّلَام के लश्कर : आप عَلَیْهِ السَّلَام के लश्कर में इन्सानों के इ़लावा जिन्नात और परिन्दे भी होते थे चुनान्चे अल्लाह पाक ने फ़रमाया : ﴿وَحُشِرَ لِسُلَیْمٰنَ جُنُوْدُهٗ مِنَ الْجِنِّ وَالْاِنْسِ وَالطَّیْرِ فَهُمْ یُوْزَعُوْنَ(۱۷)﴾ तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और जमा किए गए सुलैमान के लिए उस के लश्कर जिन्नों और आदमियों और परिन्दों से तो वोह रोके जाते थे। (پ19،النمل:17)

6 आप के लिए जिन्नात काम करते : जिन्नात ह़ज़रते सुलैमान عَلَیْهِ السَّلَام के लिए काम करते चुनान्चे इरशाद है : ﴿یَعْمَلُوْنَ لَهٗ مَا یَشَآءُ مِنْ مَّحَارِیْبَ وَتَمَاثِیْلَ وَجِفَانٍ كَالْجَوَابِ وَقُدُوْرٍ رّٰسِیٰتٍؕ اِعْمَلُوْۤا اٰلَ دَاوٗدَ شُكْرًاؕ وَقَلِیْلٌ مِّنْ عِبَادِیَ الشَّكُوْرُ(۱۳)﴾ तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : उस के लिए बनाते जो वोह चाहता ऊंचे ऊंचे मह़ल और तस्वीरें और बड़े ह़ौज़ों के बराबर लगन और लंगरदार देगें और दाऊद वालो शुक्र करो और मेरे बन्दों में कम हैं शुक्र वाले। (پ22،سبا:13)

अल्लाह तआ़ला से दुआ़ है कि हमें तमाम अम्बियाए किराम عَلَیْهِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام और नेक बन्दों की मह़ब्बत अ़ता फ़रमाए और उन की सीरत व तज़्किरा पढ़ कर अ़मल करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए। आमीन

मुतालआ़ए फ़िक़्ह व मसाइल की ज़रूरत व अहमियत

हाफ़िज़ मुहम्मद ज़ाहिद रज़ा अ़त्तारी
(मर्कज़ी जामिअ़तुल मदीना)

इस्लाम एक मुकम्मल ज़ाबित़ए ह़यात है जो इन्सानी ज़िन्दगी के हर शोबे में राहनुमाई फ़राहम करता है। इ़बादात, मुआ़मलात, मुआ़शरत, मईशत, सियासत और अख़्लाक़ियात समेत ज़िन्दगी के तमाम पहलूओं में शरई अह़काम की मारेफ़त ह़ासिल करना हर मुसलमान की बुन्यादी ज़रूरत है। इन अह़काम की तफ़्सीली मारिफ़त फ़िक़्हे इस्लामी के ज़रीए ह़ासिल होती है, इस लिए फ़िक़्ही मसाइल का मुतालआ़ फ़र्द और मुआ़शरे दोनों के लिए निहायत ज़रूरी और अहम है।

मुतालआ़ए फ़िक़्ह व मसाइल की ज़रूरत व अहमियत के मुतअ़ल्लिक़ चन्द पॉइन्ट पढ़िए और अ़मल कीजिए :

1 इ़बादात की सेह़त के लिए : नमाज़, रोज़ा, ज़कात और ह़ज जैसे फ़राइज़ की दुरुस्त अदाएगी फ़िक़्ही मसाइल के इ़ल्म के बग़ैर मुम्किन नहीं। वुज़ू के फ़राइज़, नमाज़ के अरकान और रोज़े के मुफ़्सिदात वग़ैरा जानना हर मुसलमान के लिए ज़रूरी है। फ़िक़्ही मुतालआ़ इस बात का ज़रीआ़ बनता है कि इ़बादात सुन्नत के मुताबिक़, सह़ीह़ त़रीक़े से और इत़मीनाने क़ल्ब के साथ अदा हों।

2 ह़ुस्ने मुआ़शरत और ह़ुक़ूक़ की अदाएगी : ह़ुस्ने मुआ़शरत और ह़ुक़ूक़ की अदाएगी भी दीन का ह़िस्सा है। वालिदैन,

औलाद, बहन भाई, शौहर, बीवी, रिश्तेदार, पड़ोसी, दोस्त, मुलाज़िमीन, आजिर, ख़रीदार, फ़रोख़्त कुनन्दा और मुआशरे के हर फ़र्द के हुक़ूक़ शरीअ़त ने वाज़ेह फ़रमाए हैं। उन हुक़ूक़ की सहीह पहचान भी फ़िक़्ही मुतालए से हासिल होती है। इसी तरह निकाह, तलाक़, विरासत, ख़रीदो फ़रोख़्त और दीगर मुआमलात के शरई अहकाम जानने से मुआशरती तनाज़आत कम होते हैं और अ़द्लो इन्साफ़ क़ाइम होता है।

3 **जदीद मसाइल से आगाही के लिए :** जदीद दौर में इस्लामी बैंकारी, इन्शोरन्स, आज़ा की पैवन्द कारी, मस्नूई बार आवरी, डिजीटल तिजारत और क्रिप्टो करन्सी जैसे नए मसाइल सामने आ रहे हैं। इन मसाइल के शरई अहकाम जानने के लिए फ़िक़्ही तह़क़ीक़ और फ़िक़्ही ज़ख़ीरे का मुतालआ नागुज़ीर है।

4 **कस्बे मआश के लिए मुतालआए फ़िक़्ह व मसाइल की अहमियत :** रोज़गार और कस्बे मआश हर इन्सान की बुन्यादी ज़रूरत है, मगर इस्लाम सिर्फ़ कमाने का नहीं बल्कि हलाल कमाने का हुक्म देता है। तिजारत, मुलाज़मत, शिराकत, ख़रीदो फ़रोख़्त, क़र्ज़, उधार, ज़मानत, कमीशन, ऑनलाइन कारोबार, उजरत, मुलाज़मत के हुक़ूक़ और माली लेन देन से मुतअ़ल्लिक़ बेशुमार शरई अहकाम ऐसे हैं जिन से नावाक़िफ़िय्यत इन्सान को सूद, धोके, झूट, ख़ियानत, रिश्वत और दीगर नाजाइज़ मुआमलात में मुब्तला कर सकती है। जो शख़्स फ़िक़्ही मसाइल का मुतालआ करता रहता है वोह अपने कारोबार और रोज़गार को शरीअ़त के मुताबिक़ रखने की कोशिश करता है, उस की कमाई पाकीज़ा होती है, इस के मुआमलात शफ़्फ़ाफ़ होते हैं और उस की ज़िन्दगी में बरकत पैदा होती है।

5 **अ़स्रे हाज़िर में मुतालआए फ़िक़्ह की ज़रूरत :** मौजूदा ज़माने में हर रोज़ नए मसाइल सामने आते हैं जिन पर उ़लमाए किराम और मुफ़्तियाने उ़ज़्ज़ाम क़ुरआनो हदीस और फ़िक़्ही उसूलों की रौशनी में तह़क़ीक़ कर के उम्मत की राहनुमाई करते हैं। मिसाल के तौर पर माहनामा फ़ैज़ाने मदीना में शाएअ होने वाला सिल्सिला **"अहकामे तिजारत"** ताजिरों और आम मुसलमानों को रोज़ मर्रा के जदीद तिजारती मसाइल से आगाह करता है। इस तरह दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत और मुस्तनद उ़लमा की जानिब से शाएअ होने वाले फ़तावा भी अ़मली ज़िन्दगी में बहुत ज़ियादा राहनुमाई फ़राहम करते हैं।

अल्लाह पाक हमें इ़ल्मे दीन हासिल कर के इस पर अ़मल करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए। اٰمِین بِجاہِ النّبیِّ الْاَمِین صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

तवाज़ोअ और आजिज़ी की नबवी तालीमात

मुहम्मद दानियाल
(दर्जए ख़ामिसा जामिअ़तुल मदीना)

नबिय्ये करीम صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने न सिर्फ़ अपनी उम्मत को आजिज़ी व इन्किसारी की तालीमात दीं बल्कि ख़ुद भी उस पर अ़मल किया। आप عَلَیْہِ السَّلَام की आजिज़ी का तो येह आलम था कि ग़ैरमुस्लिम भी फ़िदा हो जाते और इस्लाम क़बूल कर लेते। अल्लाह के लिए आजिज़ी और तवाज़ोअ इख़्तियार करना येह एक ऐसी ख़ूबी है जो अल्लाह अपने पसन्दीदा बन्दों को ही अ़ता फ़रमाता और जो अल्लाह के जितना ज़ियादा क़रीब होता है वोह उतना ही आजिज़ी और तवाज़ोअ करने वाला होता है।

आइए ! सब स पहले जान लेते हैं कि तवाज़ोअ और आजिज़ी किसे कहते हैं :

तवाज़ोअ की तारीफ़ : नफ़्स को कमतर और हक़ीर जानने के ख़याल को **"तवाज़ोअ"** कहते हैं और उसी से आजिज़ी व इन्किसारी पैदा होती है। (मिन्हाजुल आ़बिदीन मुतर्जम, स. 176)

अल्लाह पाक अपने महबूब बन्दों की तारीफ़ इस सिफ़त (यानी आजिज़ी वाली ख़ूबी) के साथ यूं बयान फ़रमाता है : ﴿وَعِبَادُ الرَّحْمٰنِ الَّذِیْنَ یَمْشُوْنَ عَلَى الْاَرْضِ هَوْنًا وَّ اِذَا خَاطَبَهُمُ الْجٰهِلُوْنَ قَالُوْا سَلٰمًا(۶۳)﴾ तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और रहमान के वोह बन्दे कि ज़मीन पर आहिस्ता चलते हैं और जब जाहिल उन से बात करते हैं तो कहते हैं बस सलाम। (پ19، الفرقان:63)

अहादीसे मुबारका में आजिज़ी इख़्तियार करने की तरग़ीब दी गई है और इस के बेशुमार फ़ज़ाइल बयान हुए हैं। आइए ! इस बारे में चार अहादीसे मुबारका पढ़िए :

1 आजिज़ी इख़्तियार करने का हुक्म : हज़रते अयाज़ बिन हिमार رضی اللہ عنہ से मरवी है कि रसूलुल्लाह صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم ने फ़रमाया : बेशक अल्लाह पाक ने मेरी तरफ़ वही फ़रमाई कि तवाज़ोअ़ (यानी आजिज़ी) इख़्तियार करो, यहां तक कि कोई शख़्स किसी दूसरे पर फ़ख़्र न करे और न ही कोई किसी पर ज़ियादती करे। (مسلم، ص1174، حدیث:7210)

2 इ़ज़्ज़ व इन्किसार इख़्तियार करने की दुनियावी बरकत : रिवायत है हज़रते उ़मर رضی اللہ عنہ से आप ने मिम्बर पर फ़रमाया : ऐ लोगो आजिज़ी इख़्तियार करो क्यूंकि मैं ने रसूलुल्लाह صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم को फ़रमाते हुए सुना कि जो अल्लाह तआ़ला के लिए इन्किसार व इ़ज़्ज़ करता है अल्लाह उसे ऊंचा कर देता है तो वोह अपने दिल का छोटा होता है और लोगों की निगाह में बड़ा। और जो ग़ुरूर करता है अल्लाह तआ़ला उसे नीचा कर देता है तो वोह लोगों की निगाह में छोटा होता है और अपने दिल में बड़ा हत्ता कि वोह लोगों के नज़्दीक कुत्ते और सुवर से ज़ियादा ज़लील होता है। (مشکاۃ المصابیح،2/234، حدیث:5119)

3 रिज़ाए इलाही के लिए आजिज़ी : हज़रते अबू हुरैरा رضی اللہ عنہ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم ने इरशाद फ़रमाया : किसी को मुआ़फ़ कर देने से अल्लाह पाक बन्दे की इ़ज़्ज़त ही बढ़ाता है और जो अल्लाह तआ़ला की ख़ातिर तवाज़ोअ़ इख़्तियार करता है अल्लाह पाक उसे बुलन्दी ही अ़ता फ़रमाता है। (مسلم، ص1071، حدیث:6592)

इन अहादीसे मुबारका से येह बात पता चली कि आजिज़ी की बड़ी अहमियत है और इस से बड़ा सवाब हासिल होता है जब कि आजिज़ी न करने वालों को दुनिया और आख़िरत दोनों में ज़िल्लत व रुस्वाई का सामना करना पड़ता है। लिहाज़ा हमें चाहिए कि आजिज़ी इख़्तियार करें क्यूंकि येह दुनिया और आख़िरत में नजात का सबब है।

4 आजिज़ी का नबवी अन्दाज़ : हुज़ूर صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم ने अपनी पूरी हयाते मुबारका में आजिज़ी व इन्किसारी इख़्तियार की जैसा कि हदीसे पाक में है : عَنِ الْاَسْوَدِبْنِ یَزِیْدَ قَالَ: سُئِلَتْ عَائِشَةُ رَضِیَ اللهُ عَنْهَا مَا كَانَ النَّبِیُّ صَلَّى اللهُ عَلَیْهِ وَسَلَّمَ یَصْنَعُ فِیْ بَیْتِهٖ قَالَتْ: كَانَ یَكُوْنُ فِیْ مِهْنَةِ اَهْلِهٖ، یَعْنِیْ: خِدْمَةَ اَهْلِهٖ فَاِذَا حَضَرَتِ الصَّلَاةُ، خَرَجَ اِلَى الصَّلَاةِ तर्जमा : हज़रते अस्वद बिन यज़ीद رحمۃ اللہ علیہ फ़रमाते हैं : उम्मुल मोमिनीन हज़रते आइशा सिद्दीक़ा رضی اللہ عنہا से पूछा गया कि हुज़ूर नबिय्ये करीम صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم की घर में क्या मशग़ूलिय्यत होती थी ? फ़रमाया : शहंशाहे दो आ़लम, नूरे मुजस्सम صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم घरेलू कामों में अपने अहले ख़ाना का हाथ बटाया करते और जब नमाज़ का वक़्त होता तो नमाज़ के लिए तशरीफ़ ले जाते। (بخاری،1/241، حدیث:676)

ख़ुलासए कलाम येह है कि आजिज़ी के मुतअ़ल्लिक़ नबवी तालीमात का एक वसीअ़ ज़ख़ीरा मौजूद है और अहादीसे मुबारका में जा बजा इस के फ़ज़ाइलो बरकात का ज़िक्र मिलता है। हमें भी आजिज़ी को लाज़िमी अल्लाह की रिज़ा के लिए इख़्तियार करना चाहिए। येह मुत्तक़ीन और अबरार (यानी नेक लोगों की सिफ़त है जो चुने हुए बन्दों को ही मिलती है लिहाज़ा इस के लिए दुआ भी करते रहना चाहिए।

अल्लाह पाक हमें तवाज़ोअ़ व आजिज़ी इख़्तियार करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए। اٰمِیْن بِجَاہِ خَاتَمِ النَّبِیّٖن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

बच्चों के लिए प्यारी ह़दीस

राज़ Secret की हिफ़ाज़त कीजिए

हमारे प्यारे और आख़िरी नबी, मक्की मदनी मुस्तफ़ा صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : اَلْمَجَالِسُ بِالْاَمَانَةِ यानी मजलिसें अमानत हैं।[1]

यानी जब कोई ख़ास मजलिस या मीटिंग की जाए, वहां जो कुछ तै हो उसे आ़म न करो बल्कि सीग़ए राज़ में रखो कि वहां जो कुछ हुवा वोह अमानत (यानी राज़) है।[2]

राज़ येह है कि अम्मी अब्बू, टीचर या कोई दोस्त आप को कोई बात बताए और कहे कि किसी को न बताना येह राज़ कहलाता है।

राज़ की हिफ़ाज़त करना बहुत अच्छी आ़दत है। जो बच्चा दूसरों के राज़ छुपाता है, लोग उस पर एतिमाद करने लगते हैं, उस की इ़ज़्ज़त बढ़ जाती है और उसे अमानतदार समझते हैं। लेकिन जो बच्चा दूसरों के राज़ की बातें इधर उधर कर देता है, उस से दोस्तियां टूट जाती हैं और लोग उस से दूर रहने लगते हैं। उसे कम अ़क़्ल समझा जाता है। इसी लिए हमें दूसरों के राज़ की बातों को हमेशा छुपा कर रखना चाहिए।

ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللہُ عَنْہُ एक अ़ज़ीम सह़ाबी हैं जो कि बचपन ही से रसूले करीम صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के पास रहे, आप बचपन में भी रसूले करीम صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के राज़ की हिफ़ाज़त करते थे, आप फ़रमाते हैं कि मैं बच्चों के साथ खेल रहा था, तो प्यारे आक़ा صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم वहां तशरीफ़ लाए और सलाम करने के बाद मुझे एक ख़ास काम से कहीं भेजा। उस काम की वजह से मुझे घर पहुंचने में देर हो गई तो अम्मी ने पूछा : बेटा ! तुम्हें देर क्यूं हुई ? मैं ने जवाब दिया : मुझे अल्लाह के रसूल صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने एक काम से भेजा था। अम्मी ने पूछा : वोह क्या काम था ? मैं ने अ़र्ज़ की : अम्मी ! वोह एक राज़ (Secret) है। तो अम्मी ने फ़रमाया : बेटा ! फिर रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का राज़ किसी को हरगिज़ न बताना।[3]

सिर्फ़ बच्चे ही नहीं बड़े सह़ाबए किराम भी राज़ की हिफ़ाज़त करने वाले थे, ह़ज़रते हुज़ैफ़ा बिन यमान رَضِیَ اللہُ عَنْہُ राज़दारे मुस्तफ़ा ही मारूफ़ हैं क्यूंकि आप ने नबिय्ये करीम صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का एक राज़ सारी ज़िन्दगी किसी को नहीं बताया था।

प्यारे बच्चो ! देखा आप ने ! एक छोटे बच्चे ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللہُ عَنْہُ से ले कर बड़े सह़ाबी ह़ज़रते हुज़ैफ़ा رَضِیَ اللہُ عَنْہُ तक, सब ने राज़ की हिफ़ाज़त को अपनी ज़िन्दगी का हिस्सा बनाया।

अच्छे बच्चो ! हमें चाहिए कि अगर कोई दोस्त, बहन भाई या घर वाला हमें कोई राज़ की बात बताए तो उसे किसी से भी शेयर ना करें। इसी त़रह जब अब्बू, अम्मी या बड़े भाई वग़ैरा किसी नए कारोबार, बजट की मन्सूबा बन्दी पर बात करें या घर में किसी की शादी की बात चल रही हो तो येह बातें भी घर के राज़ हैं येह बातें घर की चार दीवारी में ही रहनी चाहिएं। इसी त़रह बाज़ बच्चे अपने घर के खाने पीने, ख़रीदो फ़रोख़्त वग़ैरा की हर बात दूसरों को बताते रहते हैं, उन्हें भी इस से परहेज़ करना चाहिए।

याद रहे कि अगर कोई राज़ किसी मुसलमान को नुक़्सान पहुंचाने वाला हो या किसी का माल चुराने के मुतअ़ल्लिक़ हो या किसी पर ज़ुल्म करने के बारे में हो तो येह राज़ नहीं है ऐसी बात छुपाने की बजाए फ़ौरन अम्मी या अब्बू या किसी बड़े को बता देनी चाहिए।

अल्लाह पाक हमें राज़ की हिफ़ाज़त करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए। اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

(1) ابوداؤد، 4/351، حدیث: 4869 (2) مراٰۃ المناجیح، 6/630 (3) مسلم، ص1035، حدیث:6378۔

बाग़ के फलों की दुरुस्त मिक़्दार बता दी

अल्लाह पाक ने अपने आख़िरी नबी, हज़रत मुहम्मदे मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को बेशुमार मोजिज़ात अ़ता फ़रमाए। उन मोजिज़ात के ज़रीए एक त़रफ़ तो लोगों को आप की रिसालत पर यक़ीने क़ल्बी ह़ासिल होता और दूसरी त़रफ़ अहले ईमान के ईमान को तक़्वियत नसीब होती। आइए ! आज हम हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के एक ऐसे ही प्यारे मोजिज़े के बारे में पढ़ते हैं।

ह़ज़रते अबू ह़मीद साइदी رَضِیَ اللهُ عَنْه बयान करते हैं : हम रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के साथ ग़ज़्वए तबूक के साल निकले। जब हम वादियुल क़ुरा पहुंचे तो वहां एक औ़रत अपने बाग़ में थी। रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपने सह़ाबा से फ़रमाया : इस बाग़ की पैदावार का अन्दाज़ा लगाओ। चुनान्चे सह़ाबा ने कुछ न कुछ अन्दाज़ा लगाया और रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने भी अन्दाज़ा लगाया कि इस की पैदावार दस वस्क़ होगी। फिर आप ने उस औ़रत से फ़रमाया : اِنْ شَآءَ الله ! मैं वापस आऊंगा जब तक तुम इस बाग़ से ह़ासिल होने वाली पैदावार का ह़िसाब मह़फ़ूज़ रखना (यानी फल तोड़ कर तोल लेना वज़्न याद रखना)। फिर हम आगे रवाना हुए यहां तक कि तबूक पहुंच गए। फिर (तबूक से फ़ारिग़ हो कर) आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم वापस रवाना हुए, हम भी आप के साथ थे। जब दोबारा वादियुल क़ुरा पहुंचे तो आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उस औ़रत से फ़रमाया : तुम्हारे बाग़ की पैदावार कितनी हुई ? उस ने बिल्कुल वोही दस वस्क़[1] की मिक़्दार बताई जिसा का रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अन्दाज़ा बयान फ़रमाया था।[2]

यक़ीनन येह हुज़ूर का मोजिज़ा है कि हुज़ूरे अनवर का अन्दाज़ा ऐसा दुरुस्त था कि उस में एक तोले का भी फ़र्क़ न हुवा येह मह़ज़ अन्दाज़ा न था वरना कुछ फ़र्क़ होता बल्कि ये हुज़ूरे अनवर का इल्मे ग़ैब था।

- मुसलमान को चाहिए कि अपने हर काम में सच्चाई को इख़्तियार करे।
- आइन्दा किसी काम का इरादा करते वक़्त "اِنْ شَآءَ الله" कहना चाहिए, क्यूंकि हर काम अल्लाह पाक की मशिय्यत से ही पूरा होता है।

❁ अपने माली और कारोबारी मुआ़मलात का ह़िसाब किताब मह़फ़ूज़ रखना चाहिए ताकि बाद में किसी इख़्तिलाफ़ या परेशानी का सामना न हो और ज़कात वग़ैरा का ह़िसाब लगाने में मुफ़ीद हो।

❁ सफ़र, मसरूफ़िय्यत या ज़िम्मेदारियों के बावुजूद अपनी बात को पूरा करना चाहिए।

❁ इन्सान को चाहिए कि जो बात कहे या वादा करे उसे याद रखे और मौक़अ़ आने पर उस की त़रफ़ ज़रूर तवज्जोह दे।

❁ अपने मातह़तों की ज़ेहनी सलाह़िय्यतों, तजरिबों और पोशीदा महारतों को वक़्तन फ़ वक़्तन मुख़्तलिफ़ ज़ावियों से परखना चाहिए ताकि ज़रूरत पड़ने पर उन से सलाह़िय्यतों के मुत़ाबिक़ काम लिया जा सके या उन की कारकर्दगी पर भरोसा किया जा सके।

❁ छोटे या मामूली नज़र आने वाले मुआ़मलात भी अहम होते हैं, इस लिए उन में भी ज़िम्मेदारी और एह़तियात़ का मुज़ाहरा करना चाहिए।

❁ दूसरों के मुआ़मलात में दिलचस्पी लेने का मक़्सद उन की ख़ैरख़्वाही और रहनुमाई होनी चाहिए, न कि बेजा तजस्सुस।

❁ दूसरों के मुआ़मलात में सिर्फ़ इसी सूरत में दिलचस्पी लेनी चाहिए जब कि उसे बुरा न लगे।

❁ अपनी बात की सदाक़त या सह़ीह़ मक़्सद से अपनी महारत व कमाल दूसरों पर ज़ाहिर करना मायूब नहीं।

❁ बड़ों को चाहिए कि वोह ज़रूरी चीज़ों का ह़िसाब किताब रखें और अपनी कही बातों और मुआ़हदों को पूरा करें ताकि छोटे उन के रवय्यों से अच्छी चीज़ें सीखें।

---

(1) वस्क़ ग़ल्ले या फल की पैमाइश की एक क़दीम उकाई है। एक वस्क़ 60 साअ़ का होता है और साअ़ तक़रीबन साढ़े चार सैर का यानी 4 किलो से 160 ग्राम कम।

(2) دیکھیے: مسند امام احمد، 39/16، حدیث: 23604۔

हुरूफ़ मिलाइये !

प्यारे बच्चो ! माहे रबीउ़ल आख़िर इस्लामी साल का चौथा महीना है। इस महीने को ह़ुज़ूर ग़ौसे पाक رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه से ख़ुसूसी निस्बत ह़ासिल है। ग़ौसे पाक رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ग़रीबों का बहुत ज़ियादा ख़याल रखते और भूकों को खाना खिलाते थे। एक दफ़ा फ़रमाया : मेरे नज़्दीक भूकों को खाना खिलाना और लोगों से ह़ुस्ने अख़्लाक़ के साथ पेश आना बहुत ज़ियादा फ़ज़ीलत वाले आमाल हैं। फिर इरशाद फ़रमाया : मेरे हाथ में पैसा नहीं ठहरता, अगर सुब्ह़ को मेरे पास हज़ार दीनार (यानी सोने के सिक्के) आए तो शाम तक उन में से एक पैसा भी न बचे कि ग़रीबों और मोह़ताजों में तक़्सीम कर दूं और भूके लोगों को खाना खिला दूं। (دیکھیے: قلائد الجواہر، ص8) येह अ़मल हमें भी अपनाना चाहिए। अल्लाह पाक हमें ग़रीबों की ख़ैरख़्वाही करने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए।

و	ع	ر	ت	ب	ی	ر	غ	پ
ز	ش	چ	ط	ب	م	ن	ق	م
ا	ل	ا	ی	خ	ص	ذ	ر	ک
س	ش	ت	ب	د	م	ح	ح	ل
د	ن	ا	ق	ر	ف	و	س	ذ
ف	س	ب	ن	ا	ہ	ر	ن	ژ
گ	ب	خ	ث	و	غ	ڈ	ص	ث
ھ	ت	غ	ؤ	آ	ۃ	ٹ	ڑ	ظ

आप ने ऊपर से नीच, दाएं से बाए हुरूफ़ मिला कर पांच अलफ़ाज़ तलाश करने हैं जैसे टेबल में लफ़्ज़ **“ह़म्द”** तलाश कर के बताया गया है। तलाश किए जाने वाले 5 अलफ़ाज़ येह हैं : 1 نسبت 2 حسن 3 غوث 4 خیال 5 غریب۔

मक्कार बूढ़ा

ब्रेक के बाद पहला पीरियड शुरूअ़ हो चुका था लेकिन सर सज्जाद अभी तक क्लास में नहीं आए थे, बच्चे सबक़ दोहराई के बाद अब बातें शुरूअ़ कर चुके थे तो क्लास मोनीटर मुआ़विया ने उसैद रज़ा को क्लास रूम में बच्चों की निगरानी के लिए खड़ा किया और ख़ुद सर सज्जाद को देखने चले गए। स्टाफ़ रूम का दरवाज़ा खटखटा कर अन्दर दाख़िल हुए तो सारा रूम ख़ाली था बस सर बिलाल मेज़ के कनारे पे रखी कुर्सी पर बैठे किसी किताब के मुतालए़ में मगन थे।

السلام علیکم ! सर, आप ने सज्जाद साहिब को देखा है ? मुआ़विया ने सर बिलाल से पूछा लेकिन शायद सर को सुनाई नहीं दिया, मुआ़विया ने मज़ीद आगे जा कर थोड़ी ऊंची आवाज़ से दोबारा पूछा, लेकिन कोई जवाब नहीं, फिर तीसरी बार ऊंचे से सर कहने पर सर बिलाल ने घूम कर देखा, सर मुआ़विया को सुवालिया नज़रों से देख रहे थे तो मुआ़विया को समझ आ गई कि सर को मेरा सुवाल नहीं सुनाई दिया था, तो उन्हों ने फिर से पूछा : सर सज्जाद आज नहीं आए ?

सर बिलाल : नहीं शायद, आप डिसिप्लिन ऑफ़ीसर से पूछ लें बेटा, वोह गैलरी में होंगे, इतना कह कर सर दोबारा किताब पढ़ने लगे।

डिसिप्लिन ऑफ़ीसर ने बताया कि सर सज्जाद आज छुट्टी पर हैं, आप क्लास में चलें मैं किसी और उस्ताद साहिब को आप की क्लास में भेजता हूं। मुआ़विया क्लास में आ कर बैठे ही थे कि पीछे सर बिलाल चले आए।

सलाम और ह़ाल अह़वाल के बाद सर बिलाल ने सबक़ का पूछा तो सभी बच्चे बुलन्द आवाज़ से कहने लगे कि सर आज इस्लामी वाक़िआ़ सुना दें।

बच्चों की बात सुन कर सर बिलाल कुर्सी पर बैठ गए तो मुआ़विया खड़े हुए और कहने लगे : सर ऐसा करें आज जो किताब आप पढ़ रहे थे उसी में से कोई बात सुना दें, जितनी तवज्जोह से आप वोह पढ़ रहे थे यक़ीनन बड़ी दिलचस्प किताब होगी।

सर बिलाल येह सुन कर कुछ सोचने लगे और फिर बोले : दर अस्ल मैं आज कल उन मुसलमानों की तारीख़ पढ़ रहा हूं जिन्हों ने शुरूअ़ से आज तक ख़त्मे नुबुव्वत के नाम पर अपनी जानें क़ुरबान की हैं। आप को पता है मुसलमानों में से सब से पहले किस ने ख़त्मे

नुबुव्वत के दुश्मनों के ख़िलाफ़ जंग किया था ?

सर बिलाल के सुवाल पर सारी क्लास ख़ामोश रही तो सर ख़ुद ही बताने लगे : ख़त्मे नुबुव्वत के दुश्मनों के ख़िलाफ़ सब से पहले जिहाद करने वाले हज़रते सय्यिदुना सिद्दीक़े अकबर رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ थे। चलें फिर शुरूअ़ से शुरूअ़ करते हैं, 10 हिजरी को बनी ह़नीफ़ा क़बीले का एक वफ़्द (Delegation) नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुवा, एक शख़्स मुसैलमा कज़्ज़ाब के सिवा सारे वफ़्द ने इस्लाम क़बूल कर लिया, वोह शख़्स बूढ़ा हो चुका था लेकिन बहुत मक्कार और चालाक था, उस ने इस्लाम क़बूल करने के लिए अ़जीबो ग़रीब शर्त़ पेश की।

हैं ??? इस्लाम के लिए कोई शर्त़ कैसे रख सकता है ? उसैद रज़ा ने कहा

सर बिलाल : येही तो उस शख़्स की बेवुक़ूफ़ी थी, कहने लगा : अगर मुह़म्मद صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अपने बाद ख़िलाफ़त मुझे अ़ता फ़रमा दें तो मैं उन की इत्तिबाअ़ करूंगा और ईमान क़बूल कर लूंगा। यानी हुज़ूर के बाद मैं मुसलमानों का अमीर (leader) बन जाऊं। तब आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के हाथ मुबारक में खजूर की शाख़ थी, उस की फ़रमाइश सुन कर आप ने फ़रमाया : अगर तू मुझ से येह लकड़ी का टुकड़ा भी मांगे तो न दूं। (यानी ख़िलाफ़त तो बहुत दूर की बात है।)

येह सुन कर वोह शख़्स ख़ामोशी से वापस चला गया लेकिन अपने अ़लाक़े में पहुंच कर उस ने नुबुव्वत का झूटा दावा कर दिया, शुरूअ़ में तो बहुत कम लोग उस के साथ थे लेकिन जैसे ही नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم दुनिया से तशरीफ़ ले गए, उस के धोके की दुकान चल पड़ी, देखते ही देखते बहुत से लोग उस के धोके में आ गए और उस के साथ मिल गए। रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के पहले ख़लीफ़ा सय्यिदुना सिद्दीक़े अकबर رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ ने उस झूटे शख़्स को सबक़ सिखाने के लिए एक फ़ौजी लश्कर रवाना किया जिस के कमान्डर सय्यिदुना इ़करिमा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ थे, लेकिन दुश्मन चूंकि एक लाख की फ़ौज ले कर आया था, इस लिए उस का पल्ला बहुत भारी था, सख़्त मुक़ाबला हुवा लेकिन जंग का फ़ैसला न हो सका, पीछे मुसलमानों की मदद के लिए एक और लश्कर आ पहुंचा लेकिन कोई नतीजा न निकला, आख़िरेकार अल्लाह की तल्वार, मुसलमानों के अ़ज़ीम जरनैल सह़ाबी ह़ज़रते ख़ालिद बिन वलीद अपने मुसलमान भाइयों की मदद को पहुंचे, बड़ी सख़्त जंग हुई, कहां एक लाख का लश्कर और कहां चन्द हज़ार मुसलमान, लेकिन मुसलमानों ने अ़ज़ीम मक़्सद यानी अ़क़ीदए ख़त्मे नुबुव्वत की ह़िफ़ाज़त की ख़ात़िर जानों की भी परवाह न करते हुए बेजिगरी से दुश्मन का मुक़ाबला किया, 1200 से ज़ाइद सह़ाबए किराम शहीद हुए और बिल आख़िर नुबुव्वत का झूटा दावेदार मुसैलमा कज़्ज़ाब, एक सह़ाबी ह़ज़रते सय्यिदुना वह़शी के नेज़े से मर कर जहन्नम में पहुंच गया और यूं नुबुव्वत के झूटे दावेदार का क़िस्सा तमाम हुवा।

कामरान : सर इस जंग में कौन से सह़ाबा शहीद हुए थे ?

सर बिलाल : जी बेटा येह तो ऐसी ख़त़रनाक जंग थी कि जिस में बड़े बड़े मर्तबे (Status) वाले सह़ाबए किराम ने शहादत ह़ासिल की, सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आज़म رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ के बड़े भाई ह़ज़रते ज़ैद बिन ख़त्ताब भी उन में शामिल थे। और पता है उस जंग में बहुत से ऐसे सह़ाबए किराम जिन्हों ने ख़ुद नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के ज़माने में क़ुरआने पाक ह़िफ़्ज़ किया था वोह भी शहीद हो गए थे। येह बात करते हुए सर बिलाल की आवाज़ आहिस्ता हो चुकी थी, यूं लग रहा था वोह बड़ी मुश्किल से ख़ुद को रोने से रोक रहे हैं,

तो बच्चो आइन्दा जब भी येह नारा लगाएं कि

मुह़म्मदे मुस्त़फ़ा सब से आख़िरी नबी
अह़मदे मुज्तबा सब से आख़िरी नबी

तो याद रखना इस नज़रिये की ख़ात़िर मुसलमानों ने अपनी जानें तक क़ुरबान कर दी थीं लिहाज़ा मरते दम तक हम भी इसी नज़रिये पर क़ाइम रहेंगे।

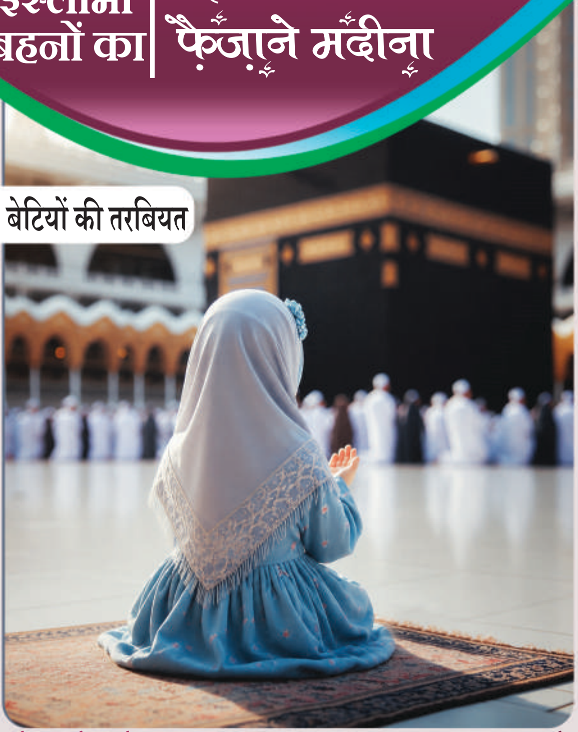

बेटियों की तरबियत

बेटियों को तवक्कुल अ़लल्लाह की तरबियत दें

अल्लाह तआ़ला ने इन्सान को इस दुनिया में आज़माइश के लिए भेजा है और हर ह़ाल में अपनी ज़ात पर भरोसा करने की तालीम दी है। क़ुरआने करीम में बार बार अहले ईमान को तवक्कुल की तल्क़ीन फ़रमाई गई है। इरशादे बारी तआ़ला है : ﴿وَ عَلَى اللّٰهِ فَلْیَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُوْنَ(۱۲۲)﴾ तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और मुसलमानों को अल्लाह ही पर भरोसा चाहिए।[1] एक और मक़ाम पर फ़रमाया : ﴿وَ مَنْ یَّتَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ فَهُوَ حَسْبُهٗؕ﴾ तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और जो अल्लाह पर भरोसा करे तो वोह उसे काफ़ी है।[2] वालिदैन ख़ुसूसन माओं की येह अहम ज़िम्मेदारी है कि वोह अपनी बेटियों की ऐसी तरबियत करें कि उन के दिल में अल्लाह पाक पर कामिल एतिमाद, उस की रह़मत पर यक़ीन और हर ह़ाल में उसी पर भरोसा करने का जज़्बा पैदा हो, क्यूंकि येही ईमान की मज़बूती और ज़िन्दगी के सुकून का अस्ल राज़ है।

आज के दौर में वालिदैन अपनी बेटियों को आला दुनियावी तालीम, जदीद हुनर, अच्छी मुलाज़मत और रौशन मुस्तक़बिल देने के लिए तो बहुत फ़िक्रमन्द नज़र आते हैं, लेकिन येह फ़िक्र निस्बतन कम दिखाई देती है कि हमारी बेटी अल्लाह तआ़ला पर कितना एतिमाद रखती है ? वोह मुश्किलात के वक़्त किस की जानिब तवज्जोह करती है ? उस का दिल अस्बाब पर ज़ियादा भरोसा करता है या अस्बाब पैदा करने वाले रब पर ? अगर सह़ीह़ तरबियत की वजह से बेटी के दिल में तवक्कुल पैदा हो जाए तो वोह कामयाबी पर ग़ुरूर नहीं करेगी और नाकामी पर मायूस भी नहीं होगी बल्कि हर ह़ाल में अपने रब के फ़ैसले पर राज़ी रहने की कोशिश करती रहेगी।

बेटियों में तवक्कुल की तरबियत का आग़ाज़ बचपन ही से होना चाहिए। सब से पहले वालिदैन ख़ुद अल्लाह तआ़ला पर एतिमाद करने वाले हों, क्यूंकि बच्चे नसीह़त से ज़ियादा वालिदैन के किरदार से सीखते हैं। अगर घर में किसी बीमारी, माली परेशानी या किसी और आज़माइश के वक़्त वालिदैन बेसब्री और शिक्वा करने के बजाए अल्लाह तआ़ला से दुआ़ करें, सब्र इख़्तियार करें और बच्चों के सामने येह कहें कि "अल्लाह तआ़ला हमारे लिए बेहतर फ़ैसला फ़रमाएगा" तो इस त़रह़ के अलफ़ाज़ और रवय्या बेटियों के दिल में अल्लाह पाक पर एतिमाद पैदा करेगा।

बेटियों को येह भी समझाया जाए कि तवक्कुल का मत़लब हाथ पर हाथ रख कर बैठ जाना नहीं बल्कि जाइज़ अस्बाब इख़्तियार करने के बाद नतीजा अल्लाह तआ़ला के सिपुर्द कर देना है। रसूले अकरम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : अगर तुम अल्लाह पर ऐसा भरोसा करो जैसा उस पर भरोसा करने का ह़क़ है तो वोह तुम्हें उसी त़रह़ रिज़्क़ अ़त़ा फ़रमाएगा जैसे परिन्दों को देता है, वोह सुब्ह़ ख़ाली पेट निकलते हैं और शाम को पेट भर कर वापस आते हैं।[3] ग़ौर कीजिए कि परिन्दे अपने घोंसलों में बैठे नहीं रहते बल्कि कोशिश करते हैं और अपने रब पर एतिमाद भी रखते हैं। येही ह़क़ीक़ी तवक्कुल है जिस की तालीम बेटियों को दी जानी चाहिए।

बेटियों के दिल में अल्लाह तआ़ला की क़ुदरत और रह़मत का यक़ीन पैदा करने के लिए क़ुरआने करीम के ईमान अफ़रोज़ वाक़िआ़त सुनाए जाएं। उन्हें बताया जाए कि ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام को जब आग में डाला गया तो उन्हों ने अपने रब पर भरोसा रखा, अल्लाह तआ़ला ने आग को उन के लिए ठन्डा और सलामती वाला बना दिया। ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام जब दरिया के किनारे पहुंचे और पीछे फ़िरऔ़न का लश्कर था तो आप ने फ़रमाया : ﴿كَلَّا ۚ اِنَّ مَعِیَ رَبِّیْ سَیَهْدِیْنِ(۶۲)﴾ तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक

मेरा रब मेरे साथ है वोह मुझे अब राह देता है।[4] **अल्लाह** तआला ने दरिया में रास्ता बना दिया। इसी त़रह ह़ज़रते मरयम رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا की कफ़ालत और रिज़्क़ के वाक़िआत बेटियों को येह यक़ीन दिलाते हैं कि अल्लाह तआला अपने बन्दों को कभी तन्हा नहीं छोड़ता।

बेटियों को दुआ की आदत डालना भी तवक्कुल की बेहतरीन तरबियत है, क्यूंकि दुआ बन्दे की त़रफ़ से अल्लाह पाक पर एतिमाद का अमली इज़्हार है। अल्लाह तआला फ़रमाता है : ﴿اُدْعُوْنِیْۤ اَسْتَجِبْ لَكُمْ ؕ﴾ तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : मुझ से दुआ करो मैं क़बूल करूंगा।[5] बच्चियों को सिखाया जाए कि हर काम से पहले अल्लाह तआला से दुआ करें, इम्तिहान से पहले, सफ़र से पहले, बीमारी के वक़्त और हर ज़रूरत में सब से पहले अपने रब की त़रफ़ रुजूअ करें। जब उन की ज़िन्दगी का हर मरह़ला दुआ से वाबस्ता होगा तो उन का तवक्कुल भी मज़बूत होता जाएगा।

बेटियों को येह भी सिखाया जाए कि मुश्किलात ज़िन्दगी का ह़िस्सा हैं और मोमिन कभी मायूस नहीं होता। रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا को नसीह़त करते हुए फ़रमाया : हुक़ूक़े इलाही की ह़िफ़ाज़त करो, अल्लाह तुम्हारी ह़िफ़ाज़त फ़रमाएगा, जब मांगो तो अल्लाह ही से मांगो और जब मदद चाहो तो अल्लाह ही से मदद चाहो।[6] येह ह़दीस बच्चों और नौजवानों की तरबियत का बेहतरीन उसूल है, क्यूंकि इस से दिल सिर्फ़ अल्लाह तआला की त़रफ़ मुतवज्जेह रहता है।

बेटियों में तवक्कुल पैदा करने के लिए दीनी मुत़ालआ भी बहुत ज़रूरी है। उन्हें क़ुरआने करीम का तर्जमा व तफ़्सीर, अम्बियाए किराम عَلَیْہِمُ السَّلَام के वाक़िआत, सीरते रसूले अकरम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم और बुज़ुर्गाने दीन के ह़ालात पर मुश्तमिल किताबें पढ़ने की तरग़ीब दी जाए। बिलख़ुसूस मक्तबतुल मदीना की ऐसी किताबें जिन में ईमान, दुआ, सब्र, शुक्र और अल्लाह तआला पर एतिमाद के मज़ामीन आसान अन्दाज़ में बयान किए गए हों उन का मुत़ालआ करवाया जाए। माओं को चाहिए कि ख़ुद भी दीनी किताबों का मुत़ालआ करें ताकि बेटियां उन के नक़्शे क़दम पर चलें।

इसी त़रह FGN चैनल पर नश्र होने वाले इस्लाही़ प्रोग्रामों ख़ुसूसन "**मदनी मुज़ाकरा**" से बेटियों का तअ़ल्लुक़ क़ाइम किया जाए। इन प्रोग्रामों में क़ुरआनो ह़दीस की रौशनी में तवक्कुल, सब्र, दुआ, शुक्र, हुस्ने अख़्लाक़ और इस्लामी त़र्ज़े ज़िन्दगी की निहायत आसान अन्दाज़ में राहनुमाई की जाती है। अगर घर के तमाम अफ़राद मिल कर ऐसे प्रोग्राम देखें और उन में बयान होने वाली बातों पर गुफ़्तगू भी करें तो बेटियों की दीनी और रूहानी तरबियत में बहुत मदद मिलेगी।

घर के माहौल को भी ऐसा बनाया जाए जहां हर नेमत पर "اَلْحَمْدُ لِلّٰہ" कहा जाए, हर जाइज़ व नेक काम से पहले "بِسْمِ اللّٰہ" पढ़ी जाए, हर मुश्किल में अल्लाह तआला की त़रफ़ रुजूअ किया जाए और हर मुआमले में दुआ का एहतिमाम हो। बेटी जब अपनी मां को हर ख़ुशी और ग़म में अल्लाह तआला पर भरोसा करते देखेगी तो उस के दिल में भी येही यक़ीन पैदा होगा कि अस्ल सहारा सिर्फ़ अल्लाह तआला की ज़ात है।

याद रखें ! बेटियों की बेहतरीन तरबियत सिर्फ़ उन्हें दुनियावी कामयाबी दिलाना नहीं बल्कि उन्हें ऐसा मज़बूत ईमान अ़त़ा करना है कि ज़िन्दगी की हर ख़ुशी और हर आज़माइश में उन का दिल अपने रब से वाबस्ता रहे। रसूले अकरम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि मेरी उम्मत में सत्तर हज़ार ऐसे ख़ुश नसीब लोग होंगे जो बग़ैर ह़िसाब के जन्नत में दाख़िल होंगे, उन की सिफ़ात में येह भी है कि वोह अपने रब पर कामिल भरोसा करते हैं।[7] येह फ़ज़ीलत इस बात की दलील है कि तवक्कुल अल्लाह तआला को बहुत पसन्द है।

अल्लाह तआला ख़ुद इरशाद फ़रमाता है : ﴿اِنَّ اللّٰهَ یُحِبُّ الْمُتَوَكِّلِیْنَ(۱۵۹)﴾ तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक तवक्कुल वाले अल्लाह को प्यारे हैं।[8] इस लिए वालिदैन, ख़ुसूसन माओं को चाहिए कि वोह अपनी बेटियों के दिल में अल्लाह तआला की मह़ब्बत, उस की क़ुदरत पर यक़ीन, दुआ का ज़ौक़, सब्रो शुक्र की आदत और तवक्कुल अ़लल्लाह की अ़ज़ीम दौलत पैदा करें, उन्हें क़ुरआनो सुन्नत से वाबस्ता करें, दीनी मुत़ालए की तरग़ीब दें, FGN चैनल और मदनी मुज़ाकरे से जोड़ें और ऐसा दीनी माह़ौल फ़राहम करें जहां हर मुआमले में एतिमाद सिर्फ़ अल्लाह पाक की ज़ात पर हो। येही तरबियत बेटियों को मज़बूत ईमान, पुरसुकून ज़िन्दगी और दुनिया व आख़िरत की ह़क़ीक़ी कामयाबी अ़त़ा करेगी।

---

(1)پ4، اٰل عمرٰن:122(2)پ28، الطلاق:3(3)ابن ماجہ، 4/452، حدیث: 4164 (4)پ19، الشعرآء: 62(5)پ24، المؤمن: 60 (6)دیکھیے: ترمذی، 4/231، حدیث:2524(7)بخاری، 4/23، حدیث:5704(8)پ4، اٰل عمرٰن: 159۔

इस्लामी बहनों के शरई मसाइल

1 औरत का हालते एहराम में ज़ेवरात पहनना कैसा ?

सुवाल : क्या फ़रमाते हैं उलमाए दीन व मुफ़्तियाने शरए मतीन इस मस्अले के बारे में कि क्या इस्लामी बहन एहराम की हालत में ज़ेवरात पहन सकती है या नहीं ?

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اَلْجَوَابُ بِعَوْنِ الْمَلِكِ الْوَهَّابِ اَللّٰهُمَّ هِدَايَةَ الْحَقِّ وَالصَّوَابِ

इस्लामी बहन एहराम की हालत में ज़ेवरात पहन सकती है कि औरत का हालते एहराम में ज़ेवरात पहनना नाजाइज़ो गुनाह नहीं अलबत्ता बचना बेहतर है क्यूंकि ज़ेवरात, ज़ीनत में दाख़िल हैं और हालते एहराम में ज़ीनत मकरूहे तन्ज़ीही है।

وَاللّٰهُ اَعْلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَ رَسُوْلُهٗ اَعْلَم صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

2 नमाज़ में बिला उ़ज़्र क़ियाम छोड़ने का शरई हुक्म

सुवाल : क्या फ़रमाते हैं उलमाए दीन व मुफ़्तियाने शरए मतीन इस मस्अले के बारे में कि बाज़ औरतों को देखा गया है कि वोह चार रकअत फ़र्ज़ नमाज़ में सिर्फ़ पहली दो रकअतें खड़े हो कर अदा करती हैं जब कि आख़िरी दो रकअतों में खड़ी नहीं होतीं, बैठे बैठे ही अदा करती हैं हालांकि उन्हें कोई उ़ज़्र भी नहीं होता, मालूम येह करना है क्या नमाज़ में औरतों को खड़ा होना लाज़िम नहीं है ? और अगर लाज़िम है तो जो नमाज़ें इस तरह अदा करती हैं, उन की नमाज़ों का क्या हुक्म होगा। बराए करम रहनुमाई फ़रमा दें।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اَلْجَوَابُ بِعَوْنِ الْمَلِكِ الْوَهَّابِ اَللّٰهُمَّ هِدَايَةَ الْحَقِّ وَالصَّوَابِ

चार रकअत फ़र्ज़ नमाज़ की तमाम रकअतों में क़ियाम फ़र्ज़ है, अगर एक रकअत भी बिला उ़ज़्रे शरई बैठ कर अदा की तो नमाज़ न होगी और इस मस्अले में मर्दों की कोई तख़्सीस नहीं बल्कि औरतों पर भी मर्दों की तरह फ़र्ज़ नमाज़ में क़ियाम फ़र्ज़ है, इल्मे दीन से दूरी की वजह से कुछ ख़वातीन इस तरह करती हैं मगर उन का येह अमल शरई एतिबार से हरगिज़ दुरुस्त नहीं, उन पर लाज़िम है कि मुकम्मल चार रकअत क़ियाम के साथ अदा करें, बिला उ़ज़्रे शरई क़ियाम तर्क न करें और जितनी नमाज़ें इस तरह बिला उ़ज़्रे शरई बैठ कर अदा कीं या किसी एक रकअत में भी क़ियाम छोड़ा, वोह तमाम नमाज़ें फ़र्ज़ छोड़ने की वजह से अदा नहीं हुईं, उन पर फ़र्ज़ है कि उन नमाज़ों को दोबारा पढ़ें और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में तौबा भी करें।

नोट : फ़र्ज़, वाजिब और फ़ज्र की सुन्नतों की तमाम रकअतों में क़ियाम फ़र्ज़ है, इस के इलावा सुननो नवाफ़िल में क़ियाम फ़र्ज़ नहीं, लिहाज़ा उन नमाज़ों को अगर कोई मर्द या औरत बिला उ़ज़्र भी बैठ कर पढ़े तो नमाज़ बिला कराहत हो जाएगी और लौटाने की भी हाजत नहीं। अलबत्ता क़ियाम पर क़ुदरत होने की सूरत में क़ियाम के साथ अदा करना अफ़ज़ल व बाइसे तक्मीले सवाब है।

तम्बीह ! सुन्नते मुअक्कदा नमाज़ की एक क़िस्म तरावीह की नमाज़ है कि येह भी सुन्नते मुअक्कदा है और इसे बिला उ़ज़्र बैठ कर पढ़ सकते हैं या नहीं ? इस में इख़्तिलाफ़ है, कुछ उलमा के नज़्दीक सुन्नते फ़ज्र की तरह इसे बिला उ़ज़्र बैठ कर नहीं पढ़ सकते मगर सहीह येही है कि तरावीह की नमाज़ बिला उ़ज़्र भी बैठ कर पढ़ सकते हैं अलबत्ता इसे बैठ कर पढ़ना मकरूहे तन्ज़ीही है।

وَاللّٰهُ اَعْلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَ رَسُوْلُهٗ اَعْلَم صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

रबीउ़ल आख़िर के चन्द अहम वाक़िआ़त

तारीख़ / माह / सिन	नाम/वाक़िआ़	मज़ीद मालूमात के लिए पढ़िए
5 रबीउ़ल आख़िर 953 हि.	**यौमे उ़र्स :** ह़ज़रते अ़ल्लामा सय्यिद इब्राहीम एरची رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه	माहनामा फ़ैज़ाने मदीना रबीउ़ल आख़िर 1439 हि.
6 रबीउ़ल आख़िर 1370 हि.	**यौमे विसाल :** ख़लीफ़ए आला ह़ज़रत, फ़क़ीहे आज़म मुह़म्मद शरीफ़ मुह़द्दिसे कोटलवी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه	माहनामा फ़ैज़ाने मदीना रबीउ़ल आख़िर 1439 हि.
11 रबीउ़ल आख़िर 561 हि.	**यौमे उ़र्स :** ग़ौसे आज़म शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه	माहनामा फ़ैज़ाने मदीना रबीउ़ल आख़िर 1438 ता 1445 हि. और **"ग़ौसे पाक के ह़ालात"**
17 रबीउ़ल आख़िर 701 हि.	**यौमे विसाल :** वलिए कामिल ह़ज़रत सय्यिद मुह़म्मद शाह दूल्हा सब्ज़वारी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه	माहनामा फ़ैज़ाने मदीना रबीउ़ल आख़िर 1439 हि.
18 रबीउ़ल आख़िर 725 हि.	**यौमे विसाल :** सुल्तानुल मशाइख़ ह़ज़रत ख़्वाजा निज़ामुद्दीन औलिया رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه	माहनामा फ़ैज़ाने मदीना रबीउ़ल आख़िर 1439 हि.
21 रबीउ़ल आख़िर 1252 हि.	**यौमे विसाल :** ह़ज़रते अ़ल्लामा मुह़म्मद अमीन इब्ने आ़बिदीन शामी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه	माहनामा फ़ैज़ाने मदीना रबीउ़ल आख़िर 1439 हि.
25 रबीउ़ल आख़िर 1046 हि.	**यौमे विसाल :** क़ुत़्बे आ़लम ह़ज़रते सय्यिद आ़लम शाह बुख़ारी सोहरवर्दी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه	माहनामा फ़ैज़ाने मदीना रबीउ़ल आख़िर 1441 हि.
29 रबीउ़ल आख़िर 627 हि.	**यौमे विसाल :** सूफ़ी बुज़ुर्ग ह़ज़रते शैख़ फ़रीदुद्दीन मुह़म्मद अ़त्तार رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه	माहनामा फ़ैज़ाने मदीना रबीउ़ल आख़िर 1441 हि.
रबीउ़ल आख़िर 4 हि.	**विसाले मुबारका :** उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते बीबी ज़ैनब बिन्ते ख़ुज़ैमा رَضِیَ اللهُ عَنْهَا	माहनामा फ़ैज़ाने मदीना रबीउ़ल आख़िर 1438, 1439 हि. और **"फ़ैज़ाने उम्महातुल मोमिनीन"**
रबीउ़ल आख़िर 6 हि.	**शोहदाए सरियए मुह़म्मद बिन मस्लमा :** रसूले करीम صَلَّی اللهُ عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने 10 सह़ाबए किराम को ज़ुल क़ुस्सा के क़बाइल की सरकोबी के लिए भेजा इस सरिय्ये में अक्सर सह़ाबा शहीद हुए।	माहनामा फ़ैज़ाने मदीना रबीउ़ल आख़िर 1442 हि.

अल्लाह पाक की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो। اٰمِيْن بِجَاهِ خَاتَمِ النَّبِيّٖن صلی اللہ علیہ والہ وسلم

"माहनामा फ़ैज़ाने मदीना" के शुमारे दावते इस्लामी की वेबसाइट से डाउनलोड कर के पढ़िये और दूसरों को शेयर भी कीजिये।

रबीउ़ल आख़िर की मुनासबत से क़ाबिले मुत़ालआ़ कुतुबो रसाइल

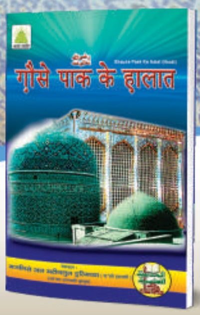

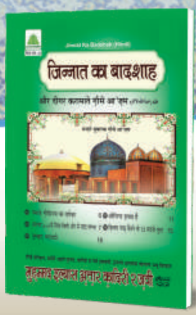

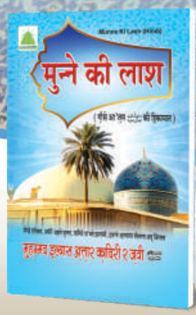

बुढ़ापे (बल्कि हर उ़म्र) में सुखी रहने के फ़ारमूले

अज़ : शैख़े तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत हज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

कहा जाता है : "यक पीरी व सद ऐब" यानी बुढ़ापा सौ (100) बीमारियों के बराबर है। वाक़ेई बूढ़े अफ़राद बेचारे बहुत सारी आज़माइशों का शिकार रहते हैं। बुढ़ापे (बल्कि ज़िन्दगी) को किसी ह़द तक पुर सुकून गुज़ारने के लिए इन गुज़ारिशात पर अ़मल करना اِنْ شَآءَ الله मुफ़ीद हो सकता है : (1) अगर जवानी ही से मेदा, चिक्नाई और मिठास वाली चीज़ों का इस्तिमाल कम कर दिया जाए तो ज़िन्दा बच जाने की सूरत में बुढ़ापे में सहूलत हो सकती है हां अगर शूगर LOW या HIGH होता हो तो मिठास के तअ़ल्लुक़ से डॉक्टर की हिदायात पर अ़मल करना होगा (2) हमेशा खाने में तेल मसाले की मिक़्दार कम रखिए (3) दूध का इस्तिमाल हर उ़म्र में मुफ़ीद है और कमो बेश 25 साल की उ़म्र तक ख़ालिस दूध का इस्तिमाल बुढ़ापे में हड्डियों वग़ैरा के अमराज़ से बचा सकता है (4) हमेशा अच्छी त़रह चबा कर खाइए और दांत का काम आंत से मत लीजिए (5) कुछ भूक बाक़ी होने की सूरत में हाथ खींच लीजिए और ख़ूब पेट भर कर खाने की आ़दत निकाल दीजिए (6) सादा ग़िज़ा खाइए, सब्ज़ियां और फल ब कसरत इस्तिमाल फ़रमाइए, गोश्त का सालन बहुत ज़ियादा मिक़्दार में मत खाइए (7) अगर घर में अक्सर दिन बड़े जानवर या बकरे का गोश्त पकता हो तो ह़त्तल इम्कान सिर्फ़ एक आध दरमियानी बोटी खाने की आ़दत बनाइए (बहुत ज़ियादा बोटियां मत खाइए) (8) जब तक ख़ूब भूक न लगे उस वक़्त तक खाना मत खाइए (9) चीनी वाले फ़्रूट जूसेज़ इस्तिमाल न फ़रमाइए (10) आइसक्रीम, ठन्डी बोतलों, तली हुई ग़िज़ाओं, पकौड़ों, कबाब समोसों, शादी बियाह की दावतों के लज़ीज़ खानों, पराठों, टॉफ़ियों, चोकलेट, सिगरेट नोशी, गुटका, ख़ुश्बूदार सुपारी, तम्बाकू वग़ैरा से बचिए اِنْ شَآءَ الله सेहत अच्छी रहेगी (11) चाय का इस्तिमाल कम कीजिए, जो पिएं उस में भी हो सके तो चीनी की जगह देसी गुड़ या शहद डालिए (12) मीठी ग़िज़ाएं देसी गुड़ या शहद में बनाइए, मगर इन का इस्तिमाल भी बहुत ज़ियादा न हो (13) रोज़ाना एक साथ कम अज़ कम आधा घन्टा पैदल चलिए और किसी फ़िज़ियो थेरापिस्ट के मश्वरे से हर रोज़ एक्सरसाइज़ भी करते रहिए (14) जिन की उ़म्र बड़ी हो गई हो वोह भी अपने हाथ से घर का कामकाज करते रहें, मसलन झाड़ू पोछा लगाना, खिड़कियों दरवाज़ों वग़ैरा का गर्दो ग़ुबार झाड़ना वग़ैरा, बाज़ार से सौदा सलफ़ भी ख़ुद ही ले आएं, اِنْ شَآءَ الله बदन के पठ्ठे (Muscles) वग़ैरा अकड़ने से बचेंगे और अल्लाह पाक ने चाहा तो सेह़त में बेहतरी रहेगी (15) अल्लाह व रसूल عَزَّوَجَلَّ व صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की नाराज़ी से ख़ुद को बचाने और बुढ़ापा सेहतमन्द गुज़ारने के लिए शुरूअ़ ही से गुनाहों की बीमारी से भी ख़ुद को बचाते रहिए, ह़ज़रते अबू त़य्यिब त़बरी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने सौ (100) साल से ज़ियादा उ़म्र पाई, लेकिन आख़िर दम तक जिस्मानी और ज़ेहनी त़ौर पर तन्दुरुस्त व तवाना रहे, बुढ़ापे में इस क़दर सेहतमन्द रहने का राज़ पूछा गया तो फ़रमाया : "मैं ने कभी जिस्म के किसी भी हिस्से से अल्लाह करीम की नाफ़रमानी नहीं की।" (سیر اعلام النبلاء، 13/439)

अल्लाह करीम अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ हमें अपनी सेह़त की ह़िफ़ाज़त करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए। اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلّم

दीने इस्लाम की ख़िदमत में आप भी दावते इस्लामी का साथ दीजिये और अपनी ज़कात, सदक़ाते वाजिबा व नाफ़िला और दीगर अ़तिय्यात (Donation) के ज़रीए़ माली तआ़वुन कीजिये !

आप के चन्दे को किसी भी जाइज़, दीनी, इस्लाह़ी (Reformatory), फ़लाही (Welfare) रूहानी ख़ैर ख़्वाही और भलाई के काम में ख़र्च किया जा सकता है